@NewsRotary /RotaryNewsIndia December 2018

रोटरी समाचार

Vol.18, Issue 2 | Annual Subscription ₹ 420

Rotary

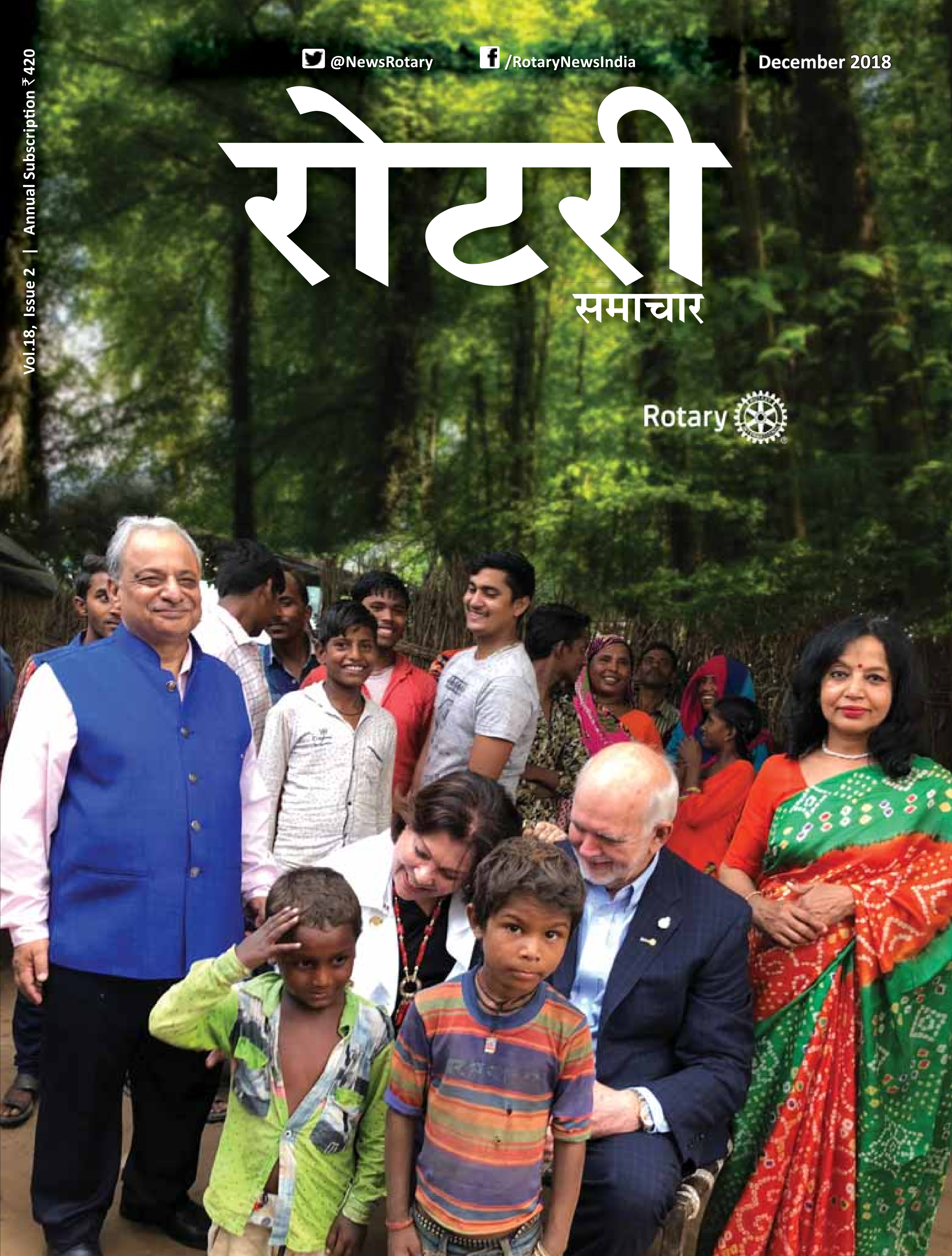

15th
JJS
JAIPUR
JEWELLERY
SHOW
Reflection of royalty & creativity...
the
December
show
JECC, JAIPUR
21-24 DECEMBER 2018
JAIPUR JEWELLERY SHOW
Gold Souk, TF-01, Third Floor, Adjoining Hotel Lalit, Jawahar Circle, Jaipur – 302017, Tel.: +91 141 2725647 / 2725648
E-info@jaipurjewelleryshow.org, W-www.jaipurjewelleryshow.org
facebook.com/thedecembershow
@JJSjaipur
jaipurjewelleryshow

विषयसूची

12 एक रो ई अध्यक्ष की चंडीगढ़ यात्रा

रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और एस्थर की चंडीगढ़ की यात्रा के कुछ पल।

20 रोटरी मेरा तनाव दूर करती है: सुशील गुप्ता

RIPN सुशील गुप्ता का पाँच रो ई मंडलो ने अभिनंदन किया।

26 कॉफी सुशील के साथ

PRID शेखर मेहता ने किये RIPN सुशील गुप्ता, PRIP कल्याण बेनर्जी और RIDE गण भरत पांड्या और कमल संघवी से कुछ सवाल।

34 मैंने कोई बहुत बड़ा काम नहीं किया है: रवि शंकर

चेन्नई इंस्टिट्यूट में मंडल 3190 के डीजी सुरेश हरी और उनकी पत्नी अनिता, रविशंकर और उनकी पत्नी पाओला से चर्चा करते हुए।

56 चेन्नई इंस्टीट्यूट में जीवनसंगिनियों की ताकत

चेन्नई इंस्टिट्यूट में, निर्वाचित गवर्नरों की पत्नियों ने रोटरी में उनके पतियों की प्रगति का समर्थन करने की बारीकियाँ सीखी।

60 पोलियो-मुक्त संसार के लिए

भारत के अन्य मंडल विश्व पोलियो दिवस मनाते हैं।

62 लेह का नरोपा उत्सव

हिमालय में लेह के पांच दिवसीय समारोह के बारे में जानिए।

70 बैचेनी के समय फड़फड़ाना

पाकिस्तान के शहरों के अभिजात वर्ग पर मोनी मोहसिन की किताबों के बारेमें संध्या राव के विचार।

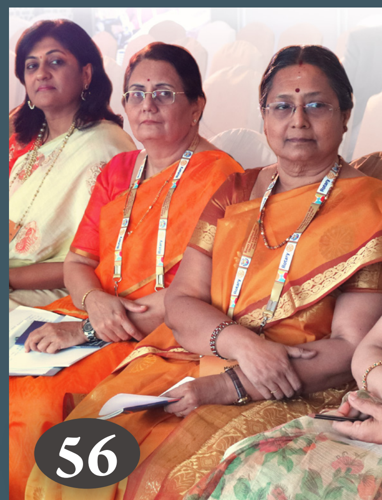

कवर पर : रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और एस्थर, प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के साथ। चित्र में मंडल 3080 के डीजी प्रवीण गोयल और बासु भी शामिल हैं।

चित्र : रशीदा भगत

आपके पत्र

रोटरी द्वारा केरल की मदद किये जाने पर गर्व

अक्टूबर के अंक में जयश्री द्वारा लिखित एक अद्भुत लेख था *केरल की मदद के लिए रोटरी की त्वरित कार्यवाही* जिसमें उन्होंने सहायक तस्वीरों के साथ बाढ़ ग्रस्त केरल की पूरी तस्वीर पेश की। संपादक का संदेश केरल में सबसे आगे रोटरी की मानवीय भावनाएँ शानदार था। टीम रोटरी न्यूज़ को बधाइयाँ।

डेनियल चित्तीलाप्पिली

रोटरी क्लब कलूर – मंडल 3201

संपादकीय और उसके संबन्धित लेख केरल की मदद के लिए *रोटरी की त्वरित कार्यवाही* ने केरल द्वारा झेली गई आपदा और रोटेरियनों द्वारा दिखाई गई सहानुभूति पर प्रकाश डाला। रोटरी के लिए यह प्रचलित है कि जब भी कोई प्राकृतिक आपदा जीवन एवं संपत्ति का सामूहिक विनाश करती है तो वह राहत कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल होती है। आपदा के आने से काफी पहले ही हम पैसा इकट्ठा क्यों नहीं कर सकते ताकि हम किसी भी संभावित परिस्थिति में त्वरित कार्यवाही कर सके? ऐसा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक न्यास बनाकर और सभी 1.2 मिलियन रोटेरियनों द्वारा दुनिया भर में आपदाओं की चुनौतियों को पूरा करने हेतु वार्षिक रूप से योगदान देकर किया जा सकता है। टीआरएफ़ की तरह हम प्राकृतिक आपदाओं को संबोधित करने हेतु धन एकत्रित करने के लिए एक अन्य प्रयास कर सकते है। मैं रो ई से इस सुझाव पर गौर करने का आग्रह करता हूँ।

अरुण कुमार दास

रोटरी क्लब बारीपदा – मंडल 3262

केरल पर लेख पढ़कर मुझे रोटेरियन होने पर बहुत गर्व महसूस हुआ। केरल में हाल ही में आई बाढ़ के बाद जरूरतमंदों एवं पीढ़ितों को दिया गया सामयिक नेतृत्व और सेवा उल्लेखनीय है। डीजी ई के ल्यूक, रोटेरियन टीना एंटोनी, विजयलक्ष्मी नायर और अन्य पीडीजीयों ने बचाव अभियान में आगे रहकर मार्गदर्शन किया। उन्होंने ना केवल *स्वयं से बढ़कर सेवा* के रो ई के सिद्धान्त का उदाहरण दिया बल्कि जरूरत के समय रोटरी की भूमिका को भी सुदृढ़ बनाया। उनके निःस्वार्थ कार्य रोटरी में अधिक सेवा-उन्मुख लोगों को लाएँगे।

डॉ NRUK करथा

रोटरी क्लब त्रिवेन्द्रम सबअर्बन – मंडल 3211

रोटरी की अच्छाई, बुराई और बदसूरती

चेन्नई इंस्टीट्यूट की थीम *सेवा का जुनून,* सबसे अधिक उपयुक्त थी, क्योंकि यह ऐसे समय में आई जब भारत की तरफ से टीआरएफ़ में डी रविशंकर और उनकी पत्नी पाओला द्वारा सबसे बड़ा योगदान किया गया था। लेख *केरल का पुनर्निर्माण* रोचक था। मुझे यह जानकार राहत मिली की रोटरी की धान परियोजना केरल में हाल ही में आए कहर से बच गई। चकाचौंध चेन्नई नाइट की तस्वीरें शानदार है। मैं RIPN सुशील गुप्ता को उनके नए कार्यभार के लिए बधाई देता हूँ। किरण ज़ेहरा द्वारा लिखा गया लेख *नए जमाने की परवरिश की कला* अभिभावकों के लिए आँखें खोल देने वाला है।

रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन का भाषण (*परिवर्तन के राजहंस बनिए: बेरी रेसिन*) और शीर्षक *रोटरी का सर्वश्रेष्ठ और सबसे खराब* में दिए गए बिन्दु वास्तव में ध्यान देने योग्य है। आशा है कि रोटरी के भविष्य के खातिर उपयुक्त सुधार किए गए है। नवंबर अंक में रंगबिरंगी तस्वीरें पाठकों को आकर्षित करती है। संपादकीय दल को उनके बढ़िया काम के लिए बधाइयाँ।

एम टी फिलिप

रोटरी क्लब त्रिवेन्द्रम सबअर्बन – मंडल 3211

मैं पिछले 15 वर्षों से *रोटरी न्यूज़* पढ़ रहा हूँ, और इसके लेखों एवं कहानियों से प्रेरित हो रहा हूँ। लेकिन यह पहली बार है जब मैं खत लिख रहा हूँ, क्योंकि मैं एक लेख *रोटरी का सर्वश्रेष्ठ और सबसे खराब* (नवंबर अंक) के लिए प्रतिक्रिया देना चाहता हूँ जिसमें रोई अध्यक्ष बैरी रेसिन ने रोटरी में उनके अनुभव को तीन हिस्सों में वर्गीकृत किया है – अच्छा, बुरा और भद्दा। 'अच्छे' में रोटरी की सेवा परियोजनाएं है जो दुनिया को बेहतर में बदलती है। 'भद्दा' एक नैतिक मुद्दे से संबन्धित था जिसे केवल तभी सुलझाया जा सकता है जब सभी व्यक्ति रोटरी के आदर्शों का पालन करें।

'बुरे' से मैं सबसे अधिक आहत हुआ – क्योंकि मुझे लगता है इसका समाधान आसानी से किया जा सकता है, केवल थोड़ी सी जागरूकता के माध्यम से। ''रोटरेक्टर कहते है कि ऐसा कोई रोटरी क्लब नहीं है जो उन्हें चाहता हो।'' रोटरेक्टर कहे जाने वाले युवा लोगों के इस अत्यंत उत्साही समूह को नियुक्त करने के संभावित लाभों पर मैं अधिक ज़ोर नहीं दे सकता। प्रत्येक परियोजना में उन्हें बारीकी से सम्मिलित करके हम ना केवल भविष्य के समर्पित

आपके पत्र

रोटेरियनों का समूह तैयार कर रहे है, बल्कि सबसे अधिक महत्वपूर्ण, हम आज के युवाओं की ऊर्जा को सामाजिक मुद्दों की ओर दिशा देकर उन्हें आकार दे रहे है। वे हमारी बैठकों में हिस्सा लेते है और बढ़िया विचार प्रस्तुत करते है। सपने देखने वाले एवं उन्हें पूरा करने वाले ये युवा लोग हम सभी को बेहतर रोटेरियन बनने के लिए प्रेरित करते है।

मेरा हर एक रोटेरियन से विनम्र निवेदन है कि वे रोटरेक्टरों को उनके क्लब की सभी गतिविधियों में शामिल करना शुरू करें। यह एक शानदार, पारस्परिक लाभ देने वाला अनुभव है।

सी सुरेन्द्रन

रोटरी क्लब मदुरई नॉर्थ - मंडल 3000

मुझे यह जानकार अफसोस हुआ कि पिछले दो वर्षों में लगभग 3,00,000 सदस्यों ने रोटरी छोड़ दी है। संस्थान के हित में मौजूदा सदस्यों को रोकने एवं नए सदस्यों की संख्या बढ़ाने के लिए रोटेरियनों को ठोस प्रस्ताव लाने चाहिए। यह उन जरूरतमन्द लोगों की सेवा करने में भी मदद करेगा जो परेशानी में है। टीसीए श्रीनिवास राघवन द्वारा लिखित LBW लेख (एक गड्ढे में स्थिर गेंद डालने वाला मूर्खतापूर्ण खेल) ने मुझे कुछ पल के लिए प्रसन्न कर दिया।

डॉ डी एच रामा

रोटरी क्लब अनंतपुर मेन - मंडल 3160

RID का प्रेरक सम्बोधन

एक बहुआयामी रोटरी न्यूज़ लाने के लिए बधाइयाँ। अक्टूबर अंक में पढ़ने एवं अच्छा महसूस करने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन जिसने मेरे दिल को सबसे अधिक छुआ वह समुदायों को सशक्त बनाने पर रोई निदेशक सी भास्कर का संदेश था। मैंने चेतना की वीडियो कथा देखी और उसमें उन चुनौतियों को देखा जिसका सामना उन्हें माण देशी महिला सहकारी बैंक, भारत के सबसे बड़े लघु-क्रेडिट बैंकों में से एक, की स्थापना करने में करना पड़ा। सभी रोटेरियनों को यह जानने के लिए इस आठ मिनट के वीडियो को देखना चाहिए कि एक दृढ़-संकल्पित महिला क्या कर सकती है। मेरी आँखों में खुशी के आँसू आ गए। चेतना गाला सिन्हा की ऐसी प्रभावी कहानी लिखने के लिए धन्यवाद आरआईडी भास्कर।

रॉबर्ट फ्रेंकलिन रीगो

रोटरी क्लब बाजपे - मंडल 3181

रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट ने आठ युवा वैज्ञानिक-छात्रों को NASA भेजकर एक अद्भुत कार्य किया है। आशा है कि ये सभी युवा भविष्य में महान अन्तरिक्ष यात्री एवं वैज्ञानिक बनेंगे। स्कूलों में उन्हें इंटरेक्टर बनाकर और कॉलेज में रोटरेक्टर बनाकर उनकी भावना को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आने वाले दिनों में RCME उन्हें एक अच्छे रोटेरियन में परिवर्तित कर सकता है।

एस मोहन

रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

मुकुट में मणि

हर माह ऐसी अद्भुत पत्रिका प्रकाशित करने के लिए यह पत्र सराहना का एक प्रतीक है। मैं इसे नियमित रूप से पढ़ रहा हूँ और मुझे आपको यह बताकर अत्यंत खुशी हो रही है कि आप एक शानदार काम कर रहे है, और इसमें लगाए गए प्रयास दिखते है।

पत्रिका के माध्यम से हम विस्मय के साथ रोटरी द्वारा दुनिया भर में किए जा रहे उन सभी अच्छे कामों को देखते है, जिससे हजारों लोग इसकी विविध परियोजनाओं से लाभान्वित हो रहे है। इस प्रकाशन को एक नई ऊँचाई तक ले जाने के लिए आपके और आपके दल द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्य की हम सराहना करते है। रोटरी न्यूज़ को मुकुट का एक मणि बनाने के लिए आपको बधाइयाँ।

क्रूणाल मेहता

रोटरी क्लब सूरत वेस्ट - मंडल 3060

रोटरी भारत-पाक संबन्धों को बेहतर बना सकती है

अब तक रोटरी उसके छह शांति केन्द्रों में 1,000 से अधिक शांति विद्वानों को प्रशिक्षित कर चुकी है। सभी संघर्षों के गंभीर मामलों को सुलझाने में सक्षम है। क्या रोटरी आगे आकर राष्ट्रों के मध्य संघर्ष का समाधान करने में मदद कर सकता है? हम भारत और पाकिस्तान के रोटेरियन जब भी रोटरी कार्यक्रमों में मिलते है तो एक दूसरे का अभिवादन करते है, हाथ मिलाते है, बधाइयाँ देते है और गले मिलते है। हमारे मध्य एक अच्छा साहचर्य, बेहतर समझ और मित्रता है। परंतु सात दशकों से जब भारत-पाक संबंध बिगड़ रहे है तो हम केवल मूक दर्शक बने हुये है।

कोई ऐसी संस्था का होना आवश्यक है जो दोनों देशों को स्वीकार्य हो ताकि वह दोनों देशों को चर्चा पर बैठा सके और शांति वार्ता दोबारा शुरू कर सके। रोटरी में वह संस्था बनने की क्षमता है। चलिये रोटरी को शांति का एक वैश्विक आंदोलन शुरू करने दे, हमारे शांति कार्यक्रम को बढ़ावा देने का एक ठोस तरीका।

रामकृष्ण के

रोटरी क्लब पुत्तुर - मंडल 3181

रोटरी न्यूज़ - अंग्रेजी या तमिल

रोटरी न्यूज़ तमिल में भी छप रही है। जैसा कि रो ई मंडल 2981, 2982, 3000, 3202, 3212 और 3231 के 2017-18 डीजीयों द्वारा अनुरोध किया गया था, इन मंडलों के सभी सदस्यों को पत्रिका तमिल में मिलेगी।

जिन्हें अंग्रेजी प्रति की आवश्यकता है वे *rotarynewsrosaonline.org* पर अपनी सदस्य आईडी और नवीनतम डाक पते के साथ अनुरोध कर सकते है।

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	S Piraiyon
RI Dist 2982	DG	Nirmal Prakash A
RI Dist 3000	DG	RVN Kannan
RI Dist 3011	DG	Vinay Bhatia
RI Dist 3012	DG	Subhash Jain
RI Dist 3020	DG	Guddati Viswanadh
RI Dist 3030	DG	Rajiv Sharma
RI Dist 3040	DG	Gustad Anklesaria
RI Dist 3053	DG	Priyesh Bhandari
RI Dist 3054	DG	Neeraj Sogani
RI Dist 3060	DG	Pinky Patel
RI Dist 3070	DG	Barjesh Singhal
RI Dist 3080	DG	Praveen Chander Goyal
RI Dist 3090	DG	Dr Vishwa Bandhu Dixit
RI Dist 3100	DG	Deepak Jain
RI Dist 3110	DG	Arun Kumar Jain
RI Dist 3120	DG	Stuti Agrawal
RI Dist 3131	DG	Dr Shailesh Palekar
RI Dist 3132	DG	Vishnu S Mondhe
RI Dist 3141	DG	Shashi Sharma
RI Dist 3142	DG	Dr Ashes Ganguly
RI Dist 3150	DG	Ramesh Vangala
RI Dist 3160	DG	Konidala Muni Girish
RI Dist 3170	DG	Ravikiran Janradan Kulkarni
RI Dist 3181	DG	Rohinath P
RI Dist 3182	DG	Abhinandan A Shetty
RI Dist 3190	DG	Suresh Hari S
RI Dist 3201	DG	A Venkatachalapathy
RI Dist 3202	DG	Dr E K Ummer
RI Dist 3211	DG	E K Luke
RI Dist 3212	DG	K Raja Gopalan
RI Dist 3231	DG	C R Chandra Bob
RI Dist 3232	DG	Babu Peram
RI Dist 3240	DG	Dr Sayantan Gupta
RI Dist 3250	DG	Kumar Prasad Sinha
RI Dist 3261	DG	Nikhilesh M Trivedi
RI Dist 3262	DG	Bhabani Prasad Chowdhury
RI Dist 3291	DG	Mukul Sinha

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPN	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee	Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RIDE	Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RIDE	Kamal Sanghvi	RI Dist 3250

Executive Committee Members (2018–19)

DG Rajiv Sharma Chair – Governors Council	RI Dist 3030
DG Pinky Patel Secretary – Governors Council	RI Dist 3060
DG Subhash Jain Secretary – Executive Committee	RI Dist 3012
DG A Venkatachalapathy Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3201
DG Shashi Sharma Member – Advisory Committee	RI Dist 3141

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India. Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by P T Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by P T Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

निंदा हटाने के फायदें

जैसा की इस महीने के स्तंभ *'आपके पत्र'* में आप देख सकते हैं, चेन्नई इंस्टिट्यूट में रो इ अध्यक्ष बैरी रैसीन द्वारा दिए गए एक जवाब की गूंज कई पाठकों से सुनाई पड़ती है, ये चेन्नई इंस्टिट्यूट में पूर्व रो इ अध्यक्ष के आर रविंद्रन द्वारा उठाए गए प्रश्न ''रोटरी में सर्वश्रेष्ठ और सबसे खराब'' पर उनकी प्रतिक्रिया थी। अपने जवाब को तीन हिस्सों में बांटते हुए - अच्छा, बुरा और भद्दा - रेसिन ने कहा कि अच्छा बताना तो बहुत आसान था। लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए दुनिया भर के रोटेरियनों द्वारा उत्कृष्ट परियोजनाएं की गईं। और बुरा था रोटरैक्टर्स का ये कहना कि कोई रोटरी क्लब उन्हें पसंद नहीं करता!

लेकिन रोटरी के ''सबसे बुरे'' हिस्से के बारे में बताते हुए रो इ अध्यक्ष ने अपनी मनोव्यथा व्यक्त की। ''रोटरी का पहलू जो सबसे ज्यादा तकलीफदेह है और मेरी रातों की नींद उड़ा देता है, उस पहलू का सम्बन्ध नैतिकता से है। वो शिकायतें जिनकी जांच पड़ताल आवश्यक है, रुपये से सम्बंधित, जिसमें रुपये दिए तो परियोजनाओं के लिए गए थे, लेकिन वो, या तो परियोजनाओं तक पहुंचे नहीं या लोगों ने गबन कर लिए। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे लोगों को यथोचित दंड मिले।''

इसका एक और तकलीफ़देह पहलू चुनावी शिकायतें थीं जिन पर कई घंटे नष्ट हो जाते हैं, सिर्फ इसलिए कि ''निर्वाचित नहीं हो सकने के कारण कोई अप्रसन्न था।'' इसी क्षेत्र में अपनी यात्रा के दौरान एक अन्य बैठक को संबोधित करते हुए, रैसिन ने याद किया कि कैसे उन्हें रोटरी ने जीत के साथ - साथ हार को स्वीकार करना सिखाया था। उन्होंने बताया कि वो भी एक महत्वपूर्ण चुनाव हार गए थे; बहुत दुःख हुआ था , लेकिन फिर उन्होंने एक लम्बी गहरी सांस ली, ये स्वीकार किया कि बेहतर व्यक्ति जीता है, और फिर उस व्यक्ति को बधाई देने निकल गए।

ध्यान देने योग्य बात ये है कि रोटरी इंटरनेशनल का सर्वोच्च नेता इस जोन में खड़ा हो कर और इन महत्वपूर्ण बिंदुओं को बता रहा था। और यह कोई पहली बार नहीं है, पिछले कुछ वर्षों से, मैंने वरिष्ठ नेताओं को ये चिंता जताते हुए पहले भी देखा है। उनके कहने के तरीके, उनका लहजा और उनकी भावभँगिमा अलग हो सकती है, लेकिन बात वही है। परियोजनाओं के निष्पादन में भ्रष्टाचार और चुनावी विवाद सबसे निकृष्टतम चीजें हैं जो हमारे जोन में रोटरी के लिए अत्यंत कष्टप्रद हैं। पिछले चार वर्षों से लगातार मैंने रो इ अध्यक्षों को - के आर रविंद्रन, जॉन जर्म, इयान राइस्ले और अब बेरी रेसिन - इसी बात के लिए चिंतित होते हुए देखा है। आरआईपीएन सुशील गुप्ता, जब वो टीआरएफ ट्रस्टी थे, (30 जून, 2018 तक), और वर्तमान में ट्रस्टी गुलाम वाहनवटी सहित रो इ निदेशक सी भास्कर भी विभिन्न मंच से इसी चिंता को उठाते रहे हैं, छाया क्लबों की शर्मनाक प्रथा और बड़ी तादाद में रोटरी में शामिल होने और उतनी ही तादाद में छोड़ने वाले सदस्यों की वजह से हमारे जोन की छवि, विशेष रूप से भारत की छवि खराब होती है। सौभाग्य से, जैसाकि इन वरिष्ठ नेताओं ने बताया है कि ऐसे शर्मनाक काम करने वाले गिने चुने ही हैं।

प्रत्येक रोटेरियन को, जो गर्व के साथ रोटरी पिन धारण करता है, उसे आत्मनिरीक्षण की ज़रुरत है कि इस क्षेत्र में ज़्यादातर रोटेरियन, अपने आस पास , लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए कितनी मेहनत करते हैं, फिर सिर्फ कुछ दुष्ट और नीच लोगों की वजह से अपनी छवि कलुषित क्यों होने देते हैं। वैसे ही जैसे अध्यक्ष रैसिन ने ये कह कर समाप्त किया था निस्संदेह कुछ जगहों पर हम रोटरी की नीति के अनुसार काम नहीं कर रहे हैं।

ऐसे समय में जहां बेंगलुरू के रोटेरियन डी रवि शंकर ने टीआरएफ को ₹100 करोड़ (14 मिलियन डॉलर से अधिक) का विलक्षण उपहार, गेट्स फाउंडेशन के बाद दूसरा सबसे बड़ा दान दे कर हमारे तिरंगे को और ऊंचा फहराया है और जहां 2020-21 में चौथा भारतीय, रोटरी इंटरनेशनल के सर्वोच्च पद पर आसीन होगा, भारत ऐसी खामियों और अवांछनीय तत्वों को बर्दाश्त नहीं कर सकता है। एक अच्छा बाग़बान अवांछित खर पतवार उखाड़ने के फायदे बखूबी जानता है ...

Rasheeda Bhagat

रशीदा भगत

अध्यक्ष
की ज़बानी

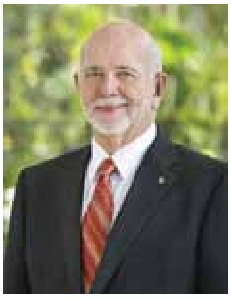

एक बेहतर रास्ता बनाए

BE THE INSPIRATION

प्रिय साथी रोटेरियनों,

यह परंपरा है कि रोटरी वर्ष की पहली *रोटेरियन* पत्रिका में नवनिर्वाचित रोई अध्यक्ष एवं उनके परिवार का एक प्रालेख होता है। मैंने हमेशा उन प्रालेखों को रुचि के साथ पढ़ा है, इस बात की संभावना पर कभी ध्यान ना देते हुए कि एक दिन, पत्रिका के एक लेखक को मेरे रोटरी क्लब की बैठक में लाने वाला मैं हो सकता हूँ! मुझे ज्यादा तवज्जो कभी पसंद नहीं थी और पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर मेरी तस्वीर के विचार ने मुझे थोड़ा बैचेन कर दिया था। लेकिन जब मैंने संपादक की चुनी हुई तस्वीर देखी, तो मैं मुस्कुरा दिया। क्योंकि उस तस्वीर का केंद्र निश्चित रूप से मैं नहीं था, और ना ही मेरी पत्नी एस्थर। वह राजहंसों का एक झुण्ड था, जिनमें से किसी को रोटरी की परवाह नहीं थी, और सभी एक ही दिशा में जाने की जद्दोजहद कर रहे थे। एक को छोड़कर, सभी।

रोटेरियनो को जो संदेश मैं देना चाहता था उसे देने के लिए इससे अधिक उपयुक्त कोई तस्वीर मुझे नहीं सूझी। वह एक राजहंस, जो दूसरी दिशा में जा रहा था, उन बहुत सी चीजों को दर्शाता है जिनकी हमें रोटरी में आवश्यकता है। वह राजहंस जानता है कि सब एक दिशा में जा रहे है। उसे यह पता है। परंतु उसे यह भी दिख रहा है कि शायद जिस रास्ते वे जा रहे है वह सबसे अच्छा रास्ता नहीं है। शायद, वहाँ दूसरा बेहतर रास्ता है, और वह अपने दोस्तों के साथ आगे बढ़ने से पूर्व उसे देखना चाहता हो। और रुककर देखने पर यदि वह नया रास्ता बेहतर लगे, तो वह अपने बाकी साथियों को बुलाकर उसे दिखाएगा। और शायद, ऐसा हो सकता है कि वे सभी एक साथ उस बेहतर रास्ते को चुनेंगे।

परिवर्तन कठिन है। और जितना अधिक समय तक हम एक ही दिशा में चलते है, उतने अधिक मित्र हमारे साथ होते है। कठिन तब होता है जब हम मुड़ते है और उसे अलग ढंग से करते है। परंतु परिवर्तन - अपनी खातिर परिवर्तन नहीं, बल्कि सतर्क, सुविचारित, लक्ष्य निर्देशित परिवर्तन - हर उस संगठन के लिए आवश्यक है जो विकास करना, प्रासंगिक रहना, और सही दिशा में आगे बढ़ना चाहता है।

इसलिए उस तस्वीर को देखिये, परंतु मेरी तरफ मत देखना। कवर की तस्वीर मेरे बारे में नहीं है। वह कवर राजहंस के बारे में है। यह उन अलग रास्तों की ओर उत्सुकता, साहस, और दृढ़ निश्चय से देखने के बारे में है जो बेहतर हो सकते है - फिर चाहे आप बहामास में एक सुहावनी सुबह में टहल रहे हो, या हमारे संगठन की दिशा तय करने में मदद कर रहे हो।

बेरी रेसिन

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक

का संदेश

तंदरुस्ती को बढ़ावा दें

प्रिय रोटेरियनों,

स्वास्थ्य प्रोत्साहन और रोग निवारण कार्यक्रम लोगों को स्वस्थ रखने पर ध्यान केंद्रित करते है। ''तंदरुस्ती'' स्वास्थ्य प्रोत्साहन एवं रोग निवारण को सम्पूर्ण शारीरिक एवं मानसिक तंदरुस्ती के स्तर तक उठाती है। तंदरुस्ती को एक व्यक्ति के रवैये और उसके द्वारा लिए गए निर्णयों से समझा जा सकता है जो सकारात्मक स्वास्थ्य व्यवहारों एवं परिणामों में सहायक होते है। WHO के अनुसार, ''स्वास्थ्य केवल बीमारियों का ना होना ही नहीं होता है, बल्कि यह संपूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक तंदरुस्ती की अवस्था होती है।'' स्वास्थ्य प्रोत्साहन लोगों द्वारा उनके ''स्वास्थ्य पर नियंत्रण को बढ़ाना देने एवं उसको बेहतर करने की प्रक्रिया होती है।'' लोगों को स्वस्थ रखने में पर्यावरण एवं सही जीवन शैली अहम भूमिका निभाते है। दुखद रूप से, दुनिया भर में होने वाली हर छह मृत्यु में से एक मृत्यु प्रदूषण के कारण होती है, और अधिकांशतः ऐसा विकासशील देशों में होता है।

दिसंबर 2017 में श्रीलंका और भारत के मध्य खेले जा रहे एक टेस्ट क्रिकेट मैच को कई बार इसलिए रोकना पड़ा क्योंकि श्रीलंकाई खिलाड़ियों को ''सांस लेने में तकलीफ'' हो रही थी जबकि कुछ खिलाड़ियों ने दिल्ली की खराब वायु गुणवत्ता के कारण मैदान पर उल्टियां भी की।

भारत की राजधानी होने के बावजूद भी दिल्ली की वायु गुणवत्ता अंतर्राष्ट्रीय मानकों से बहुत नीचे है - जो दुर्भाग्यवश भारत के बहुत से शहरों की सच्चाई हैं। वायु में मौजूद प्रदूषकों का स्तर, जिसमें जहरीली गैसे और सूक्ष्म कण शामिल है, स्वास्थ्य समस्याएँ लाने के लिए पर्याप्त है, विषेशरूप से बच्चों और बुजुर्गों जैसे अतिसंवेदनशील लोगों के लिए।

हमारे सामने मौजूद एक और चिंता जीवनशैली से संबन्धित बीमारियों के उत्पन्न होने की है। विकसित देशों में मोटापा एक अविवादित स्वास्थ्य जोखिम है। विकासशील देशों में मधुमेह, अन्य जीवनशैली बीमारी, बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं के रूप में तेजी से उभर रही है और महामारी का रूप ले रही है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रभावी संचार को एक उपयोगी एवं किफ़ायती साधन समझा जाता है और यह प्रमाणित भी है। अब समय है कि हम तंदरुस्ती को एक जीवन परिवर्तक सिद्धान्त के रूप में बढ़ावा देने की योजना बनाएं। बहुत से रोटरी क्लब समय-समय पर चिकित्सीय शिविर आयोजित करते है। इन शिविरों के अलावा, रोटरी क्लबों को संचार रणनीतियों का नियोजन एवं प्रोत्साहन भी करना चाहिए जिनमें सार्वजनिक सेवा घोषणाएँ, स्वास्थ्य प्रोत्साहक कार्यक्रम, जन संचार अभियान, और सूचना पत्र शामिल है। चलिये रोटरेक्टरों, इंटरेक्टरों और RCC के सदस्यों को उनके समुदायों में यह संदेश प्रसारित करने दें कि वे छोटी सी शारीरिक गतिविधि को उनके दैनिक जीवन का हिस्सा बना कर भी उनके स्वास्थ्य एवं जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते है। WHO के अनुसार सामाजिक निर्धारक वे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परिस्थितियां होती है जिनमें लोग जन्म लेते है, बड़े होते है और जीते है और जो स्वास्थ्य अवस्था को प्रभावित करती है। उनके चिकित्सीय शिविरों में तंदरुस्ती-संबन्धित स्वास्थ्य प्रोत्साहकों एवं रोग निवारण कार्यक्रमों को सम्मिलित करके, क्लब इन सामाजिक निर्धारकों को भी संबोधित कर सकते है।

WHO एवं विश्व आर्थिक मंच द्वारा संयुक्त रूप से तैयार की गई एक रिपोर्ट के अनुसार भविष्य में भारत अस्वास्थ्यकर जीवनशैली एवं दोषपूर्ण आहार की वजह से कई हज़ार बिलियन रुपये की संचित हानी झेलेगा, यदि अभी सुरक्षात्मक कदम नहीं उठाए गए तो।

यह सही समय है कि शारीरिक एवं मानसिक दोनों रूप से स्वस्थ जीवन जीकर जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु तंदरुस्ती कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाए। यही हमारे आसपास मौजूद समुदाय की वास्तविक सेवा एवं सच्ची प्रेरणा होगी। *प्रेरणा बनिए*।

सी भास्कर

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

District Wise TRF Contributions as on October 2018

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	17,777	2,576	0	8,000	28,353	139	3
2982	20,169	59	0	243	20,471	270	9
3000	9,467	1,000	5,265	4,265	19,997	58	1
3011	34,657	278	26,482	15,072	76,489	59	2
3012	106,925	50	193,250	8,800	309,025	68	2
3020	8,029	37,107	0	5,000	50,136	32	1
3030	7,730	0	0	0	7,730	3	0
3040	2,009	0	9,930	0	11,939	4	0
3053	36,457	0	0	0	36,457	2	0
3054	(22,796)	0	30,714	0	7,918	19	0
3060	(3,851)	53	83,132	18,000	97,333	436	11
3070	56,316	300	0	0	56,616	162	6
3080	18,418	3,856	15,527	0	37,801	30	1
3090	17,779	0	0	0	17,779	50	2
3100	14,348	475	0	0	14,823	37	2
3110	21,508	1,087	16,887	0	39,482	38	1
3120	19,183	0	148,015	0	167,198	31	1
3131	131,885	1,021	145,680	33,203	311,789	393	8
3132	5,732	0	3,500	20,000	29,232	49	1
3141	417,937	7,892	553,387	1,000	980,215	551	11
3142	184,122	50	(438)	0	183,734	378	12
3150	28,928	0	60,437	235,467	324,831	333	10
3160	3,842	580	0	0	4,422	13	1
3170	30,812	2,169	4,679	0	37,659	143	3
3181	31,206	691	0	0	31,897	120	4
3182	31,233	0	6,516	0	37,750	201	6
3190	43,751	3,512	9,987	1,449,359	1,506,609	269	6
3201	28,739	1,472	131,539	0	161,750	83	2
3202	7,364	565	0	0	7,928	9	0
3211	14,725	0	0	1,515	16,240	176	4
3212	52,038	6,377	0	12,000	70,414	99	3
3231	4,565	991	0	0	5,556	117	4
3232	79,722	178	34,280	1,000	115,181	80	2
3240	33,231	208	525	0	33,964	65	2
3250	368	0	6,444	0	6,812	6	0
3261	8,983	1,000	100	2,000	12,083	7	0
3262	7,228	1,000	900	3,000	12,128	24	1
3291	46,104	0	29,919	800	76,823	98	3
India Total	**1,556,641**	**74,546**	**1,516,657**	**1,818,724**	**4,966,568**	**4,652**	**3**
3220 **Sri Lanka**	47,528	1,000	1,650	6,000	56,178	204	11
3271 **Pakistan**	22,758	13,330	1,050	0	37,137	8	1
3272 **Pakistan**	3,895	2,069	0	0	5,964	17	1
3281 **Bangladesh**	74,467	2,900	22,834	12,000	112,201	97	2
3282 **Bangladesh**	14,443	610	0	1,000	16,053	38	1
3292 **Nepal**	37,224	5,162	73,509	0	115,894	117	3
South Asia Total	**1,756,955**	**99,617**	**1,615,700**	**1,837,724**	**5,309,996**	**5,133**	**3**
World Total	**30,553,881**	**7,573,442**	**5,858,094**	**6,746,996**	**50,732,413**		

Source: RI South Asia Office

ART ACROSS GENERATIONS

The german kitchen.
Since 1898.

CERTIFIED
TROPICALISED
KITCHENS

Head Office and Showroom:
A- 248, Mahipalpur Extension, NH-8,
Delhi-Gurgaon Road, New Delhi-110037
[T] +91-11-46102000 [E] info@hacker-kitchens.com

Häcker
kitchen.germanMade.

www.haecker-india.com
www.haecker-kuechen.com

AHMEDABAD	BANGALURU	CHENNAI	COIMBATORE	DELHI
9879538977	9740999350	9442081111	9500210555	9313134488

HYDERABAD	INDORE	JAIPUR	KOCHI	LUDHIANA	MUMBAI	MANGALURU	THRISSUR
9700058285	9425803599	9414058718	9895058285	9815048222	9322987229	7899119955	7025991000

रो ई अध्यक्ष की चंडीगढ़ यात्रा

रशीदा भगत

चंडीगढ़ में एक परियोजना जिसमें रोई अध्यक्ष बेरी रेसिन ने अधिक रुचि दिखाई और लाभार्थियों, खासकर बच्चों, से बातचीत करने में कुछ समय व्यतीत किया, वह थी चंडीगढ़ के साकेत्री की एक बेहद गरीब और छोटी सी बस्ती में लागू की गई एक प्रायोगिक परियोजना।

यहाँ चंडीगढ़ का रोटरी क्लब, मंडल 3080, खराब स्वास्थ्य और स्वच्छता सुविधाओं वाले एक उजाड़ इलाके में रहने वाले करीब 500 लोगों की जिंदगियों को नाटकीय ढंग से बदलने हेतु एक प्रायोगिक क्रियाकलाप में लिप्त है। एक वर्ष पहले तक, इन बच्चों के पास किसी भी लिपि में अक्षरों को समझ पाने का कोई अवसर नहीं था, लेकिन जब अध्यक्ष रेसिन और एस्थर इन बच्चों, जिन्हें अब रोटेरियनों द्वारा की गई विशेष व्यवस्था के माध्यम से शिक्षित किया जा रहा है, की प्रस्तुति देखने के लिए आए, तब तक दो लड़कियाँ अंग्रेजी में अपना पहला भाषण देने में सक्षम हो चुकी थी।

यह बहुत गर्व की बात है कि रोई अध्यक्ष ने इन भाषणों का वीडियो बनाया और भारत में उनके द्वारा भाग लिए गए अन्य कार्यक्रमों में उन्होंने खासतौर पर इस अनुभव के बारे में बात की। बाद में उन्होंने कहा: हमें इस परियोजना के माध्यम से यह देखने का अवसर प्राप्त हुआ कि कैसे रोटरी लगभग 150 परिवारों की स्वास्थ्य और स्वच्छता, साक्षरता, इत्यादि से मदद कर रही है। जब हम स्कूल गए तो हमने बहुत ही अनुशासित बच्चों के एक समूह को देखा और बच्चों से मिलकर और उन्हें पढ़ते हुए देखकर बहुत अच्छा लगा। जाहिर है, वे शिक्षा ग्रहण करना चाहते है और वे बहुत ही मेहनती है। मुझे दो बच्चों को अंग्रेजी में उनके द्वारा दिया गया उनका पहला भाषण सुनने का सौभाग्य मिला, और वह दिल को छू लेने वाला था।

जिन दो लड़कियों ने रोई अध्यक्ष और एस्थर एवं अन्य रोटेरियनों का अंग्रेजी में स्वागत किया वे निश्चित रूप से घबराई हुई थी, थोड़ी हड़बड़ाई हुई थी और बहुत अधिक हँसने के साथ ही उन्होंने थोड़ी गलतियाँ भी की थी। लेकिन जो आत्मविश्वास

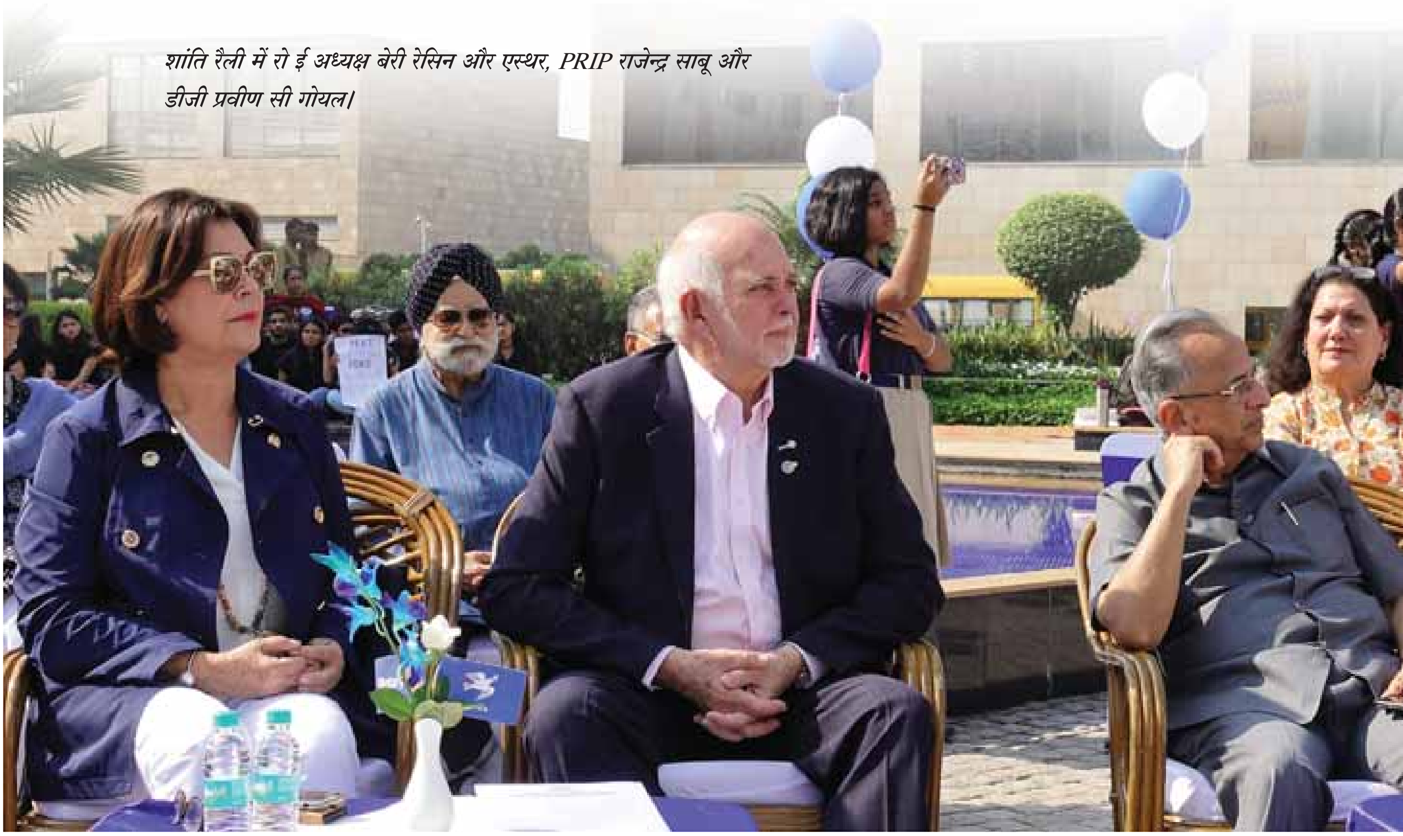

शांति रैली में रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और एस्थर, PRIP राजेन्द्र साबू और डीजी प्रवीण सी गोयल।

उन्होंने दिखाया उससे यह स्पष्ट हो गया कि उन्होंने अक्षरों की जादुई दुनिया में अपनी यात्रा शुरू कर दी है और वे परत दर परत इसकी संभावनाओं के साथ आगे बढ़ने को लेकर उत्साहित थे।

एक समग्र सामुदायिक विकास परियोजना

रोटरी क्लब चंडीगढ़ ने उषा साबू की पहल पर इस बस्ती के पूर्णतः उपेक्षित और भुला दिए गए 500 लोगों - जिनमें से अधिकतर प्रवासी श्रमिक और उनके परिवार है - की जिंदगियों में एक परिवर्तन लाने के लिए इस परियोजना की शुरुआत की। अपने पति झठखझ राजेन्द्र साबू के साथ कड़ाके की ठण्ड की एक शाम के दौरान सड़कों और झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को कम्बल वितरित करते समय, वे संयोगवश साकेत्री इलाके की इस बस्ती में आए थे। वह विशेषरूप से इस बस्ती के निंदनीय जीवन को देखकर व्याकुल हुई और उन्होंने इस झुग्गी के बच्चों के चेहरों को एकटक देखते हुए उनके भविष्य पर गहराई से विचार किया जिनकी स्वास्थ्य सेवा, बुनियादी स्वच्छता और साक्षरता तक बहुत ही कम या बिल्कुल भी पहुँच नहीं थी।

इंटर सिटी बैठक में डीजी प्रवीण गोयल और बासु दीप प्रकाशित करते हुए। चित्र में रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और एस्थर, PRIP राजेंद्र साबू भी शामिल हैं।

क्लब के सदस्यों ने निश्चय किया कि उन्हें यहाँ के लोगों के जीवन को परिवर्तित करने हेतु विभिन्न क्षेत्रों से पेशेवर सेवाओं का एक सुनियोजित गुलदस्ता प्रदान करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण के साथ एक दीर्घकालिक परियोजना शुरू करना चाहिए।

पीडीजी मधुकर मल्होत्रा ने समझाया कि क्लब ने परियोजना का निरीक्षण करने के लिए (सेल्फ एम्पलॉयड वुमन्स एसोसिएशन) से हाथ मिलाया और भारतीय विद्या भवन स्कूल, सेक्टर 27, चंडीगढ़, ''हमें स्कूल के समय के बाद शिक्षा प्रदान करने हेतु शिक्षक उपलब्ध करवाने के लिए एक साझेदार के रूप में आगे आया। SEWA ने कुपोषण अध्ययन किया और पाया कि बच्चे गंभीर रूप से कुपोषित थे।'' इसके स्वयंसेवकों ने इस उपेक्षित बस्ती और यहाँ पर रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य, नागरिक सुविधाओं, सशक्तिकरण, शिक्षा, गरीबी उन्मूलन पर और उनमें व्यावहारिक परिवर्तन लाने के लिए समग्र रूप से कार्य करने का वादा किया है। SEWA के परियोजना समन्वयक प्रतिदिन इस जगह का दौरा करते है।

एक पांच-वर्षीय परियोजना, जिसकी समीक्षा और नवीनीकरण इस अवधि के अंत में किया जाएगा, ''में हमारे क्लब के सदस्यों की बड़ी भागीदारी है और

यह हमें रोटेरियनों के रूप में गर्वित महसूस करवाता है और साथ ही यह अध्यक्ष बेरी के नारे *प्रेरणा बनिए* के समकालन में भी है,'' मल्होत्रा ने आगे कहा।

इस महत्वाकांक्षी परियोजना, जिसकी लागत लगभग 47,000 डॉलर प्रति वर्ष है, का उद्देश्य रोग रोकथाम, व्यक्तिगत स्वच्छता, अपशिष्ट निपटान, स्कूल छोड़ने वालों के लिए विशेष कक्षाएं, कौशल आधारित तकनीकी प्रशिक्षण, कैरियर परामर्श, वज़न और ऊँचाई की जाँच, संतुलित आहार, सरकारी योजनाओं पर सूचना एवं जागरूकता अभियान, स्थानीय नेतृत्व विकास, सौर पैनलों के उपयोग पर प्रोत्साहन, इत्यादि है।

अध्यक्ष रेसिन और एस्थर ने एक आवधिक स्वास्थ्य शिविर का दौरा किया जहाँ डॉक्टरों और पराचिकित्सकों ने मरीज़ों की जाँच की और उन्हें दवाएं देकर आगे निर्दिष्ट किया। स्वास्थ्य क्षेत्र से संबंधित होने के कारण, रो ई अध्यक्ष ने काफी दिलचस्पी दिखाई और उस स्थल पर स्वैच्छिक सेवा देने वाले स्वास्थ्य पेशेवरों से बातचीत भी की।

जब हम स्कूल गए तो हमने बहुत ही अनुशासित बच्चों के एक समूह को देखा। मुझे दो बच्चों को अंग्रेजी में उनके द्वारा दिया गया उनका पहला भाषण सुनने का सौभाग्य मिला, और वह दिल को छू लेने वाला था।

रो ई अध्यक्ष **बेरी रेसिन**

रोटरी शांति स्मारक

अध्यक्ष रेसिन ने रोटरी शांति स्मारक का भी दौरा किया जिसे रोटेरियनों द्वारा स्थापित किया गया था क्योंकि वर्ष 2003 में चंडीगढ़ को भारत का दूसरा रोटरी शांति शहर घोषित किया गया था; पहला शहर चेन्नई था। डीजी प्रवीण गोयल के मुताबिक, रोटरी मंडल शांति समुदायों की अवधारणा का विचार वागा-वागा, न्यू साउथ वेल्स, ऑस्ट्रेलिया में रोटेरियन टोनी क्विन्लिवन को आया था, और वह शहर 1993 में पहला शांति समुदाय बना। तब से, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में शांति समुदाय घोषित किये जा रहे है।

पीडीजी मल्होत्रा ने आगे कहा कि जब विजय वाधवन रोटरी क्लब चंडीगढ़ के अध्यक्ष थे, तो PRIP राजेन्द्र साबू के मार्गदर्शन में, क्लब ने शहर के सबसे प्रसिद्ध और हरे-भरे पर्यटक स्थल, सुखना झील, पर एक रोटरी शांति स्मारक स्थापित करने की योजना बनाई। इस स्मारक का डिज़ाइन वास्तुकार जोड़े रोटेरियन संदीप लूथरा और उनकी पत्नी

सुचिता द्वारा तैयार किया गया था। इस स्मारक के माध्यम से समुदाय को भेजा गया सन्देश बिना किसी भेदभाव और पक्षपात के सभी को सम्मान और इज्जत प्रदान करना; हिंसा का बहिष्करण करना, संघर्ष का समाधान करना, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मतभेदों को सुलझाना एवं सांस्कृतिक सद्भाव और विविधता को अपनाना है।

साबू द्वारा आयोजित एक विशेष रात्रि भोज

चंडीगढ़ में हयात रीजेंसी में साबू परिवार द्वारा रोटरी के पहले जोड़े के दौरे को चिन्हांकित करने के लिए एक भव्य रात्रि भोज आयोजित किया गया, जिसमें PRID वाय पी दास और मंजू के अलावा, मंडल नेतृत्वकर्ताओं और उनकी पत्नियों, शहर के अनेक वरिष्ठ दफ्तरशाहों और पेशेवरों ने भी शिरकत की। कुछ गैर-रोटेरियन अतिथियों में प्रशासक के सलाहकार परिमल राय, जो चंडीगढ़ प्रशासन में राज्यपाल के बाद सबसे वरिष्ठ व्यक्ति है; गृह सचिव अरुण कुमार गुप्ता, वित्त सचिव अजॉय कुमार सिन्हा, पंजाब के मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव सुरेश कुमार, पंजाब के मुख्यमंत्री के मुख्य सचिव तेजवीर सिंह, ITBP से आईजी अरविन्द कुमार, चंडीगढ़ पुलिस के डीजी संजय बैनीवाल, हरियाणा सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव विजय वर्धन, प्रमुख न्यायाधीश, उद्योगपति, सर्जन, और समाचार पत्रों के संपादक शामिल थे।

एक WinS परियोजना और ब्लड बैंक

रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन द्वारा सरकारी मॉडल स्कूल, मनीमाजरा, में की गई एक व्यापक WinS परियोजना, जिसका अध्यक्ष रेसिन ने दौरा किया था और निर्मित शौचालयों की गुणवत्ता का व्यक्तिगत निरीक्षण करने के लिए कुछ समय भी बिताया था, का एक रोचक इतिहास है। पीडीजी शाजू जॉन ने समझाया कि दो वर्ष पूर्व क्लब के एक सम्मेलन में रोटरी क्लब अलास्का के रोटेरियन जॉन देयशर ने भाग लिया था। वह नियमित रूप से भारत का दौरा किया करते थे और भारत के NID कार्यक्रमों में भाग लेने में दिलचस्पी रखते थे। कन्नन देवान, हमारे एक पीडीजी के पति, क्लब के अध्यक्ष थे, और देयशर ने कहा कि उनका क्लब हमारे क्लब के साथ एक संयुक्त परियोजना में भाग लेना चाहता है। उनकी एकमात्र शर्त बस यह थी कि वह परियोजना स्कूलों में पढ़ने वाली लड़कियों से संबंधित होना चाहिए और वह केन्या में उपयोग की जाने वाली एक तकनीक के माध्यम से कम लागत वाले सेनेटरी नैपकिन बनाना और वितरित करना चाहते थे,'' पीटर याद करते है।

वह परियोजना तो नहीं हो सकी, लेकिन कन्नन ने स्कूलों में लड़कियों के लिए पृथक शौचालय बनवाने का विचार प्रस्तुत किया; देयशर आगे आए और लड़कियों के 10 स्कूलों में 42,000 डॉलर के अनुदान के माध्यम से शौचालयों के निर्माण की एक संयुक्त परियोजना शुरू की गई। शौचालयों के साथ-साथ, हाथों की धुलाई के स्टेशनों का निर्माण भी किया गया और बच्चों के साथ संगीत और गीत से भरे हाथों की धुलाई सत्र में रेसिन और एस्थर ने भाग लिया।

इस पहले जोड़े ने चंडीगढ़ में रोटेरियनों द्वारा चलाए जा रहे ब्लड बैंक का भी दौरा किया, जो इस शहर की एक प्रतिष्ठित परियोजना है। डीजी गोयल ने समझाया कि यह ब्लड बैंक - रोटरी ब्लड बैंक सोसाइटी रिसोर्स सेंटर - ब्लड बैंक सोसाइटी के सहयोग से, एक 3क अनुदान के माध्यम से तब शुरू हुई जब वह 2000-01 में रोटरी क्लब चंडीगढ़ के अध्यक्ष थे। संपूर्ण परियोजना की लागत करीब ₹3.5 करोड़ है।

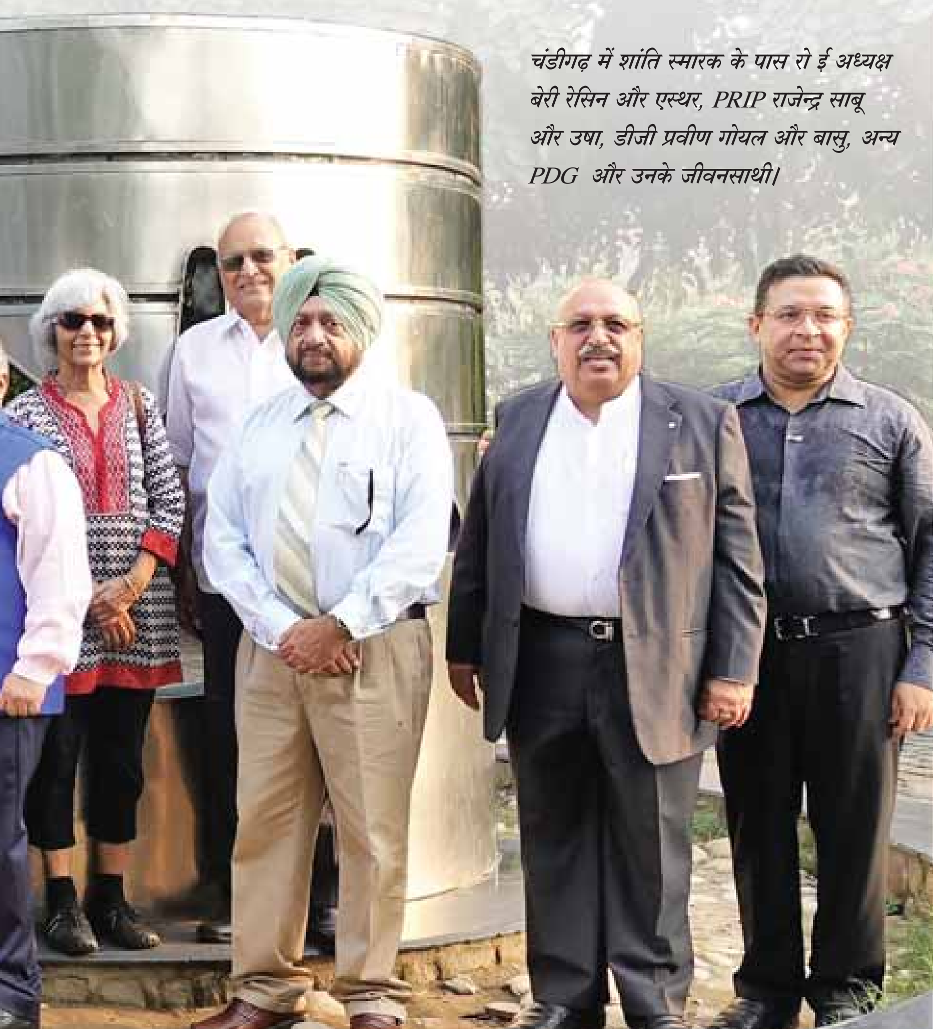

चंडीगढ़ में शांति स्मारक के पास रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और एस्थर, PRIP राजेन्द्र साबू और उषा, डीजी प्रवीण गोयल और बासु, अन्य PDG और उनके जीवनसाथी।

इंटरसिटी बैठक

एक इंटरसिटी क्लब बैठक में अध्यक्ष रेसिन ने कुछ हल्की और भावनात्मक बाते कही जब उन्होंने पीछे मुड़कर 1991 की जनवरी को याद किया जब मेरे सिर पर बाल हुआ करते थे, मेरी पत्नी एक किशोरी की तरह दिखती थी... वह अभी भी दिखती है... और हमने कैलिफ़ोर्निया में अंतर्राष्ट्रीय सभा में भाग लिया था। हमारी शादी को तब दो माह भी नहीं हुये थे तो यह हनीमून के जैसा ही था, और हमारे लिए वह एक शानदार मुलाक़ात थी जहाँ हम रोई अध्यक्ष राजा (साबू) और उषा से मिले थे। मैंने उस समय यह जाना कि एक महान अध्यक्ष बनने के लिए क्या करना पड़ता है। इस शानदार जोड़े ने जो

कुछ भी किया है "अगर मैं उसके जैसा थोड़ा भी कुछ कर पाऊं तो मुझे लगेगा हम सफल हुए। मेरे गुरु, मेरे नेतृत्वकर्ता बनने के लिए राजा मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।"

डीजी गोयल द्वारा पूर्व में चलाए गए एक वीडियो जिसमें परियोजनाओं की एक प्रभावशाली श्रृंखला - PRIP राजा साबू का अफ्रीका का चिकित्सा मिशन; हैप्पी स्कूल परियोजना करने के लिए राज्य के सभी रोटरी क्लबों का हिमाचल प्रदेश सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करना; सुविधाओं से वंचितों को ₹10 में स्वस्थ और पौष्टिक भोजन प्रदान करना; एक नेत्रदान परियोजना; कड़ी धूप में बैठने वाले वृद्ध चर्मकारों को रोटरी के लोगो वाली छतरी प्रदान करना; रोटरी क्लब देहरादून द्वारा 12 इंटरेक्ट क्लबों की स्थापना करना; रोटरी क्लब अम्बाला इंडस्ट्रियल सिटी द्वारा एक ऐसे रोटारेकट क्लब का निर्माण करना जिसके सभी सदस्य दृष्टिबाधित है, और भी अनेक परियोजनाएं - सूचीबद्ध थी, का जिक्र करते हुए रेसिन ने अत्यंत आश्चर्य व्यक्त किया। "वीडियो को देखकर, मैंने आपके डीजी से पूछा कि क्या वे ये सभी परियोजनाएं 1 जुलाई से पहले कर रहे थे, और उन्होंने कहा नहीं ये सभी परियोजनाएं 1 जुलाई के बाद की गई है। आप लोग एक अद्भुत कार्य कर रहे है और आपको आपके द्वारा की जा रही स्थानीय परियोजनाओं पर गर्व महसूस करना चाहिए।"

1,000 डॉलर के निवेश के साथ हम एक 75,000 डॉलर की जीप लेने में सक्षम हो पाए। कौनसा निवेश बैंकर इस तरह का प्रतिलाभ दे सकता है? हमारा TRF कर सकता है... 1,000 डॉलर को 75,000 डॉलर में बदल सकता है!

रो ई अध्यक्ष **बेरी रेसिन**

लेकिन एक संगठन के रूप में रोटरी को बड़ी परियोजनाओं से अपनी नज़रें नहीं हटाना चाहिए, जिसमें से एक थी दुनिया से पोलियो उन्मूलन करना। "सालाना 350,000 लोगों से, इस वर्ष हमारे पास केवल ऐसे 18 बच्चे है जो पोलियो वायरस से ग्रसित है लेकिन अभी भी 18 बच्चे बाकि है और हमें दुनियाभर के बच्चों से किए गए पोलियो मिटाने के अपने वादे को नहीं भूलना है।"

एक परिवर्तनकारी परियोजना

रोटेरियनों को उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों और जिन जिंदगियों को उन्होंने छुआ एवं परिवर्तित किया है उस पर उन्हें गर्व महसूस करवाने के लिए, अध्यक्ष रेसिन ने एक कहानी सुनाई कि

मनीमाजरा के सरकारी स्कूल में रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और एस्थर, डीजी गोयल और कुछ रोटेरियनों के साथ।

साकेतरी कॉलोनी में एक चिकित्सा शिविर में रो ई अध्यक्ष रेसिन और एस्थर, PRIP साबू और डीजी गोयल।

साकेतरी कॉलोनी में बच्चें।

कैसे हैती में आए भूकंप के बाद हमने उस परियोजना का समर्थन करने वाले 60 देशों के साथ, 6.5 मिलियन डॉलर की 105 परियोजनाएं की थी। रोटरी ऐसा कर सकती है क्योंकि रोटरी एक परियोजना या एक समुदाय की सहायता हेतु एक साथ मिलकर कार्य करती है।''

उस समय, एक मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य परियोजना में, दाइयों के एक समूह ने रोटेरियनों से कहा कि ग्रामीण इलाकों में परिवहन की कमी के चलते वे कई माताओं की उस तरह से मदद नहीं कर पा रही है जैसा वे करना चाहती है। ''तो हमने कहा हम आपकी मदद करेंगे। सबसे पहले, हम स्थानीय रोटरी क्लब में गए ताकि वह हमें 1,000 डॉलर दे सके। हैती के क्लबों के पास अधिक पैसा नहीं होता, लेकिन वे जानते थे कि यह परियोजना महत्वपूर्ण है इसलिए उन्होंने हमें 1,000 डॉलर दिए। इसके बाद उनके मंडल के क्लबों ने राशी का मिलान किया, और फिर अन्य मंडलों और देशों - 54 विविध मंडल - सामने आए और 75,000 डॉलर का एक वैश्विक अनुदान एकत्रित हुआ। इस तरह से हमारा संस्थान कार्य करता है; 1,000 डॉलर के निवेश के साथ हम एक 75,000 डॉलर की जीप लेने में सक्षम हो पाए। कौनसा निवेश बैंकर इस तरह का प्रतिलाभ दे सकता है? हमारा TRF कर सकता है... 1,000 डॉलर को 75,000 डॉलर में बदल सकता है!''

जीप को खरीदा गया, और एक गुलाबी रोटरी चक्र पेंट करके दाइयों को दिया गया। कुछ सालों बाद, जब एक दल हैती में प्रत्येक परियोजना का निरीक्षण करने हेतु गया, ''हमें दाइयों द्वारा रोक लिया गया और उन्होंने हम से कहा: 'आपके द्वारा दी गई जीप के कारण, हमें विश्वास है कि हमने मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को 50 प्रतिशत तक कम कर दिया है।' जरा इसके बारे में सोचिये!''

रेसिन ने भारतीय रोटेरियनों को उनकी अनेक सामुदायिक कल्याण परियोजनाओं के लिए बधाई दी; ''आपने सदस्यता में तीव्र वृद्धि, संस्थान को देने में तीव्र वृद्धि दिखाई है और मुझे विश्वास है कि संस्थान को देने में आप नम्बर एक

रोटरी ब्लड बैंक में अध्यक्ष रेसिन और PRIP साबू।

स्थान पर आ सकते है। आपके पास एक सशक्त रोटारेकट आंदोलन भी है।''

लेकिन, उन्होंने आगे कहा, ''हमें अभी भी खामियां है, इसलिए हमें खुद को बारीकी से देखना होगा और खुद से यह पूछना होगा कि हम कैसे बदल सकते है? हम कैसे ऐसा रोटरी क्लब बन सकते है जो उतना ही प्रतिनिधिक हो जितना हमें होना चाहिए, युवाओं के लिए, हाल ही में सेवानिवृत्त हुए लोगों के लिए और हमारे समाज की सभी जातियों एवं सभी वर्गों के लिए अधिक प्रासंगिक हो? हमारे क्लबों को पूछना होगा: क्या हम आज की दुनिया और सभी वर्गों के लिए प्रासंगिक है?''

> यह हमारे लिए बहुत ही सौभाग्य की बात है कि बेरी और एस्थर हमारे मंडल में है, जिन्हें मैं एक शानदार जोड़ा कहता हूँ, क्योंकि वे क्रियाशील रोटेरियन है। ये वे लोग है जिन्होंने अपनी कमर कस ली है और हैती और अन्य जगहों पर गए है, आंधियों और तूफानों का सामना किया है, और वहाँ पर केवल पुनर्वास के लिए ही नहीं बल्कि राहत कार्यों के लिए भी कार्य किया है।
>
> PRIP **राजेन्द्र साबू**

एक उत्कृष्ट जोड़ा

अपने संबोधन में, PRIP राजेन्द्र साबू ने कहा, ''यह हमारे लिए बहुत ही सौभाग्य की बात है कि बेरी और एस्थर हमारे मंडल में है, जिन्हें मैं एक शानदार जोड़ा कहता हूँ, क्योंकि वे क्रियाशील रोटेरियन है। ये वे लोग है जिन्होंने अपनी कमर कस ली है और हैती और अन्य जगहों पर गए है, आंधियों और तूफानों का सामना किया है, और वहाँ पर केवल पुनर्वास के लिए ही नहीं बल्कि राहत कार्यों के लिए भी कार्य किया है।

रेसिन की थीम की प्रतिकृति पर बने एक शानदार चित्रपट को पहले जोड़े को उपहारस्वरूप दिया गया। डीजी गोयल ने नवीनतम अधिकृत अखिल महिलाओं वाले क्लब रोटरी क्लब सहारनपुर वेव्स के सदस्यों का परिचय दिया।

रोटरी हाईवे

अध्यक्ष बेरी ने चंडीगढ़ में एक रोटारेकट सम्मेलन में भाग लिया और रोटेरियनों एवं रोटारेक्टरों दोनों से यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि रोटारेक्टरों का रोटेरियनों में 100 प्रतिशत रूपांतरण हो। यदि ऐसा सब जगह होता है, जैसा कि उनके गृह क्लब में हुआ है, तो ''हमें घटती सदस्यता को लेकर चिंता नहीं करनी पड़ेगी और हमारे पास रोटारेकट क्लब होंगे जो हमारे संस्थान को पोषित करना जारी रखेंगे। मैं जब भी रोटरेक्टरों और इंटरेक्टरों से मिलता हूँ तो मैं उनसे कहता हूँ कि वे रोटरी के हाईवे पर है और अपना कोर्स पूरा करने के बाद वे बाहर जा सकते है परंतु वे एक रोटारेकट क्लब से जुड़ने के लिए पुनः यूनिवर्सिटी में आ सकते है और फिर यूनिवर्सिटी के बाद एक समुदाय-आधारित रोटरी क्लब से जुड़ने के लिए प्रस्थान कर सकते है। उन्हें उस हाईवे पर वापस आते रहना होगा ताकि वे उनकी पूरी ज़िंदगी रोटरी यात्रा को जारी रख सकें।''

चित्र: रशीदा भगत

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष का संदेश

एक निरंतर प्रतिबद्धता

हम में से अधिकांश लोगों के लिए, दिसंबर का महीना समाप्त होने के कगार पर खड़े वर्ष में किए गए कार्यों पर विचार मंथन करने का समय है। हम उन बातों के बारे में सोचते हैं जिसे पूरा करने का संकल्प हमने लिया था और उसकी तुलना वास्तव में किए गए कार्यों के साथ करते है। अनेक बार हम इस बात से आश्चर्यचकित रह जाते हैं जब हमें पता चलता है कि हमने उम्मीद से भी कही अधिक प्राप्त किया है। हम नव वर्ष के बारे में भी सोचना शुरू करते हैं और, सर्वश्रेष्ठ मनसूबे के साथ, स्वयं को और अधिक उपलब्धियां प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध करते हैं।

यह एक ऐसा समय है जब हमारा विचार उन बातों की ओर आकर्षित होता हैं जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं - और परिवार से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं होता है। हम उन लोगों के प्रति आभारी हैं जिन्हें हम प्यार करते हैं और जो हमें प्यार करते हैं। रोटेरियन के लिए, इसमें संपूर्ण संसार से बड़ी संख्या में लोग शामिल हैं, क्योंकि परिवार की हमारी अवधारणा में न केवल हमारे रक्त-संबंध वाले रिश्तेदार शामिल हैं बल्कि रोटरी को साझा करते हुए वर्षों के दौरान बनाए गए अनेक मित्र भी शामिल है। हम सभी एक तालाब में फेंके जाने वाले कंकड़ के छोटे टुकड़ों के समान है, जो तालाब में छोटी लहरों का निर्माण करता हैं। जब हमारे लहरें हमारे परिवार और मित्रों के लहरों में प्रवेश करती हैं, तो हम वास्तव में अपने संसार पर प्रभाव का सृजन करते हैं।

हम उन संगठनों के बारे में भी सोचते हैं जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं और जो हमारी और अन्य लोगों की उदारता के कारण अपना अस्तित्व बनाएं रखने में सक्षम हैं। हम स्वेच्छा से इन संगठनों के साथ सहयोग करते हैं और उनके कार्य को आगे बढ़ाने के लिए उदारता के साथ अपना समय, प्रतिभा और आर्थिक सहयोग देते हैं ताकि इस संसार को सभी लोगों के लिए एक बेहतर दुनिया में परिवर्तित किया जा सके। और इस कार्य के माध्यम से, हमारा परिवार और भी विशाल होते जाता है।

रोटरी फाउंडेशन को निरंतर सहयोग देने की हमारी प्रतिबद्धता और समर्थन के कारण प्रति वर्ष हमारा परिवार और हमारा प्रभाव बढ़ता ही जाता है। एक साथ मिलकर कार्य करना सहक्रियता का भाव उत्पन्न करता है जो एक व्यक्ति को वास्तव में बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है। और जब हम सभी एक साथ मिलकर कार्य करते हैं और स्वयं एक विशेष कार्य के लिए प्रतिबद्ध करते हैं, तो हम जो कुछ प्राप्त करते हैं वह असीमित होता है। उस प्रक्रिया में हम एक साथ बंधे होते हैं और इससे एक मजबूत परिवार का निर्माण होता हैं।

इसलिए वर्ष के इस विशेष समय पर, जब आप अपने परिवार और अपने जीवन में अच्छी बातों पर मंथन करते हैं, उसी समय अपनी रोटरी विरासत के बारे में विचार करें। अब आपके लिए यह स्थायी प्रतिबद्धता व्यक्त करने का समय है ताकि हमारे फाउंडेशन का महत्वपूर्ण कार्य चिरस्थायी बन सके।

रॉन डी बर्टन
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

सम्मेलन

दो-पहिया पर

स्टीफन म्यूसर

हैम्बर्ग की एक साइकिल वाले शहर के रूप में मजबूत परंपरा रही है। अपने अधिकांश सपाट इलाके और बाइकिंग के लिए बेहतर आधरभूत सुविधाओं की मौजूदगी के साथ, साइकिल की सवारी करते हुए शहर भ्रमण करने के लिए यह एक आदर्श स्थान है, और 1 से 5 जून 2019 रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के लिए आने वाले रोटेरियन अनेक माध्यमों का उपयोग कर शहर भ्रमण कर सकते हैं।

छोटी यात्राओं के लिए, आप 120 स्थानों में से किसी भी स्थान से *StadtRAD (stadtrad.hamburg.de)*, या सिटी बाइक से यात्रा शुरू कर सकते हैं और गंतव्य स्थान पर पहुँचने पर एक नियत स्थान पर वहाँ छोड़ कर आगे बढ़ सकते हैं। पहले 30 मिनट के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाता है; इसके बाद, आपसे प्रति मिनट 8 यूरो सेंट या प्रति दिन £12 का शुल्क वसूल किया जाएगा। StadtRAD सिस्टम का उपयोग करने के लिए, आपको पहले क्रेडिट कार्ड के साथ ऑनलाइन पंजीकरण करना होगा, और आपके पास एक मोबाइल फोन होना चाहिए जो यूरोप में कार्य करने में सक्षम हो।

अनेक बाइक रेंटल शॉप शहर के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमण करने की पेशकश करते हैं। *hhcitycycles.de/en* या *Hamburg-radtour.de* (जर्मन में) आजमाएं। लंबी यात्राओं के लिए, *komoot.com* नामक ऐप का इस्तेमाल करें जो आपको अपने यात्रा की योजना बनाने में मदद कर सकता है। एक लोकप्रिय नया विकल्प किराए पर इलेक्ट्रिक बाइक लेना है, जो एक छोटी इलेक्ट्रिक मोटर से लैस है और जिसे पेडल से भी चलाया जा सकता है।

शहर भ्रमण करने वाने वाले सैलानियों को पता होना चाहिए कि हैम्बर्ग साइकिल चालक तेज साइकिल चलाते हैं और अपने रास्ते के लिए हठी होते हैं। पैदल चलने वालों को हमेशा साइकिल चालकों के प्रति सतर्क रहना चाहिए और साइक्वाक और साझे फुटपाथ दाएं किनारे चलना चाहिए। घंटी की आवाज सुनें; अगर आपके पीछे से घंटी की आवाज आ रही हैं, तो शायद आप गलत किनारे पर चल रहे हैं!

2019 HAMBURG

***www.riconvention.org* पर हैम्बर्ग में 2019 रोटरी सम्मेलन में शामिल होने के लिए पंजीकरण करें।**

रोटरी मेरा तनाव दूर करती है: सुशील गुप्ता

PRIP कल्याण बेनर्जी और RIPN सुशील गुप्ता।

रशीदा भगत

कोलकाता में वर्ष 2020-21 के लिए रोई अध्यक्ष के रूप में अपना नामांकन होने की बधाइयों के जवाब में, RIPN सुशील गुप्ता ने कहा कि उनका कोलकाता के साथ बहुत ही बहुमूल्य रिश्ता है; ''एक निदेशक के रूप में मेरी पहली बैठक यहाँ पर PRID शेखर मेहता द्वारा की गई, और यहाँ पर मेरे अनेक दोस्त है। लेकिन यहाँ मुझे इतना सम्मान दिया गया है कि मैं सोच रहा हूँ कि मेरी मंजिल कहाँ है।'' यह कार्यक्रम मंडल 3250, 3261, 3262, 3291 और 3292 द्वारा आयोजित किया गया था।

एक जोशीले हाईकर और उत्साही पर्वत प्रेमी होने के नाते उन्होंने कहा पर्वत की चढ़ाई करते समय एक व्यक्ति चोटी की ओर देखता रहता है, और कहता है, ''मुझे वहाँ पर पहुँचना है, और आप चढ़ाई करते रहो। अपने मन में वही भावना और संकल्प के साथ, मैं रो ई के शिखर तक की यात्रा करूंगा। लेकिन यह कोई आसान यात्रा नहीं होने वाली है; निस्संदेह PRIP राजेन्द्र साबू और PRIP कल्याण बेनर्जी की जगह लेना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन मुझे यकीन है ईश्वर की कृपा और मेरे गुरुजनों के आशीर्वाद से, मैं आपकी उम्मीदों पर खरा उतरूंगा।''

''रोटरी मेरा तनाव दूर करती है,'' वर्णित करते हुए, गुप्ता ने कहा कि रोटरी में यह उनका 41वां वर्ष है और इस यात्रा में, ''मैं बता नहीं सकता कि समुदाय की सेवा करने के लिए मुझे कितना प्यार और अवसर मिला है। शेखर (मेहता), इस बच्ची (6-वर्षीय वर्षा प्रमाणिक) को लाकर, आपने वास्तव में मेरे दिल को छुआ है।'' वह मेहता के कथन का जिक्र कर रहे थे कि RIPN की वजह से गिफ्ट ऑफ़ लाइफ कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों की पांच दिल की सर्जरियां की गई थी, और वर्षा को गुप्ता से मिलवाया गया था।

उसके बाद उन्होंने उदाहरण दिया कि रोटरी कैसे कार्य करती है। वर्ष 2006 में, जब वह कोपेनहेगेन सम्मेलन में शामिल हो रहे थे, तो उनका फ़ोन बजा। ''उदयपुर में हमने एक हृदय शिविर लगाया था और उसमें दिल की बीमारी से पीड़ित 20 मरीजों की पहचान की गई जिनमें से 12 बच्चों को सर्जरी की आवश्यकता थी। मैंने उनसे पूछा अब क्या, और उन्होंने कहा कि परियोजना/शिविर खत्म हो गया है। और मैंने कहा यह कैसे खत्म हो सकता है; यह तो अभी शुरू हुआ है। अब जो लोग जानते है कि उन्हें दिल की बीमारी है - पहले उन्हें कोई अंदाजा नहीं थी - वे आगे की कार्यवाही पर आश्चर्य करेंगे। चाहे वे ऑपरेशन करवाने में सक्षम हो या ना हो; यदि हाँ, तो वे पैसे कहाँ से लाएँगे। अब से हर दिन वे लोग एक मौत मरेंगे।''

इस तरह वह गिफ्ट ऑफ़ लाइफ कार्यक्रम में शामिल हुए जो बच्चों की दिल की सर्जरी करता है। ''अभी तक हम 100 प्रतिशत सफलता की दर के साथ 3,000 ऑपरेशन कर चुके है। इसी तरह रोटरी को अपनी परियोजनाएं करनी चाहिए; उन्हें उनके तार्किक निष्कर्ष पर ले जाकर।''

इस सम्मान को ''उन सभी रोटेरियनों को समर्पित करते हुए जिन्होंने रोटरी के लिए कड़ी मेहनत की है और जिस वजह से मुझे यह पद मिला है, गुप्ता ने कहा यह उनके मूल्यों और कड़ी मेहनत का भी सम्मान है।'' उन्होंने होटल व्यवसाय में प्रवेश किया बिना यह जाने कि यह उद्योग है क्या। ''तब तक मैंने कोई निजी कंपनी भी नहीं चलाई थी। लेकिन अगर आपके पास जूनून है कि मुझे यह सीखना ही है और ऐसा करने के लिए मैं कड़ी मेहनत करूंगा और सफल होऊंगा; यदि आप आत्मविश्वास और हिम्मत के साथ आगे बढ़ते है, तो सब कुछ सही होगा।''

जो मूल्य उन्होंने अपने माता-पिता से सीखें है, विशेषरूप से नैतिकता, वे उन्हें सफलता की ओर ले गए। साथ ही उनकी पत्नी विनीता का समर्थन - ''वह शांत है, ज्यादा कुछ नहीं कहती या कभी-कभी कहती है कि यह कुछ ज्यादा हो गया है, लेकिन जब ऐसा होता है, तो मुझे उसका पूर्ण समर्थन प्राप्त होता है... वह 100 प्रतिशत होता है उसमें एक प्रतिशत की भी कमी नहीं होती।''

बैठक को संबोधित करते हुए, पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी ने कहा: ''मैं इस अद्भुत विचार का आदी होने का प्रयास कर रहा हूँ कि भारत से चौथा रो ई अध्यक्ष पदभार संभालने की देहलीज़ पर खड़ा है।'' भारत ने अपना पहला अध्यक्ष 1962-63 में दिया था जब नितीश लाहरी, कलकत्ता से एक रोटेरियन, को चुना गया था। ''उन दिनों, अध्यक्ष सम्मेलन में चुने जाते थे और 1960-61 सम्मेलन में, वरिष्ठ रोटेरियन बस उनके पास आए और कहा, 'नितीश, हम चाहते है कि आप रोटरी अध्यक्ष बनें,'

भारत से चौथे रोई अध्यक्ष एक बहुत अच्छे नेतृत्वकर्ता होंगे। उनकी रोटरी प्रतिबद्धता और अनुबंध बेजोड़ है। और एक मेज़बान, और एक होटल व्यवसायी होने के नाते, उनका और उनकी पत्नी विनीता का आतिथ्य अद्वितीय है, और उतनी ही अद्वितीय है उनकी खुली हँसी।

पूर्व रो ई अध्यक्ष **कल्याण बेनर्जी**

PRIP कल्याण बेनर्जी विनिता का अभिवादन करते हुए चित्र में RIDE गण भरत पांड्या, कमल संघवी, RIPN सुशील गुप्ता और सोनल भी शामिल हैं।

विनिता 'गिफ्ट ऑफ लाइफ' के लाभार्थी - बरशा प्रामाणिक से बातचीत करते हुए। चित्र में (बाएं से) PRID शेखर मेहता, RIDE गण भरत पांड्या कमल संघवी, RIPN सुशील गुप्ता, PRIP कल्याण बेनर्जी और सोनल भी शामिल हैं।

और वह वहाँ थे। और उनकी अद्भुत थीम का जिक्र अभी भी अक्सर किया जाता है: *अपने अंदर एक चिंगारी सुलगाइए।*''

दूसरा भारतीय अध्यक्ष 1991-92 में बना, 30 साल बाद। ''राजेन्द्र साबू, रोटरी जगत में राजा के नाम से प्रचलित, साथ ही कोलकाता में जन्में, हमारा नेतृत्व करने के लिए आए और उन्होंने अपने नेतृत्व और अपनी थीम *स्वयं से परे देखिये* के माध्यम से एक बड़ी छाप छोड़ी। बीस साल बाद, मैंने अपने नेतृत्वकर्ता का अनुसरण किया। मैं भी, कोलकाता में जन्मा हूँ, और सभी कहते है कि एक रो ई अध्यक्ष बनने के लिए, आपका कोलकाता से रिश्ता होना जरूरी है!''

लेकिन रोटरी में, आप हमेशा अनपेक्षित की अपेक्षा कर सकते है, और सुशील गुप्ता, जो पंजाब में जन्में है को अब चुना गया है, ''लेकिन उनकी पत्नी विनीता कोलकाता में जन्मी है। मेरे बाद, केवल 8 वर्ष के पश्चात ही, वह पदभार संभालेंगे। तो आप देख सकते है कि हम तेजी से आगे बढ़ रहे है - पहले 29 साल, फिर, 20 साल और अब 8 साल। और शायद, भारत से अगला नेतृत्वकर्ता 5 या 6 वर्षों में ही आ जाए। और हम पुनः अपने कोलकाता संबंध की तरफ लौट सकते है!'' आखिरकार, रोटरी 1919 में भारत में इसी शहर में आई थी, उन्होंने आगे कहा।

गुप्ता की ''मजबूत रोटरी पृष्ठभूमि'' पर मोटे तौर पर चर्चा करते हुए, बेनर्जी ने उन्हें ''भारत के पोलियो उन्मूलन प्रवर्तक के रूप में वर्णित किया। हमने पोलियो उन्मूलन परियोजना के लिए 1980 के दशक के उत्तरार्ध में और 90 के दशक में एक साथ कार्य किया था। उन्होंने दुनियाभर के देशों में स्वच्छ, सुरक्षित जल प्रदान करने हेतु रोटरी की रोमांचक यात्रा का मार्ग दर्शन किया है।''

साथ ही, रोटेरियनों को यह पता होना चाहिए कि गुप्ता ने RAGS - रोटरी एक्शन ग्रुप्स - की संकल्पना करने में मदद की थी। और फिर चाहे वह CSR के माध्यम से कॉर्पोरेट के साथ काम शुरू करना हो, या TRF प्रबंधन... ''गुप्ता हमेशा से सक्रिय रूप से इसका हिस्सा रहे है।''

बेनर्जी ने खुलासा किया कि ''जब गुप्ता ने कहा वह ना केवल छोटी पहलों बल्कि रोटरी अंतर्राष्ट्रीय का भी सक्रिय रूप से हिस्सा बनना चाहते है, हम सबने कहा, 'आओ सुशील - वहाँ जाने का रास्ता वह है।' रोटरी में अध्यक्ष के लिए नामांकन समिति एक अद्भुत समिति है। इसने दुनियाभर के 34 ज़ोनों में से 17 से प्रतिनिधियों को चुना है और वे सभी पूर्व निदेशक है एवं अनुभवी और अभिज्ञ रोटेरियन है। और सुशील का अमेरीका और यूरोप दोनों के साथ प्रतिस्पर्धी क्षेत्र है।''

बेनर्जी ने वर्णित किया कि गुप्ता के साथ कई बार फ़ोन पर बात करने और रात में (भारत में) जागकर हिसाब-किताब करने में कई घंटें बिताने के बाद, उन्हें आखिरकार PRID शेखर मेहता, जो नामांकन समिति के सदस्य है, का फ़ोन आया और उन्होंने कहा कि गुप्ता चुने गए है।

फिर उन्होंने आगे कहा: ''मैं जानता हूँ कि भारत से चौथे रोई अध्यक्ष एक बहुत अच्छे नेतृत्वकर्ता होंगे। उनकी रोटरी प्रतिबद्धता और अनुबंध बेजोड़

है। और एक मेज़बान, और एक होटल व्यवसायी होने के नाते, उनका और उनकी पत्नी विनीता का आतिथ्य अद्वितीय है, और उतनी ही अद्वितीय है उनकी खुली हँसी। भगवान करे कि वह हमेशा ऐसे ही हँसते रहें और विनीता, जो बहुत ही खास इंसान है, के साथ मिलकर नए मानदंड स्थापित करें। विनीता रोटरी की पहली महिला के रूप में सुशील की अध्यक्षता में बहुत योगदान करेंगी। और हम उनके कोलकाता से संबंधित होने के लिए उनका धन्यवाद करते है!

अपने वर्ष के लिए तैयार होने एवं योजना बनाते समय, बैनर्जी ने गुप्ता से यह ध्यान में रखने के लिए कहा, अभी तो असली मंज़िल पाना बाकि है। अभी तो इरादों का इम्तिहान बाकि है। अभी तो तोली है मुट्ठी भर ज़मीन। अभी तोलना आसमान बाकि है। इसलिए, सुशील, योजना बनाएं और कार्य करें और नेतृत्व करें ताकि आप, आपसे पहले आए हम सभी से आगे निकल सकें, हमसे श्रेष्ठ और बेहतर हो सकें।

पूर्व रो ई निदेशक और बैठक के संयोजक शेखर मेहता ने कहा वह वास्तव में बहुत खुश है क्योंकि रोटरी में उनके दो गुरु, कल्याण बैनर्जी और सुशील गुप्ता हॉल में मौजूद है। ''गवर्नर बनने के पूर्व ही जो पहला बड़ा कार्यक्रम मैंने किया था वह बैनर्जी के साथ था और जो पहला बड़ा कार्य मुझे मिला था, वो गुप्ता के कारण मिला था, जिन्होंने मेरा नाम एक प्रशिक्षण नेतृत्वकर्ता के रूप में दिया था, और उसके बाद हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया।''

उन्होंने कहा कि नामांकन समिति के दो भारतीय सदस्यों के रूप में, उन्होंने और PRID मनोज देसाई ने प्रक्रिया की नियमावली के अनुसार ''हमारा कार्य करना शुरू किया जो कहती है कि आपको इस पद के लिए सर्वश्रेष्ठ आदमी चुनना होगा। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ हमने बिल्कुल वैसा ही किया... हमने उन्हें सिर्फ इसलिए ही नहीं चुना क्योंकि वह एक भारतीय है बल्कि इसलिए क्योंकि हमने प्रक्रिया की नियमावली के प्रत्येक शब्द का दिल से पालन किया है। वह अनुभव में मीलों आगे है और विभिन्न प्रकार के कार्य कर चुके है, कुछ 20 या 25 रोई समितियों में सेवा दे चुके है, जिनमें से आधी समितियों में वह या तो अध्यक्ष थे या उपाध्यक्ष थे!''

मेहता ने आगे कहा, ''खेद है कि, अन्य, बेशक सभी उत्कृष्ट रोटेरियन, उनके कार्य और अनुभव का मुकाबला नहीं कर पाए।''

गुप्ता को उनके नामांकन पर बधाई देते हुए, RIDE भारत पंड्या ने कहा कि ''जिन्होंने दुनिया के इतिहास पर एक छाप छोड़ी है वे वो लोग है जिन्होंने नेतृत्वकर्ता बनने के लिए खुद को योग्य साबित किया है और जो दृढ़ संकल्प, आत्म-विश्वास, कड़ी मेहनत और अटलता के प्रवण बल से प्रेरित करते है। गुप्ता उनमें से एक है।

वह अनुभव में मीलों आगे है और विभिन्न प्रकार के कार्य कर चुके है, कुछ 20 या 25 रोई समितियों में सेवा दे चुके है, जिनमें से आधी समितियों में वह या तो अध्यक्ष थे या उपाध्यक्ष थे!

पूर्व रो ई निदेशक **शेखर मेहता**

यह कोई आसान यात्रा नहीं होने वाली है; निस्संदेह PRIP राजेन्द्र साबू और PRIP कल्याण बेनर्जी की जगह लेना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

निर्वाचित रो ई अध्यक्ष **सुशील गुप्ता**

गुप्ता के साथ अपने 20 वर्ष पुराने संबंध को याद करते हुए, पंड्या ने कहा वह उनसे पहली बार ''हमारे मंडल सम्मेलन में एक ठ्ठझखउ के रूप में मिले थे जहाँ मैंने GSE टीम पर एक प्रस्तुतिकरण दिया था और अंत में उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और कहा 'बहुत बढ़िया।' कुछ वर्ष बाद वह रोई निदेशक बने और मैं डीजी मनोनीत बना। डीजी के रूप में, मेरे ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक था जल संरक्षण और प्रबंधन, और बेशक मेरी प्रेरणाओं में से एक था सुशील गुप्ता द्वारा इस क्षेत्र में किये गए महान कार्य।''

बाद में दोनों ने सदस्यता समिति में कार्य किया; रो ई समिति में यह मेरा पहला अनुभव था और उन्होंने मेरा हाथ थामा और मेरा मार्ग दर्शन किया कि रोई समिति में कैसे अच्छा कार्य करना है।

इतने वर्षों में, उन्होंने जाना है कि गुप्ता के सबसे अच्छे गुणों में से एक है उनका संगठनात्मक कौशल। चाहे वह मुंबई और कोलकाता में रोटरी संस्थानों का आयोजन करना हो जिनमें मैं शामिल हुआ था, या जल शिखर सम्मेलन या अध्यक्षीय सम्मेलन हो, उन्होंने अपने जबर्दस्त संगठनात्मक कौशलों का प्रदर्शन किया है। क्योंकि वह दृढ़ता के साथ यह मानते है कि किसी भी संगठन में सफलता कोई इत्तफ़ाक नहीं होती बल्कि हमेशा उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्धता, बुद्धिमत्ता से किया गया नियोजन और उचित निष्पादन का परिणाम होती है। और वह जो भी चीज़ शुरू करते है उसमें यही करते है। मैंने गुप्ता में तीन डी की पहचान की है: कमिट्मेन्ट (प्रतिबद्धता), कॉन्फ़िडेंस (आत्म विश्वास) और काम्पिटेन्स (योग्यता)।

उन्होंने जो भी कार्य अपने हाथों में लिया उसके प्रति वह प्रतिबद्ध रहे; हर चीज़ जो उन्होंने की उसमें वह योग्य रहे, चाहे वह प्राणिक उपचार हो, जल संरक्षण हो, हिमालयी ट्रस्ट हो या रोटरी।

गुप्ता के पास एक केन्द्रित दृष्टिकोण भी है; ''वह जो भी काम शुरू करते है उसे पूरे ध्यान और तन्मयता के साथ करते है। केन्द्रण में असीम शक्ति होती है; सूर्य ऊर्जा का एक शक्तिशाली स्रोत है और हर घंटे सूर्य पृथ्वी को बिलियनों किलोवाट ऊर्जा से भर देता है लेकिन एक टोपी और धूपरोधक के साथ आप घंटों धूप में निरंतर बैठ सकते है वो भी बिना किसी दुष्प्रभाव के।''

दूसरी तरफ, लेज़र ऊर्जा का बहुत ही कमज़ोर स्रोत है, लेकिन वह केवल कुछ किलोवाट ऊर्जा का इस्तेमाल करके उसे प्रकाश की एक अविरुद्ध धारा में केन्द्रित करता है और लेज़र का उपयोग करके आप कैंसर को ठीक कर सकते है, कांच को काट सकते है और हीरे, मानव जाति में माना गया सबसे कठिन पदार्थ, में एक छेद कर सकते है। ''केन्द्रण में असीम शक्ति होती है और इसे ही गुप्ता उस हर चीज़ में लाते है जो वह करते है,'' पांड्या ने आगे कहा।

पांड्या कहते है, गुप्ता के सबसे प्रीतिकर गुणों में से एक है उनकी ''देखभाल करने की प्रवृति और उदारता, जिसे पंड्या ने हाल ही में जाना जब एक दुर्घटना में उनकी पत्नी माधवी के कंधे की हड्डी टूट गई थी। अप्रैल 2018 में, दो नवनिर्वाचित निदेशकों के लिए एक बधाई समारोह के दौरान, गुप्ता ने माधवी की असुविधा पर ध्यान दिया और कुछ प्राणिक उपचार करने की पेशकश की। लेकिन समय की कमी के चलते यह हो नहीं पाया। लेकिन बाद में, जून में आयोजित टोरंटो सम्मेलन में, उन्हें अपना वादा याद आया और उन्होंने माधवी पर प्राणिक उपचार किया। वह कम दर्द में है और अब उसके कंधे में अधिक गतिशीलता है; लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इससे उनकी देखभाल करने की प्रवृत्ति का

सोनल संघवी और राशी मेहता।

पता चला। कमल और मैं गुप्ता के साथ काम करने के लिए भाग्यशाली होंगे, जब हम निदेशकों के रूप में रो ई मंडल में सेवा देंगे और वह रोई के शीर्ष पर होंगे (2020-21 में)।''

PRIP कल्याण बेनर्जी के कथन को याद करते हुए कि 2011-12 में जब वह रो ई अध्यक्ष थे और वाय पी दास और शेखर मेहता रो ई निदेशक थे, तो अन्य निदेशक उन्हें 'भारतीय माफ़िया' कहकर बुलाते थे। ''मैं निश्शंक होकर कह सकता हूँ कि शीर्ष पर गुप्ता के होने के कारण, हम भारतीय माफ़िया नहीं बल्कि भारतीय तिकड़ी होंगे! मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि 2020-21 में हम पूरा प्रयास करेंगे कि भारत और हमारे ज़ोनों के ध्वज रोई में शीर्ष पर लहराएँ ताकि आप गर्व के साथ अपना सर ऊपर उठा सकें और कह सकें कि एक भारतीय अध्यक्ष के रूप में, भारतीय रोटरी वहाँ शीर्ष पर मौजूद है! ''

जनसमूह का स्वागत करते हुए, अभिनन्दन के संयोजक, RIDE कमल संघवी, ने कहा उन्हें याद है कि वह कैसे विस्मय से दिल्ली की शानदार जगमाती हुई और ब्रांड न्यू हयात रीजेंसी (गुप्ता की पहली होटल) को देख रहे थे और अपने पिता से वहाँ पर एक बार खाने के लिए पूछ रहे थे। ''और मेरे पिता ने कहा 90 प्रतिशत अंक लाओ और तुम्हें तुम्हारा रात्रिभोज मिलेगा। मैंने कड़ी मेहनत की लेकिन केवल 85 प्रतिशत ही ला पाया, लेकिन फिर भी मुझे उस आलीशान होटल में रात्रिभोज करने को मिला।''

बाद में, जब वह रोटरी से जुड़े, तो RIPN गुप्ता उनके अनुकरणीय व्यक्तियों में से एक थे और उन्होंने हर तरह से उनके जैसा बनने की कोशिश की, जिनमें स्मार्ट सूट पहनना भी शामिल है! ''जब मैं एक DGE बना और GETS के प्रशिक्षण के लिए दिल्ली गया, तो मुझे एहसास हुआ कि जिस स्कूल में मैं शामिल हो रहा था उसके हेडमास्टर सुशील गुप्ता थे (गुप्ता 2003-05 तक रो ई निदेशक थे) और अब जब मैं एक निदेशक बनने जा रहा हूँ, वह कॉलेज जिसमें मैं प्रवेश ले रहा हूँ, उसके लेक्चरर गुप्ता है। (जब 2020-21 में गुप्ता रो ई अध्यक्ष होंगे तब संघवी निदेशक के रूप में अपने द्वितीय वर्ष में सेवा दे रहे होंगे)।

कार्यक्रम के अध्यक्ष PDG संजय खेमका ने कहा कि उन्होंने गुप्ता के गुरु स्वामी निलंजन सरस्वती को इस समारोह में लाने और उनसे RIPN को आशीर्वाद दिलवाने के लिए बहुत अधिक प्रयत्न किये। ''हम आपको विस्मित करना चाहते थे; वह तैयार हो गए थे, लेकिन अंतिम क्षण पर उनका सन्देश मिला कि उनकी तबियत ठीक नहीं है।''

गुप्ता की प्रतिक्रिया: ''अगर आप स्वामीजी को यहाँ लाने में कामयाब हो जाते, मेरे लिए तो दिवाली आज ही हो जाती!''

नेतृत्वकर्ता बनने के लिए खुद को योग्य साबित किया है और जो दृढ़ संकल्प, आत्म-विश्वास, कड़ी मेहनत और अटलता के प्रवण बल से प्रेरित करते है। गुप्ता उनमें से एक है।

पूर्व रो ई निदेशक **भरत पांड्या**

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रोटरेक्टरों की अध्यक्ष रेसिन से मुलाक़ात

आशिमा अग्रवाल

रोटरी ज़ोन इंस्टीट्यूट की साइडलाइन पर मंडल 3232 ने *लीडर्स मीट* लीडर कार्यक्रम का आयोजन किया, जहाँ सेवारत, नवनिर्वाचित एवं पूर्व DRR ने रोई अध्यक्ष बेरी रेसिन और रोई निदेशक सी भास्कर के साथ एक विशेष मुलाक़ात की। इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष पीडीजी ISAK नज़र के अलावा, रो ई रोटरेक्ट और इंटरेक्ट समिति के सदस्य कार्तिक किट्टू, DRR गिरीश वलसला, DRCC सोलोमन विक्टर और रोटेरियन रामकुमार राजू भी उपस्थित थे। दक्षिण एशिया के 22 मंडलों से आए 40 प्रतिनिधियों ने बैठक में हिस्सा लिया।

अध्यक्ष रेसिन ने संवादात्मक दर्शकों की प्रशंसा की और उनको रोटरेक्ट कार्यक्रम को प्रोत्साहित करने के अपने सपने से अवगत कराया। जनवरी में सैन डिएगो में होने वाली रोई सभा में शामिल होने हेतु चुने गए प्रतिनिधियों को उन्होंने बधाई दी और साथ ही हैमबर्ग में होने वाले रोई सम्मेलन में शामिल होने के लिए सभी रोटरेक्टरों का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने देखा कि जबकि रोटरेक्टरों को रोटरी का भविष्य समझा जाता है, केवल 4 प्रतिशत रोटरेक्टर ही रोटेरियन बनने के लिए आगे आते है। रोटेरियनों के रूप में रोटरी से जुड़ने हेतु अधिक रोटरेक्टरों को प्रेरित करने के लिए, दुनिया भर से 60 रोटरेक्टर सभा में उपस्थित रहेंगे और वे एक ब्रेकआउट सत्र का हिस्सा होंगे।

निदेशक भास्कर ने प्रतिनिधियों से भारत में रोटरेक्ट आंदोलन को मजबूत बनाने की अपील की और DRR को *rotary.org* पर रोटरेक्ट क्लबों का पंजीकरण करने एवं *रोटरेक्ट न्यूज़* को रिपोर्ट जमा करने की महत्ता पर प्रकाश डाला।

किट्टू ने सभा को यह कहकर उत्साहित किया कि रोटरेक्ट एक एमबीए कार्यक्रम की तरह है और यह रोटरी का जीवन बीमा है। उस आम सभा में अनेक सुझाव एवं विचार आए। IPDRR ओम चावला ने सभी चऊखज (मल्टी डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन आर्गेनाईजेशन्स) को जोड़ने के साथ-साथ इस बात का भी सुझाव दिया कि MDIO रो ई समिति के साथ एक उप-समिति के रूप में उसके नजदीक रहकर काम कर सकते है।

बाद में DRR अनमोल सिंघल ने सुझाव दिया कि DRR रोटरेक्ट क्लब के चार्टर फॉर्म पर साथ में हस्ताक्षर कर सकते है ताकि DRR को किसी भी रोटरेक्ट क्लब के खुलने की सूचना रहे।

PDRR सुभद्रा मारिमुथ्थु ने सत्र का समापन किया और अध्यक्ष रेसिन से अध्यक्ष के रूप में उनके व्यक्तिगत अनुभव और चुनाव के दिन से लेकर कार्यभार संभालने तक की उनकी यात्रा के बारे में पूछा।

पूछे गए सभी प्रश्नों का जवाब देकर रेसिन प्रसन्न थे और रोटरी की वैबसाइट, चार्टर से संबन्धित प्रश्नों और परियोजना निधीयन के संदर्भ में रोटरेक्ट नेतृत्वकर्ताओं द्वारा दिये गए साध्य प्रस्तावों को उन्होंने स्वीकार किया। उन्होंने श्रृंखला प्रक्रिया इंटरेकट-रोटरेक्ट-रोटरी की महत्ता पर भी ज़ोर दिया और इस बात की कामना की कि रोटरेक्ट सदयों की रोटरेक्ट अवधि समाप्त होने के पश्चात प्रत्येक रोटरेक्टर रोटेरियन बन जाए।

लेखक मंडल 3011 की मंडल रोटरेक्ट प्रतिनिधि है।

रोटरेक्ट अधिकारियों और DRR गण के साथ रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और RID सी भास्कर।

कॉफी सुशील के साथ

रशीदा भगत

कॉफी पर RIPN सुशील गुप्ता और विनीता के साथ एक अनौपचारिक चर्चा में PRID शेखर मेहता ने इस जोड़े के साथ PRIP कल्याण बेनर्जी और दो आगामी निदेशकों भारत पंड्या और कमल संघवी पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

शेखर मेहता: सबसे पहले आपको क्या महसूस हुआ, जब आपको पता चला कि आपको 2020-21 के लिए रो ई अध्यक्ष मनोनीत कर दिया गया है।

सुशील गुप्ता: मैंने पहला संदेश विनीता और मेरे दामाद को भेजा था 'गुरुजी ने आशीर्वाद दिया है।' विनीता की प्रतिक्रिया थी: 'ओह माई गॉड!'

SM: आपके साक्षात्कार में (नामांकन समिति के साथ) आपने दुनिया से पोलियो खत्म करने, पाकिस्तान के प्रधान मंत्री इमरान खान के साथ काम करने और अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना व्यापक दृष्टिकोण रखा था। क्या आप इसके बारे में बताएँगे।

SG: मेरा व्यापक दृष्टिकोण? रोटरी में औसत आयु कम करने और लैंगिक असमानता ठीक करने की काफी गुंजाइश है। हमारे यहां महिलाएं केवल 20-22 प्रतिशत हैं ... महिलाएं रोटरी में शामिल होंगी या नहीं, यह तय करने में समय ज़रूर लेती हैं कि लेकिन एक बार निर्णय कर लिया तो वे पुरुषों से कहीं अधिक प्रतिबद्ध सिद्ध होती हैं। वे रोटरी में काफी योगदान कर सकती हैं। हमें ज़रुरत है इस शताब्दी के शुरुआत में युवा हुए लोगों की भी क्योंक वे 35 - 40 वर्ष के हैं, उनके पास अतिरिक्त समय और धन दोनों उपलब्ध है, इस तरह हम अपनी सदस्यता बढ़ा सकते हैं।

जिस दिन से मुझे नामांकित किया गया, तब से हर वक़्त सोचता रहता हूँ कि हम दुनिया से पोलियो खत्म करने के लिए और क्या-क्या कर सकते हैं। इमरान खान सिर्फ एक राजनीतिज्ञ नहीं हैं और हमें इस कार्य में उन्हें शामिल करना ही है।

मैंने इसका भी ज़िक्र किया था कि सीएनबीसी ने विश्व में परिवर्तन ला रहे 10 संगठनों में रोटरी को भी चुना है और मेरा सपना है, दुनिया में सहयोगी के रूप में रोटरी को सबसे पहले वरीयता दी जाये। अकेले आप सिर्फ इतना ही कर सकते हैं, लेकिन जब मिल कर काम करते हैं तो हम वास्तव में दुनिया में परिवर्तन ला सकते हैं। ये कहा था मैंने!

SM: **(कल्याण बेनर्जी से)** आप उनके बडे भाई की तरह हैं। गुप्ता की किस विशेषता की आप सबसे ज़्यादा प्रशंसा करते हैं?

SG: मैं इस बात की सबसे ज्यादा तारीफ़ करता हूं कि वो जो भी करते हैं उसमें पूरी तरह डूब जाते हैं। हम में बहुत से रोटेरियन ऐसे हैं जो बातें तो बड़ी बड़ी करते हैं लेकिन काम बहुत कम करते हैं। ये उनमें से हैं जो बातें कम और काम ज़्यादा करते हैं। हमारे संगठन को ऐसे ही नेताओं की जरूरत है।

SM: आप ममिडास टचफ (जिसे भी हाथ लगाओ सोना बन जाता है) वाले व्यक्ति हैं, दुनिया के बेहतरीन होटलों में से एक आपके पास है, पर्यावरण, चिकित्सा, हिमालय, जल संरक्षण के बारे में आप भावुक और संवेदनशील हैं... और फिर सबसे ऊपर है गोल्फ। आप इन सब के साथ न्याय कैसे कर पाते हैं; आप दिन कैसे व्यतीत करते हैं ?

SG: **(हंसते हुए)** मेरे लिए तनाव मुक्ति का ज़रिया रोटरी है।

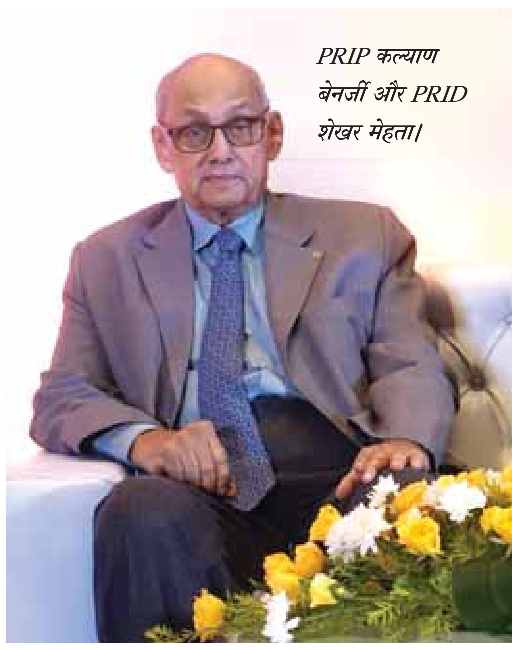

PRIP कल्याण बेनर्जी और PRID शेखर मेहता।

विनीताः **(हस्तक्षेप करती हैं)** मैंने कहा था बाकी सब छोड़ दो!

SG: मैं सुबह 4.45 बजे उठता हूं, योगासान करता हूं और फिर गोल्फ खेलने निकल जाता हूं। 35 साल से योग कर रहा हूं, बाबा रामदेव के भी पहले से! गोल्फ से वापसी के बाद नाश्ता ले कर ऑफिस जाता हूँ। मैंने कभी किसी के लिए समय आवंटित नहीं किया। जो कुछ भी सामने आता है, उसके अनुसार मैं अपना समय और ध्यान देता हूं। मैं पहले से समय निर्धारित नहीं करता पर मुझे विश्वास है कि आगे चल कर, ये हो जाएगा। हाँ, लेकिन आपके पास एक चीज ज़रूर होनी चाहिए, वो है किसी भी परिस्थिति का सामना करने का सामर्थ्य। हर एक को विपत्ति और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आप जो चाहें वो हासिल कर सकते हैं, अगर आपके अंदर विपरीत परिस्थिति का सामना करने की क्षमता है।

SM: RIDE कमल सांघवी, गुप्ता की वो कौन सी विशेषता है जिसकी वजह से आप उनके साथ काम करना चाहेंगे?

KS: इस असाधारण इंसान की जिस विशेषता की मैं सबसे अधिक प्रशंसा करता हूं, वह है लोगों में उनका यकीन, उनका अटूट विश्वास कि रोटेरियन कोई भी काम कर सकते हैं; और वो प्रत्येक रोटेरियन को किसी ना किसी परियोजना से जोड़ कर उसे आगे बढ़ने का पूरा अवसर देते हैं ।

SM: RIDE भरत पांड्या?

BP: वे अपनी धुन के पक्के हैं और जो कुछ भी करते हैं उसमें उनका जुनून और उत्कृष्टता दोनों नज़र आती हैं । जैसा कमल ने बताया कि वह रोटेरियनों को को कई अवसर देते हैं लेकिन साथ ही उसे पूरा करने के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं। उनका यही प्रोत्साहन सबसे बड़ी विशेषता है।

SM: पीडीजी रमेश अग्रवाल, आपने गुप्ता के साथ बहुत काम किया है, उनके साथ काम करके आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

RA: वह आशा नहीं छोड़ते; जब हम विन्स (WinS) पर काम कर रहे थे, तो मैं अक्सर हताश हो जाता था और कहता कि गवर्नर कोई जवाब नहीं दे रहा, और वे कहते : 'धैर्य रखो रमेश, कार्यक्रम सफल होगा।' वो जो कहते हैं कर के दिखाते हैं ; वह आपको ऐसा कुछ भी करने के लिए नहीं कहेंगे जो खुद नहीं कर सकते। और हाँ, काम करने वालों को वह अच्छी तरह पहचानते हैं।

SM: आपका क्या ख्याल है, PDG अज़ीज़ मेमन (पाकिस्तान से)?

SM: मैंने उनके साथ बहुत करीब से लंबे समय तक काम किया है और यहां जो भी कहा गया है मैं उसकी तसदीक़ करता हूं; वह कर्मशील है, नामांकन की खबर मिलने पर जब मैंने उन्हें बधाई देने के लिए फोन किया, तो उन्होंने कहा, ''अज़ीज़, मुझे पोलियो - मुक्त दुनिया चाहिए और यह बातचीत अभी भी जारी है।'' हम एक ही उड़ान पर दिल्ली से कोलकाता आ रहे थे और दो घंटे तक पूरे सफर में इसी विषय पर बात होती रही कि विश्व को पोलियो मुक्त करने के लिए पाकिस्तान और अफगानिस्तान में क्या करना चाहिए,! उन का दृढ़

RIDE कमल संघवी और भरत पांड्या।

संकल्प और लीक से हट कर सोच, वास्तव में महान है।

SM: विनीता, आपको रोटरी में सबसे ज़्यादा क्या पसंद है?

विनीता: रोटरी में बहुत सी चीजें अच्छी हैं लेकिन मुझे जो सबसे ज़्यादा पसंद है वो ये कि में आप सारी दुनिया में दोस्त बनाते हैं। उदाहरण के लिए, जब ये गवर्नर थे, कराची के डीजी और उनकी पत्नी से हमारी दोस्ती हुई। डीजी की मृत्यु हो चुकी है पर मैं और उनकी पत्नी अभी भी बात करते रहते हैं। कितने साल बीत गए लेकिन दोस्ती बरकरार है। पाकिस्तान और भारत के खराब रिश्तों के चलते हम मिल तो नहीं पाते पर हाँ दिवाली पर वो हमेशा मुझे बधाई देती हैं और मेरे ऐसे दोस्त सारी दुनिया में हैं।

SM: पीडीजी कल्पना खौण्ड, क्या आप RIPN से प्रश्न पूछना चाहेंगी?

KK: बहुत से रोटेरियन नहीं जानते कि गुप्ता भारत के सबसे दूरदराज इलाके अरुणाचल प्रदेश में आयोजित हमारे चिकित्सा शिविर में आये थे। वह एक बहुत दुर्गम इलाका था; और वहां पहुँचने के लिए यातायात के अन्य साधनो के अलावा नाव का प्रयोग भी करना पड़ा था। दूरवर्ती इलाकों की बात छोड़ो, लोग तो उत्तर पूर्व ही नहीं जाते । आपको वहां जाने के लिए किसने प्रेरित किया...

SG: उत्तर पूर्व और इसके जनजातीय क्षेत्रों के लिए मेरा दिल तड़पता है। मेरा मानना है कि उनके साथ नाइंसाफी हुई है और उन क्षेत्रों का समुचित विकास नहीं किया । अगर मौका मिला तो वहां जा कर मैं उन लोगों की सेवा करना चाहूंगा।

SM: मंडल 3240 द्वारा उत्तर पूर्व से आपके प्रेम का प्रतिफल देखिये ; शाम के आयोजन में इतनी तादाद में लोग आये कि हमें पंजीकरण रोकना पड़ा। हमें वहां से 20 की उम्मीद थी और वो 65 पार कर गए! आप भोजन के पारखी हैं; आपका पसंदीदा व्यंजन क्या है?

SG: मुझे बढ़िया खाना पसंद है, मुझे देख कर लगेगा नहीं क्योंकि मैं खुद पर नियंत्रण रखता हूं! मुझे भारतीय व्यंजन बेहद पसंद है और इसका कोई जवाब नहीं। सारी दुनिया में भारतीय व्यंजनों को बढ़ावा देना भी मेरे कार्यक्रमों में शामिल है। मुझे इटालियन खाना भी पसंद है, पर बिना मसाले के, स्वादहीन खाना नहीं खा सकता मैं, इस मामले में बहुत नकचढ़ा हूं मैं।

SM: आपके कार्यकाल की थीम क्या होगी?
SG: इस पर काम चल रहा है और ये जनवरी 2020 तक जारी रहेगा! (जब अंतर्राष्ट्रीय असेंबली में आगामी राष्ट्रपति की थीम का अनावरण किया जाता है)। लेकिन एक बात मैं आपको बता सकता हूं कि इसमें आध्यात्मिक सन्दर्भ भी होगा।

SM: आप अपने बाल क्यों नहीं रंगते?

SG: **(हसते हुए)** भगवान् ने जो दिया है वैसा ही रखता हूं!

SM: आपकी पसंदीदा जगह ?

SG: हिमालय।

SM: आपकी पसंदीदा नायिका?

SG: वो मेरे बगल में बैठी है! मैं बहुत कम फिल्में देखता हूँ ।

SM: रोटरी में आपके रोल मॉडल?

SG: किसी एक का नाम नहीं ले सकता ... लेकिन हां, कल्याण (बनर्जी) और मैं बहुत अच्छे दोस्त हैं। मुझे उनका काम पसंद है, उनके काम का समर्थन करता हूं और सराहना करता हूं... क्योंकि वो जो भी करते है, शिद्दत से करते हैं। मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा।

SM: विनीता, आपका पसंदीदा व्यंजन?

विनीता: मैं बता तो दूंगी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप मुझे हर समय वही खिलाते रहें! मुझे इडली और डोसा पसंद है!

SM: पसंदीदा नायक?

विनिता: केवल एक?

SM: आपकी पसंदीदा जगह?

विनिता: मुंबई।

SM: अंत में, RIPN के रूप में भारत में रोटेरियनों को आप क्या सन्देश देना चाहेंगे?

SG: सिर्फ एक संदेश: आप जो भी करें, दिल से करें और इसे अपने न्यायसंगत निष्कर्ष पर ले जाएं। हो सकता है। भले ही आप सिर्फ एक परियोजना करें, लेकिन इसे भली भाँति से करें।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

Project HOPE

Rotary

Lend your hand to help the victims of the flood-ravaged Kerala & Coorg.
Donate a home in your name
@ ₹3,50,000/-

Be the inspiration to rebuild lives.

Email: projecthope@vncgroup.com

Advisors
PRIP Raja Saboo
PRIP Kalyan Banerjee
RIPN Sushil Gupta

RI Director
Basker Chockalingam

Trustee
Gulam Vahanvaty

RI Directors Elect
Dr Bharat Pandya
Kamal Sanghvi

District Governors
A Venkatchalapathy
E K Ummer
E K Luke
P Rohinath

BE THE INSPIRATION

Rotary

Project Hope

Kerala & Karnataka Disaster Relief & Rehabilitation Project

Pledge Letter to "Donate a home"

I/We Rtn......................... of Rotary Club of .... District .... confirm my/our pledge to donate homes costing Rs.3,50,000/- each to a deserving family affected by the recent floods as our contribution to helping them rebuild their lives by providing them a roof to live under.

On receiving details relating to the beneficiary, we shall transfer an amount of Rs.......................... (towards the cost of building the shelter) to the following bank account:

Trust Account Name	Rotary Kerala Disaster Relief Fund
Bank	State Bank of India
Branch	Kaloor Deshabhimani Junction, Kaloor, Ernakulam, Kerala

Type	Current
Account No.	37991066583
IFSC Code	SBIN0070327

Let us 'Be the Inspiration' to rebuild the lives of our brothers and sisters who have lost their homes! Let us rekindle Hope!

Yours sincerely,

Signature

Name: Mobile:

Date:

Email ID: Rotary Club of ....

Please send the filled form immediately to: projecthope@vncgroup.com

वर्गीकरण विविधता सुनिश्चित करता है और इसे बने रहना चाहिए: आगामी रो ई निदेशक पांड्या

रशीदा भगत

इंस्टिट्यूट का एक दिलचस्प सत्र वो रहा जिसमें पूर्व रो ई अध्यक्ष राजेंद्र साबू ने वर्गीकरण प्रणाली, लचीलापन, रोटरी की सार्वजनिक छवि, कमजोर क्लब इत्यादि के सन्दर्भ में रो ई निदेशक सी भास्कर और आगामी निदेशकों भरत पांड्या और कमल सांघवी से प्रश्न किये थे।

पीआरआईपी साबू के पूछने पर कि रोटरी में वर्गीकरण प्रणाली को बनाए रखना चाहिए या नहीं, क्योंकि कुछ क्षेत्रों में लोगों की राय है कि इसे हटा देना चाहिए, आगामी रो ई निदेशक पांड्या ने कहा कि एक चीज़ जो रोटरी को अन्य संगठनों से स्पष्टतया अलग करती है, वो वर्गीकरण है। ''इससे क्लब में विविधता आती है; जैसा कि अध्यक्ष बैरी ने कहा था, हमारी पांच मूलभूत मान्यताओं में, सबसे कम महत्व विविधता को दिया जाता है।''

वर्गीकरण को ''निहायत ज़रूरी'' बताते हुए, उन्होंने कहा, ''जिस समय हम लोग रोटरी में शामिल हुए थे, उस वक़्त शायद वर्गीकरण की वजह से नए सदस्यों को लाने में अड़चन होती थी, लेकिन वर्गीकरण में हुई वृद्धि की वजह से और जिस प्रकार से नए व्यवसाय और उद्यम सामने आ रहे हैं, आज ऐसा नहीं है।'' सदस्यता में और अधिक विविधता लाने के लिए रोटेरियनों को नए पेशों का उपयोग करना चाहिए।

लचीलेपन की बात करते हुए, उन्होंने कहा ''शायद हमने लचीलेपन की अवधारणा को ही गलत समझा है। इसका मतलब यह बिलकुल नहीं है कि क्लब अपनी मनमानी कर सकता है। वर्गीकरण लचीलेपन से जुड़ा हुआ है।'' पांड्या ने कहा, जब CoL ने लचीलेपन की अनुमति दी होगी तो ''मेरे ख्याल से उेड प्रतिनिधियों के दिमाग में आवश्यकता के अनुरूप क्लब की कार्य प्रणाली में फेर बदल करने का विचार रहा होगा। लेकिन अमेरिका या जर्मनी में जो लागू होता है ज़रूरी नहीं कि वो भारत या न्यूज़ीलैंड में भी प्रासंगिक हो। हमारे मूल में वर्गीकरण है लेकिन लचीलेपन का मतलब यह नहीं है कि क्लब एक दिन में दो मीटिंग कर सकता है। वरिष्ठ नेताओं द्वारा क्लबों को यही बात समझाने की जरूरत है।''

तब साबू ने पैनलिस्टों से पूछा कि 2019 में प्रस्तावित CoL में वर्गीकरण प्रणाली हटाने के प्रस्ताव के बारे में उन्होंने क्या सोचा है। पांड्या ने जवाब दिया हालांकि वह और सांघवी पर्यवेक्षकों के रूप में भाग लेंगे, ''मुझे यकीन है कि सभी CoL प्रतिनिधि, जोकि रोटरी के वरिष्ठ नेता हैं, विद्वान हैं और जानते हैं कि वर्गीकरण रोटरी के मूल में है और हमें इसे समाप्त नहीं करना चाहिए।''

निदेशक भास्कर ने कहा कि पिछली CoL में भी कई सुझाव दिए गए थे, ''लेकिन प्रतिनिधियों ने कई मामलों को स्वीकृति देने में बहुत विवेक से काम लिया। यहां हमारे लिए वर्गीकरण बहुत महत्वपूर्ण है। हमें इंतज़ार करना पडेगा, देखते हैं कि दुनिया इसे किस नज़रिये से देखती है; इस का अंदाज़ा लगाना तो मुश्किल है, लेकिन ये बहस दिलचस्प ज़रूर होगी।''

इसके बाद साबू ने भास्कर से हमारे ज़ोन में रोटरी क्लबों के कामकाज का मूल्यांकन करने के बारे में पूछा और कहा कि क्या अभी तक अपनाई गई पद्धति - सदस्य संख्या और टीआरएफ में दी गई धनराशि की कसौटी पर क्लब के प्रदर्शन का आकलन जारी रखना चाहिए।

उत्तर में भास्कर ने कहा: ''मेरे ख्याल से हमारे ज़ोन में 80 प्रतिशत क्लब काफी अच्छा काम कर रहे हैं पर बाकी अपेक्षाकृत कमजोर हैं। पिछले वर्ष से, मानदंडों में अध्यक्ष उद्धरण (*President Citation*) में, क्लब किस तरह की परियोजनाऐं कर रहा है और साथ ही उन परियोजनाओं की रिपोर्टिंग शामिल है। माना की सदस्यता और टीआरएफ में दान, दोनों ही महत्वपूर्ण हैं, फिर भी वर्तमान में सिर्फ इसी मानदंड के आधार पर क्लब के प्रदर्शन का मूल्यांकन नहीं किया जा रहा।''

क्लब के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए एक व्यवस्था बनाई गई है और इसके आंकड़े मंडल वार डीजी के साथ साझा किये गए हैं ''ताकि वे अपने मंडलों में मजबूत और कमजोर दोनों क्लबों के बारे में जान लें। साथ ही डीजी को कमजोर क्लबों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा गया है।''

इस मामले पर अपनी राय देते हुए, आगामी रो ई निदेशक पांड्या ने कहा कि दुनिया में कहीं भी जब वह एक अतिथि रोटेरियन के रूप में बैठक कक्ष में प्रवेश करते हैं, वहां मुझे ऊर्जा महसूस होती है। अंदर जाने के बाद मुझे एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ा जाता और ना ही अनदेखा किया जाता है। बैठक ठीक समय पर शुरू होती है; अध्यक्ष ने सचिव से कार्यक्रम का एजेंडा साझा किया हुआ है ताकि संचालन में कोई संशय ना रहे ; बैठक में भाग लेने वाले लोगों की संख्या पर्याप्त है; वक्ता अपने समय का ध्यान रखते हैं और हम इस संतोषप्रद भावना के साथ निकलते हैं कि हम ने अपने समय का उचित उपयोग किया । मेरे विचार से, वह क्लब बढ़िया काम कर रहा है।''

रोटरी के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए पूछने पर, आगामी रो ई निदेशक सांघवी ने कहा कि चूंकि रोटेरियन दुनिया में परिवर्तन लाने के लिए रोटरी में शामिल हुए हैं, उन्हें खुद से ही यह पूछना होगा कि ''जो कुछ हम कर रहे हैं क्या ये पर्याप्त है?'' जहां कुछ क्लबों ने ''शानदार काम किया है,'' वहीं काफी क्लबों ने कुछ ज़्यादा काम नहीं किया है वो भी सिर्फ इसलिए क्योंकि वे अपने सामर्थ्य को भली भांति नहीं जानते। एक उदाहरण देते हुए, उन्होंने कहा कि एक क्लब में 20 रोटेरियनों की सम्पत्ति का औसत मूल्य, कम से कम ₹20 करोड़ तो होगा। ऐसे क्लब में 20 CEO या शीर्ष पर पहुंचे पेशेवर,जैसे व्यापारी, उद्योगपति, डॉक्टर,चार्टर्ड एकाउंटेंट इत्यादि तो होंगे ही। ''मैं चाहता हूं कि आप में से प्रत्येक अपना आत्मनिरीक्षण करे। हमारे पास काम करने का विलक्षण सामर्थ्य है, पर मुझे नहीं लगता कि हम इसका उपयोग कर रहे हैं। कृपया आत्मनिरीक्षण कीजिये ... इतना सामर्थ्य होने के बावजूद, हम कर क्या रहे हैं, हम अभी भी सिर्फ किताबें और पेंसिल दे रहे हैं? हमें उन स्कूलों को खड़ा करने की जरूरत है, न कि उनको केवल किताबें और पेंसिल देने की। आइए बड़ी सेवा परियोजनाएं लें। रोटरी को दुनिया

दाएं से : RID सी भास्कर, RIDE गण कमल संघवी और भरत पांड्या।

एक अतिथि रोटेरियन के रूप में बैठक कक्ष में प्रवेश करते हैं, वहां मुझे ऊर्जा महसूस होती है। अंदर जाने के बाद मुझे एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ा जाता और ना ही अनदेखा किया जाता है। बैठक ठीक समय पर शुरू होती है।

RIDE भरत पांड्या

कृपया आत्मनिरीक्षण कीजिये ... इतना सामर्थ्य होने के बावजूद, हम कर क्या रहे हैं, हम अभी भी सिर्फ किताबें और पेंसिल दे रहे हैं? हमें उन स्कूलों को खड़ा करने की जरूरत है।

RIDE कमल संघवी

बदलने की जरूरत है और इस के लिए हमें बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी लेनी होगी, भरपूर तालियों के बीच उन्होंने कहा।

ये भी कहा, मीडिया को केवल इंस्टॉलेशन मीटिंग्स या परियोजनाओं के पूरा होने पर ही आमंत्रित नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें पहले से आमंत्रित या सूचित करें; उन्हें बताएं कि हम 10 बच्चों को ऑपरेशन के लिए ले जा रहे हैं; आओ, हमारे साथ चलो। इससे एक बेहतर संदेश जाता है और ऐसे पत्रकार भी हैं जो आपके साथ चलेंगे।

वहीं पांड्या ने कहा, दूसरा मुद्दा यह है कि हमारे क्लबों में 70 प्रतिशत रोटेरियनों को पता ही नहीं है कि उनके क्लब काम क्या कर रहे हैं; हमें उन्हें भी शामिल करना होगा। साथ ही, नेता के रूप में हमें अपने विचार में और आचरण में, चुनावों सहित एक ईमानदार छवि बनानी पड़ेगी।

भौगोलिक कारणों से कुछ मंडलों का संचालन करना डीजी के लिए बहुत कठिन है और जिसकी वजह से उनका प्रदर्शन प्रभावित होता है, जिनमें साबू ने भास्कर से मंडलों के विभाजन पर हो रहे विरोध का समाधान पूछा। इसके कारण भावनात्मक हैं और यहां तक कि एक मंडल में 130 - 140 क्लब हैं । मेरा सपना है कि एक दिन भारत में 50 से अधिक मंडल होंगे!

इस की आवश्यकता पर सहमति जताते हुए भास्कर ने कहा, उत्तर

के. विश्वनाथन

ऊपर : DG गण गुड्डटी विश्वनाध (बाएं) और विश्व बंधु दीक्षित (दाएं) PRIP राजेन्द्र साबु को सम्मानित करते हुए, RIDE गण भरत पांड्या, कमल संघवी और RID सी भास्कर स्मरण पत्र के साथ।

नीचे : RIDE गण भरत पांड्या और कमल संघवी, माधवी पांड्या और सोनल संघवी के साथ।

और पूर्वी क्षेत्रों की तुलना में भारत के दक्षिणी और पश्चिमी भाग में अपेक्षाकृत सदस्यता बहुत अधिक है। यदि मंडल का भौगोलिक क्षेत्र बड़ा है तो भाषाओं की भिन्नता भी एक अतिरिक्त समस्या है। ''यही कारण है कि अब प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए हमें भौगोलिक और भाषा के आधार पर मंडलों का पुनर्निर्माण करने की आवश्यकता है।''

क्लब की उपलब्धि और प्रदर्शन को सुधारने में डीजी की भूमिका पर, पांड्या ने कहा कि कमजोर या विकासशील क्लब सिर्फ डीजी के मार्गदर्शन से ही अपने प्रदर्शन बेहतर कर सकते हैं। ''ये जिम्मेदारी मंडल अध्यक्षों की है कि उन क्लबों को बेहतर बनाने के लिए रणनीति बनाएं, और इसमें डीजी को डीजीई और डीजीएन के साथ मिल कर काम करना चाहिए।''

आगामी निदेशक ने कहा कि सात वर्षों तक सदस्यता के आंकड़ों का विश्लेषण करने के बाद ''मैंने जाना कि हमारे 25 प्रतिशत क्लबों में 20 से भी कम सदस्य हैं। हालांकि सदस्यता एकमात्र मानदंड नहीं है पर यह महत्वपूर्ण ज़रूर है। इसके अलावा, करीब 10-12 प्रतिशत क्लबों में पांच से भी कम सदस्य हैं! यहां इंस्टिट्यूट में मौजूद सभी जानते हैं कि वे अस्तित्व में क्यों हैं और इस समस्या से निपटने के लिए का समाधान निकालने के लिए हमें वरिष्ठ नेताओं से सहायता और प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। उन क्लबों को बंद करना बहुत मुश्किल है क्योंकि उनके पीछे कोई न कोई ज़रूर है। लेकिन हम इन क्लबों को बंद करने के लिए अगर मंडल स्तर पर नेतृत्व का समर्थन कर सकें, तो यह हमारे क्षेत्रों (ज़ोन्स) में रोटरी के लिए अत्यंत हितकर होगा।''

पांड्या के कथन से सहमत, भास्कर ने आगे कहा: ''जब तक कोई क्लब अपने रो ई ड्यूज़ (बकाया) चुका रहा है तब तक मंडल अध्यक्ष या रो ई निदेशक के लिए किसी भी क्लब को बंद करना बहुत मुश्किल है। यदि बकाया का भुगतान हो रहा है तो रो ई बोर्ड भी इसे बंद करने की मंजूरी नहीं देगा और इनमें से अधिकतर क्लब, जो अन्य प्रयोजनों के लिए बनाए गए हैं, वे बकाया भुगतान करने में अत्यंत तत्पर और नियमित हैं! इसलिए मेरे मंडल अध्यक्ष लाचार हैं और हमारे लिए यह प्रशासनिक निर्णय लेना बहुत मुश्किल है।''

जब पीआरईपी ने साबू की चुटकी ली कि उम्र के लिहाज से क्लब को युवा कैसे बनाया जाए, और यदि लोग ''जो 55 साल में बहुत सक्रिय हैं और उनके पास अच्छा अनुभव और समय है तो रोटरी में प्रवेश के लिए यह उपयुक्त समय है, साबू ने जवाब दिया: मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमें दोनों के मिश्रण की ज़रूरत है, अगर आप ऐसे लोगों को क्लब में लाते हैं जिनके पास समय है और प्रचुर अनुभव भी तो युवाओं के जोश के साथ आप क्लब को सही दिशा में ले जायेंगे।... उेड में एक प्रस्ताव दिया जा रहा है कि रोटरैक्ट क्लब सीधे रोटरी क्लब बन सकते हैं - और 55 वर्षीय लोगों के अनुभव से, रोटरी को तो फायदा ही होगा।''

सांघवी ने कहा कि युवा सदस्यों को लाने का एक आसान तरीका है, ''हाल ही हुई एक क्लब स्थापना में, मैं अचंम्भित रह गया जब मुझे पता लगा कि सभी 40 स्थापित सदस्य रोटेरियनों के बच्चे थे और उनकी उम्र 36-38 साल के बीच थी! और फिर मुझे एहसास हुआ कि अगर आप स्वयं के बच्चे को रोटेरियन बनने के लिए राज़ी नहीं कर सकते तो किसी अन्य के बच्चे को कैसे राज़ी करेंगे? हमारी औसत आयु कम करने का यह आसान तरीका है।''

चित्र: रशीदा भगत

मैंने कोई बहुत बड़ा काम नहीं किया है: रवि शंकर

रशीदा भगत

चेन्नई इंस्टीट्यूट में, आरसी बैंगलोर ऑर्चर्ड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर सभी के आकर्षण का केंद्र थे, जिन्होंने हाल ही में 'द रोटरी फाउंडेशन' को ₹100 करोड़ दान किए हैं। वहां उपस्थित अधिकांश रो इ अधिकारियों ने उन्हें बधाई दी और उनके साथ फोटो खिंचवाने के लिए एक लाइन में खड़े हो गए लेकिन रविशंकर ने सारी वाहवाही को दरकिनार किया और कहा कि वह कोई हीरो नहीं हैं। मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य तब हुआ जब एक घंटे चली हमारी बातचीत में उन्होंने ₹100 करोड़ का उल्लेख सिर्फ एक बार किया और वह भी सरसरी तौर पे। मंडल 3190 के डीजी सुरेश हरि और अनीता के साथ बातचीत में रविशंकर और पाओला ने अपने उत्तरों से दर्शकों का मन मोह लिया।

कुछ अंशः

सुरेश हरि: **हमें मणिपुर में अपने स्कूल के बारे में बताएं और सीमावर्ती इलाकों में आपका कैसे जाना हुआ?**

रवि शंकर: जब मेरी मर्जी के खिलाफ मुझे अध्यक्ष बनने पर मजबूर किया गया ... तब तक मैं आधा अधूरा रोटेरियन ही बना था और मुझे नहीं पता था कि मैं अपने फैसले को अंजाम कैसे दूं (₹100 करोड़ किस तरह दान करूं), मैंने सोचा कि सारे पैसे मुझे एक साल में खर्च करने पड़ेंगे! मैं पूरे देश में घूमा और सोचा की ये काम मुझे खुद ही करना चाहिए। इतने सारे पैसे देने के लिए मुझेकिसी पर भी विश्वास नहीं हो रहा था! इसलिए मैं पूर्वोत्तर के सीमावर्ती इलाके में चला गया, मुझे ये कहते हुए दुःख हो रहा है कि मैंने उन्हें बहुत ज़्यादा उपेक्षित पाया, कारण कुछ भी हो। इन राष्ट्रीय सीमाओं में सुराखहैं, वहां बहुत कम विकास हुआ है; वे लोग आदिवासी हैं और इन सभी नकारात्मक बातों के बावजूद आज तक मैंने जिन्हें भी देखा है वे बहुत ही पवित्र आत्मा हैं। बच्चे इतने सरल, निर्दोष और बिलकुल अछूते हैं। दुर्भाग्यवश, वे अपने आपको भारतीय नहीं मानते। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या आप भारतीय हैं? मैंने कहा कि आप भी भारतीय हैं। उन्होंने मुझ पर एक नज़र डाली ... उनकी निर्मलता अत्यंत मार्मिक थी। वहां मैंने कर्नल क्रिस्टोफर रेगो द्वारा चलाये जा रहे सनबर्ड ट्रस्ट के साथ काम करना शुरू कर दिया। हमें ये ध्यान रखना होगा कि उत्तर-पूर्व जैसे अशांत और तनावपूर्ण क्षेत्रों में विकास करते समय, यहां के मासूम बच्चे अनजाने में ही, जीवन में मिलने वाले अवसरों की कमी की वजह से विद्रोही या आतंकवादी नहीं बन जाएं । उनसे मिल कर और उनका ख्याल रख कर हमें उन्हें विश्वास दिलाना होगा कि वे हमारे अपने हैं।

SH: **क्या आप ऐसी परियोजनाओं की मदद कर रहे हैं जो एचआईवी संक्रमित बच्चों को फायदा पहुंचाती हैं?**

RS: हाँ; यह एक बहुत ही संवेदनशील और चिंता का विषय है। 1 से 10 साल के इन निर्दोष बच्चों की कोई गलती नहीं है, और ये एचआईवी / एड्स से पीड़ित हैं। मैं मणिपुर सीमा पर गया था और खुद नशीले पदार्थों की तस्करी और नशीली दवाओं के दुरुपयोग को देखा, जो कि एक बड़ी समस्या है। जब नशे के लिए माता-पिता आपस में सुइयों की अदला बदली करते हैं तो इस से एचआईवी संक्रमण हो जाता है और ये बच्चे एचआईवी / एड्स के उपहार के साथ पैदा होते हैं। भाई राम और सनबर्ड ट्रस्ट इन बच्चों का ख्याल रखते हैं और मैं उनकी मदद कर रहा हूं।

अनिता हरि: **पाओला, क्या आप इन एचआईवी बच्चों को देख कर बहुत ज़्यादा निराश हुए थे?**

पाओला: नही नहीं, बल्कि हमें तो तो इन बच्चों से बहुत कुछ सीखना है। उनमें से कई अनाथ हैं, बिना माँ बाप के, या सिंगल पेरेंट के, या फिर जिनके माता-पिता उनकी देखभाल करने में असमर्थ हैं। हमें देख कर वो तो वे इतने उत्साहित हुए कि एक-दूसरे का हाथ पकड़कर खुशी से उछल पड़े क्योंकि उनके साथ हम कुछ अनमोल क्षण बिताने आए थे, उनके साथ गाने और नाचने आए थे। सब कुछ होते हुए भी दुनिया में बहुत से लोग उदास और निराश रहते हैं। इन बच्चों के पास

तो कुछ भी नहीं है और फिर भी वे कितने खुश हैं। उनके साथ रहना बहुत अच्छा लगा।

SH: रवि, जब आप बच्चे थे, आपकी बहनें आपका ज़रुरत से ज़्यादा ध्यान रखती थीं; ऐसा क्यूँ? और आप कैंसर सेवा में काम क्यों करना चाहते हैं?

RS: मेरी बहनों का ख्याल आते ही मेरे चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। जन्म से ही मैं मानसिक रूप से विकलांग था ... और मुझे विश्वास है कि मैं ऐसा ही था मैंने इसी तरह से बर्ताव किया! हम एक चॉल में रहते थे, एक तरह से निम्न मध्यम वर्ग समुदाय के लोगों के रहने की जगह। मैं ठीक से बात नहीं कर पाता था, जब मैं बात करता तो मेरे मुंह से लार टपकती थी। मुझे त्वचा की एलर्जी थी और त्वचा पर फोड़े हो जाते थे जिसकी वजह से बच्चे मेरा मजाक बनाते थे। मेरी तीनों बहनों ने एक विशेष बच्चे की तरह ध्यान रखा और फरिश्तों की तरह मेरा संरक्षण किया; वे कमांडो की तरह मेरी रक्षा करती थीं।

मेरी बहनों के बाद, वो जगह पाओला ने ले ली है! जब मैं कहता हूं कि मैं नास्तिक हूं, पाओला बीच में कूदती है: मनहीं, वह नास्तिक नहीं है, वह अनीश्वरवादी है। हो सकता है वो ख़राब दिखता है, ख़राब बात कर सकता है, बुरी चीजें कर सकता है लेकिन वह नास्तिक नहीं है! म यहां तक कि मेरे लिए वो भगवान् से भी मोल तोलकर लेती है कि मैं अच्छा हूँ!

मेरी एक बहन की मृत्यु कैंसर से हुई थी, मेरी मां को भी कैंसर था लेकिन वो ठीक हो गई। मुझे लगता है कि कैंसर एक महामारी है और चूँकि अब पोलियो नियंत्रण में है, रोटरी को यह काम अपने हाथ में ले लेना चाहिए।

SH: हम उस समाज में रहते हैं जहां ये आपकी संपत्ति, धन और आपकी गाड़ी पर निर्भर करता है कि आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाये। क्या कहना चाहेंगे।

RS: सिर्फ यह दिखाने के लिए कि वह एक बड़ा और अधिक सम्पन्न आदमी है, मैंने देखा है कि लोग कार की चाभी फेंक कर कहते हैं 'अब बोलो।' दूसरे व्यक्ति से ज़्यादा सम्पन्न जताने की ये तरकीब बहुत पुरानी है और कई बार इस्तेमाल की गई है। मैंने महंगी कारों या कपड़ों पर कभी विश्वास नहीं किया है। युवाओं को देखो; वे फटी हुई जींस और टी शर्ट पहनते हैं, और आपको कुछ ऐसे भी मिलेंगे जो स्टार्ट-अप की तैयारी में जुटे हैं। मैंने पुराने ज़माने के पुरुषों को स्टार्ट-अप की शुरुआत करते हुए नहीं देखा है; क्योंकि वृद्ध लोगों में विश्वास की कमी है। इसलिए अपनी हैसियत दिखाने के लिए उन्हें अरमानी सूट्स या बीएमडब्ल्यू कार की ज़रुरत पड़ती है। बच्चे, युवा, हमारे नेता ... हम सभी आधे अधूरे, अपरिपक्व इंसान हैं।

रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चड्स के अध्यक्ष डी रवि शंकर और उनकी पत्नी पाओला और PRIP के आर रवींद्रन इंस्टिट्यूट में। चित्र में PRID शेखर मेहता, RIDE कमल संघवी और सोनल भी शामिल हैं।

SH: दान देने पर, जिस तरह से लोग दान देते हैं, आप उसके बड़े आलोचक हैं, विशेषकर पढ़े लिखे लोगों द्वारा।

RS: पढ़े लिखे लोग? वे मेरे लिए जोकर हैं, जो अक्सर अपने आप को सभ्य, सुसंस्कृत समझते हैं। उन्हें लगता है कि दूसरों को बेवक़ूफ़ बनाने में वे बहुत चतुर हैं और बिना कुछ दिए ही फायदा उठा सकते हैं।

हमारे गौरवशाली राष्ट्र में बहुत अच्छे शासक हुए हैं और हमने दुनिया को बहुत कुछ दिया है लेकिन बाद में हम पर विदेशियों ने शासन किया और हमारी स्थिति एक भिखारी जैसी हो गयी। यह तो जीवन का चक्र है। फिर हमने एक शक्तिशाली हथियार *अहिंसा* आंदोलन के माध्यम से अपनी आजादी की जीत हासिल की जिस की शुरुआत महात्मा गांधी ने की थी। इस के बाद हमारा देश लम्बी छलांग लगाते हुए तेजी से आगे बढ़ गया और आज इस की गणना शक्तिशाली राष्ट्रों में होती है, लेकिन दुर्भाग्यवश, शिक्षित लोग बहुत ही निराश करते हैं, उनकी मांगने की और जमाखोरी की आदत अभी भी नहीं गई है। वे असुरक्षित महसूस करते हैं और दान देने के लिए उनका दिल बड़ा नहीं है।

रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और एस्थर, रोटेरियन डी रवि शंकर और उनकी पत्नी आपोला को सम्मानित करते हुए।

SH: हाल ही में आपने अमेरिका में एक रेडियो चैनल को साक्षात्कार दिया था जहां आपने एनआरआई द्वारा दान देने के बारे में चर्चा की थी। हमें इसके बारे में बताइये।

RS: मजज़्बाफ, ये एफ़एम चैनल अप्रवासी भारतियों के लिए है। उन्होंने पूछा था कि अमेरिका में कई एनआरआई भारत की सेवा करना चाहते हैं; वह कैसे कर सकते हैं। मेरा मानना है कि आप जिस भी देश में रहते हैं, चाहे फ्रांस या अमेरिका, उस देश के प्रति ईमानदार रहें और उसके नियमों का पालन करें। और आप यदि वास्तव में सेवा करना चाहते हैं, तो सेवा तो एक वो वाहन है जो पेट्रोल या वीज़ा के बिना ही यात्रा की सुविधा देता है। रो इ अध्यक्ष बैरी रैसिन ने कहा है, रोटरी 200 से अधिक देशों में मौजूद है, इसलिए रोटरी में शामिल हो कर आप दुनिया के किसी भी कोने से मानवीय कष्ट कम करने में मददगार हो सकते हैं।

> **'प्रेरणा' एक बहुत बड़ा शब्द है और आप मेरे लिए इस का प्रयोग नहीं कर सकते! इस शब्द का उपयोग केवल तभी किया जाना चाहिए, जब आप कुछ असाधारण या अप्रत्याशित देखें।**
>
> **डी रवि शंकर**
> अध्यक्ष, रोटरी क्लब बैंगलोर

कोई प्रेरणा नहीं; कोई चमत्कार नहीं

SH: आपने दान दे कर इस साल की दोनों थीम को सम्मिलित कर दिया है - प्रेरणा बनें (*Be the inspiration*)- और चमत्कार के रचयिता (*Miracle Makers*) - मंडल अध्यक्षों के इस बैच के लिए रो ई निदेशक द्वारा दिया गया शीर्षक।

RS: रो ई अध्यक्ष बैरी रैसिन ने इतनी खूबसूरती से समझाया कि उनके थीम का लोगो क्या इंगित करता है सूर्यास्त के रंग, समुद्र और बहामास की रेत। लेकिन 'प्रेरणा' एक बहुत बड़ा शब्द है और आप मेरे लिए इस का प्रयोग नहीं कर सकते! इस शब्द का उपयोग केवल तभी किया जाना चाहिए, जब आप कुछ असाधारण या अप्रत्याशित देखें।

मैंने क्या किया? मुझे लगता है कि ये उसी तरह है जैसे कोई अपने टैक्स चुकाए या पिता की देखभाल करे और इस काम के लिए आप उसे पुरुस्कृत करें। मैंने कोई बहुत बड़ा काम नहीं किया। मैं सड़क से आया था और तिनका तिनका जोड़ा है। किसने की मेरी मदद? इसमें कोई प्रेरणा या कोई चमत्कार नहीं है ... जब मेरे पिता की मृत्यु हुई, समाज मेरे साथ खड़ा था। यह मेरा फ़र्ज़ है कि मैं समाज को वापस लौटाऊं। यह मेरे कंधों पर एक ऋण है। अगर मैं ऋण चुकाए बिना ही मर गया, तो इसका मतलब होगा की मैं अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ से भाग रहा हूँ

रवि शंकर ने टीआरएफ को ही क्यों चुना

MoU पर हस्ताक्षर करने के बाद - रवि शंकर और अध्यक्ष रेसिन। चित्र में पाओला, TRF ट्रस्टी माइक वेब, डीजी सुरेश हरि और TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवटी भी शामिल हैं।

सुरेश हरि: आप जिनकी सहायता करना चाहते हैं, लगभग एक साल पहले आपने उन के बारे में बताना शुरू कर दिया था। आपने अपना पैसा टीआरएफ को सौंपने का निर्णय कैसे लिया?

रविशंकर: मैंने आपको बताया कि मैं आधा-अधूरा रोटेरियन हूं, मैं टीआरएफ की संरचना के बारे में नहीं जानता था और जैसे ही मैं इसके भीतर गया, यह अलीबाबा-सिंदबाद की गुफा की तरह खुल रहा है! लगभग 20-25 साल पहले, मैंने फैसला किया था कि मुझे समाज से जो मिला है उसे वापस लौटाना चाहिए। समाज ने मुझे सब कुछ दिया है, जो मुझ पर कर्ज है और मेरा कर्तव्य है कि इसको वापस लौटाऊं। तो मैं हर तरफ हाशिए पर पड़े लोगों की, आदिवासियों आदि की तलाश में गया था। जब मैं लगभग थक गया, हरि ने मुझसे पूछा कि मैं क्या चाहता हूं। मैंने कहा कि एक कैंसर अस्पताल बनाना चाहता हूं साथ ही उत्तर पूर्व के जनजातीय क्षेत्रों में और तमिलनाडु में टोडा जाति के लिए एक - एक स्कूल और दो स्कूल पाकिस्तान में बनाना चाहता हूं, सिर्फ ये बताने के लिए की हम सब भाई - भाई हैं एक ही डीएनए साझा करते हैं। हमारे बीच, किसी के सिर्फ एक रेखा खींच देने से, हमारा डीएनए बदल नहीं जाता है। मेरा खून और उनका खून (पाकिस्तान में) एक ही है। हमें लोगों के बीच पुलों का निर्माण करना चाहिए और राजनीतिक व्यवस्था से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती।

हरि ने कहा, मरवि, टीआरएफ नाम की एक चीज़ है, और अपने रुपये, आप उन्हें दान कर सकते हैं और हर साल जारी रख सकते हैं। इस तरह चारों तरफ घूम घूम कर आप अपने आपको थका रहे हैं।' ममैंने फैसला कर लिया और पूरे एक साल बाद, उस दिन, मैं अच्छी तरह से सोया और हर रात सोता हूं। इस के लिए डीजी हरि और टीआरएफ को धन्यवाद।

SH: रवि, इस के लिए आपको धन्यवाद, लेकिन आजकल ठीक से मैं नहीं सो पा रहा! रोटरी की और टीआरएफ ट्रस्टी गुलाम वहनवती की और रो इ निदेशक भास्कर की प्रतिक्रिया क्या थी?

RS: डीजी, सिर्फ इस समय मैं आपके आदेशों की पालना नहीं करूंगा! टीआरएफ में, आप जो प्रक्रिया अपनाते हैं, जिस तरह की पारदर्शिता रखते हैं और पूरा ध्यान रखते हैं कि दान दाता की हर इच्छा पूरी हो, इस बात ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। ऐसा मैंने कहीं भी नहीं देखा। हरि, दो महीनों तक आपने चेक अपने ही पास रखा, बैंक में जमा नहीं किया!

आप कैसे भारतीय हैं? और फिर कहा कि जब तक आप सन्तुष्ट नहीं होंगे, हम यह पैसा नहीं लेंगे। मैंने अन्य गैर सरकारी संगठनों (NGO) में भी देखा है, जैसे ही उनको पता चलता है कि आप देना चाहते हैं, वे आते हैं और इसे लपक लेते हैं। गुलाम जी, मैं उन्हें एक सूट पहने हुए एक संत के रूप में देखता हूं ... वे स्वाभाविक रूप से सूफी हैं, वह बहुत आध्यात्मिक हैं ।

और भास्कर जी, वो एक डॉन के रूप में, सब पर नज़र रखते हैं कि कुछ गलत तो नहीं हो रहा। इसका संचालन कर रहे लोग, विश्वास जगाने के लिए प्रेरणा हैं। वहनवती ने पूरी प्रक्रिया का अनुसरण किया। हमारा डीजी, वो मुझे लोकल बस से हवाई अड्डे ले कर गया था । मैंने रोटरियनों की खुले दिल से जश्न मनाने वाली कुछ डरावनी कहानियां सुनी हुई थीं; एक संस्थापन में मैंने देखा की डीजी को हाथी पर लाया गया था और एक और डीजी की स्थापना तो हेलीकॉप्टर से फूलों की वर्षा से की गई थी। यह सेवा करना नहीं है!

खैर, वहनवती बेंगलुरू आए, हमने साधारण सा लंच लिया था, और 2 से 3 घंटे तक, उन्होंने हर बात के बारे में स्पष्ट रूप से खुल कर बताया। मैं 200 प्रतिशत संतुष्ट हो गया था और इसके बाद ही चेक जमा किया गया। यह है रोटरी फाउंडेशन!

SH: आपने बहुत सारे दस्तावेज़ीकरण पर जोर दिया; बहुत परेशान किया आपने!

RS: यह दान बहुत सोच समझ कर, तैयारी के बाद दिया गया है और वो भी उस समय जब हमारा देश शानदार प्रदर्शन कर रहा है और आज हम दूसरों से भीख नहीं मांग रहे। दस्तावेज़ीकरण बहुत जरूरी है। आप मनुष्यों के चंचल दिमाग को तो जानते ही हैं। और जीवन की भी कोई गारंटी नहीं है, इसलिए वसीयत पंजीकृत की गई थी, और दान के दस्तावेज पर पाओला और मेरे साझेदार हरि ने, जिसे मैं भाई की तरह मानता हूँ, हस्ताक्षर किये थे ताकि यह लागू हो सके। मेरे पास केवल ₹10 करोड़ थे (जो उन्होंने पहले ही दे दिए), शेष संपत्ति के रूप में है जिसे बेच कर पैसा दिया जाएगा।

मेरी एक अपील है; जब शादी होती है, लड़की के लिए उसका पति हीरो होता है और ये सोच कर कि वह उसकी, बच्चों की और माता-पिता की देखभाल करेगा, उसकी आँखों में चमक आ जाती है। लेकिन मैंने देखा है, अपने दोस्तों में भी, जब भी पति कुछ अच्छा करने का फैसला करता है, पत्नी उसे रोक देती है। उस समय वह उसे मूर्ख समझती है। महिलाओं से मेरा अनुरोध ये है कि कृपया इस बात को समझें कि एक व्यक्ति, सब कुछ करने के बाद, आप के सभी वादों को निभाने के बाद, अगर वह समाज के लिए कुछ करना चाहता है, तो कृपया उसे रोकिये मत।

SH: आपने भास्कर के व्यावहारिक दृष्टिकोण का उल्लेख किया था, वह कभी हस्तक्षेप नहीं करते...

RS: डॉन कुछ करता नहीं, वह केवल देखता है, और काम पूरा करवाता है! (दर्शकों की जोरदार तालियां)। ■

रो ई अध्यक्ष और रवि शंकर गले मिलते हुए। चित्र में पाओला, RID सी भास्कर, PRIP के आर रवींद्रन और TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवटी भी शामिल हैं।

और अपनी ही नज़रों में गुनहगार हो जाऊंगा। मैं अपने चेहरे पर एक मुस्कराहट लिए हीरो की तरह मरना चाहता हूं क्योंकि समाज ने मेरा हाथ थामा और मुझे यहां तक लाया है। ना तो मैं कोई प्रेरणा हूं और ना ही मैंने कोई चमत्कार किया है।

अनिता: पाओला, अपनी बेटी को उच्च शिक्षा के लिए ऑस्ट्रेलिया भेजने से पहले उस के साथ हुई दिलचस्प बातचीत के बारे में हमें बताएं।

पाओला: जाने से एक दिन पहले, हमने उससे पूछा कि वह कब वापस आना चाहती है। उसने कहा कि शायद वह वापस नहीं आये। हमने कहा, इतने प्यार से हमने तुम्हारे लिए ही ये खूबसूरत घर बनाया है की एक दिन तुम और तुम्हारी बहन इसमें रहोगी। उसने कहा कि मुझे इस घर की ज़रुरत नहीं है मैं इसे बेच दूंगी। घर में 30 साल रहने के बाद ये सुन कर, हमें बहुत तकलीफ हुई। तो रवि ने पूछा, म बेच दें इसे, फिर क्या करें म? उसने कहा: 'कश्मीर में स्कूलों का निर्माण करो।'

हम चकित रह गए। मेरी दोनों बेटियों में उनके पिता के वंशाणु हैं और जितनी जल्दी

Merc खरीदें, टीआरएफ की मदद करें

अनिता हरि: रवि, आपने कहा कि पाओला आपके लिए गुरु की तरह है। क्या आप खुल कर बता सकते हैं। ये भी कहा कि वह अनमोल रत्न है। उससे आप क्या तात्पर्य है?

आरएस: मेरे लिए वह वास्तव में एक शिक्षिका है और कभी-कभी, अनजाने में ही मुझे बहुत कुछ सीखा जाती है। उसने कभी भी मुझ से धन, आभूषण या विलासिता की चीजें नहीं माँगी। वह जो भी पहनती है वह आभूषण कृत्रिम है और इसमें वह बहुत सुंदर दिखती है। उसका एक ज़ेवर जो कोई भी नहीं चुरा सकता है, सबसे अच्छा ज़ेवर जो वो हमेशा पहने रखती है, वो है उसकी मुस्कुराहट। अगर मैं इस मुस्कराहट की रक्षा कर सकता हूँ, तो मैं हीरो हूं!... एक दफा उसने मुझे सीख दी और *रोटरी न्यूज़* की रशीदा भगत इस की गवाह हैं, साक्षात्कार करते समय रशीदा ने मुझसे पूछा था कि क्या मेरे पास एक लक्जरी कार है। मैंने कहा था हाँ और मुझे खेद है कि मेरे पास है, और यह आखिरी बार है जब मैं एक लक्जरी कार खरीद रहा हूं। वो कार मैंनें ₹72 लाख में खरीदी; उस पैसे से मैं दो स्कूलों का निर्माण कर सकता था, जो कई दशकों तक बहुत सारे बच्चों को शिक्षित करते।

अगले दिन, मैं अपनी खूबसूरत पत्नी के साथ नाश्ता कर रहा था ... मैं अक्सर हमारी एसयूवी का इस्तेमाल करता हूं और उसने कहा कि क्या आपको याद है कि बेंज वहां खड़ी है, और आप इसकी तरफ देखते भी नहीं हैं। मुझे लगा वह फिर से मुझे कुछ सिखा रही थी, और वह था: म ढोंगी मत बनो, जो कहा है, कर के दिखाओ। बिना एक शब्द बोले, उसने मुझे सबक सिखा दिया। (स्क्रीन पर एक तस्वीर दिखाते हुए) यह कार, जो 3,000 किमी भी नहीं चली, एक खूबसूरत कार है, मैं नीलाम करना चाहता हूं और इसका पैसा टीआरएफ को जाएगा। रशीदा, मेरे भीतर यह विचार तुमने जगाया है! ■

बाएं से : इंस्टिट्यूट अध्यक्ष ISAK नाज़र, TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवटी, PRIP के आर रवींद्रन, एस्थर, पाओला, डी रवि शंकर, अध्यक्ष रेसिन, TRF ट्रस्टी माईक वेब, अलीसन, RID सी भास्कर, अनिता, डीजी सुरेश हरि, RID यून-सू मून, ह्यून जू याँग और RISAO से TRF प्रबंधक संजय पारमार।

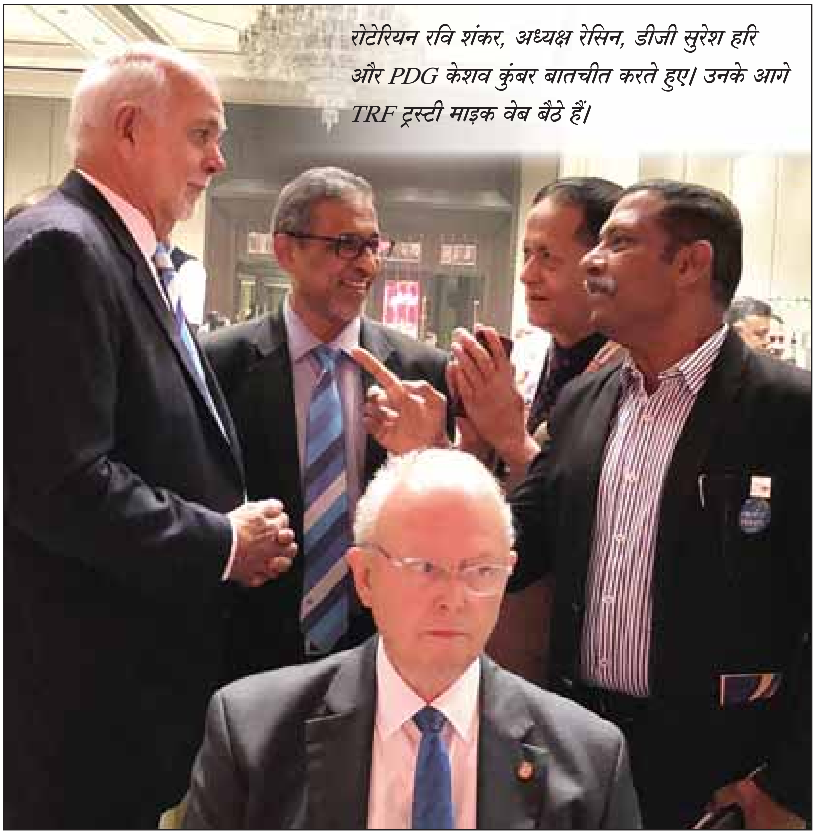

रोटेरियन रवि शंकर, अध्यक्ष रेसिन, डीजी सुरेश हरि और PDG केशव कुंबर बातचीत करते हुए। उनके आगे TRF ट्रस्टी माइक वेब बैठे हैं।

हो सके वे भी इस छोटी उम्र में, समाज को वापस लौटना चाहती हैं! मैं आप सभी से देने के लिए अनुरोध करती हूं ... चाहे थोड़ा हो या कम हो। ईमानदारी से कहूँ तो मेरे पति ने अपनी आय का 75 या 80 प्रतिशत दे दिया है; मुझे विश्वास है कि उसने हमारे लिए भी कुछ छोड़ा होगा !

SH: आपने कहा था कि क्लब अध्यक्ष रहते हुए, आपका यह साल, लौटाने का साल होगा। इसके बारे में और अधिक बताएँ।

RS: हम मां के पेट से कुछ भी लेके पैदा नहीं हुए हैं और ऐसा भी नहीं है कि हम सभी महान लोग हैं। जब हम मर जाएंगे तो हम हमारे साथ कुछ भी साथ नहीं ले जाएंगे। हमारे क्लब, आर सी बैंगलोर ऑर्चर्ड्स ने तीन परियोजनाएं लॉन्च की हैं। पहली, शहर को वापस लौटाने की है। हम सबसे गरीब वर्ग के 800 बच्चों के लिए एक सरकारी स्कूल बना रहे हैं। मैं भी एक सरकारी स्कूल में ही पढ़ा हूँ और उस स्कूल में जाने से मुझे खुशी नहीं मिलती थी।

दूसरी, शहर से दूर; हमने 125 स्कूलों को गोद लिया है और उन्हें रोटरी हैप्पी स्कूल के नाम से बुलाएंगे और हम इन स्कूलों को ऐसा बना रहे हैं जहां बच्चे जाना चाहेंगे ... सीखना चाहेंगे और वहां खुश रहेंगे। इस तरह हम समाज को वापस लौटाएंगे।

तीसरी परियोजना पर्यावरण को वापस लौटाने से संबंधित है। हाल ही में केरल और कर्नाटक में बाढ़ से नष्ट हुए घरों के पुनर्निर्माण के लिए भास्कर ने अपील की थी, जो उचित है। लेकिन केरल में जो हुआ वह प्राकृतिक आपदा नहीं बल्कि मनुष्य निर्मित त्रासदी थी। हमने अपने लालच के लिए पेड़ काट दिए ; जबकि पेड़ धरती की मिट्टी को रोके रखते हैं, भूजल के स्तर में सुधार करने और धरती को मजबूत रखने के लिए, जड़ें बारिश के पानी को नीचे ले जाती हैं। मनुष्यों के इस लालच को दूर करने के लिए, हमने कर्नाटक के कोलार अंचल के सम्मिलित क्षेत्र में पहाड़ियों पर एक करोड़ पौधे लगाने और 10 करोड़ बीज रोपने की एक परियोजना शुरू की है। यह लोगों का एक महान आंदोलन है और वृक्षारोपण दो जिलों के लगभग 13,000 वर्ग किमी में फैले क्षेत्र में किया जाएगा। यह प्रकृति को वापस लौटाना है। प्रकृति के बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। मैं सभी रोटरियनों से अनुरोध करता हूं की वो हमसे जुड़ें और साथ ही साथ हम मप्रकृति को वापस देनेफ का एक मजबूत आंदोलन शुरू करें!

SH: रवि ने वृक्षारोपण परियोजना के लिए 4 करोड़ रुपये अतिरिक्त दान देने का वचन दिया है। आप को सलाम; मुझे नहीं पता कि यह सब करने की शक्ति आपको मिलती कहां से है।

RS: इन तीन परियोजनाओं के लिए मैंने और पाओला ने ₹2.5 करोड़ की शुरुआती पूंजी दी है, और फाउंडेशन में दिए गए ₹100 करोड़ के अलावा मेरे पार्टनर और मेरे लाइफ सपोर्ट सिस्टम, बी एस एन हरि ने भी ₹50 लाख दिए हैं। मुझे उन पर गर्व है।

हमारे यहां ऐसे रोटेरियन भी हैं जिन्हें मैं कॉस्मेटिक रोटेरियन कहता हूं। वे वृद्धाश्रम जाएंगे, कुछ चॉकलेट देंगे, फोटो खींच कर फेसबुक पर डाल देंगे । इसे बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए।

SH: कृपया अपने जीवन के विज़न और मिशन के बारे में बताएं?

RS: जैसा कि मैंने बताया, मानसिक रूप से मैं चुनौतीपूर्ण बच्चा था और मेरा सपना भी ऐसा ही है। मुझे नहीं पता कि यह कब तक पूरा होगा लेकिन कुछ भी असंभव नहीं है। मैं इस दुनिया में केवल दो सीमाओं को देखना चाहता हूं, समुद्र और आकाश के बीच, अन्य सभी, धर्म, भाषा, जाति इत्यादि के आधार पर बनाई गई सीमाएं मानव निर्मित हैं। मेरा सपना है कि विश्व की एक ही सरकार हो जहां देश राज्य बन जाएंगे और हम सभी विश्व नागरिक बन जाएंगे। मेरा मानना है कि रोटरी एक ऐसी निर्बाध दुनिया का निर्माण कर सकती है, जहां रक्षा बजट ख़त्म कर दिया जाये और इस से संचित अथाह सम्पत्ति का उपयोग दुःख और गरीबी को मिटाने के लिए किया जाए।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

चंडीगढ़ में अध्यक्ष

(**ऊपर से दक्षिणावर्त**) दौरा करने आए रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन के लिए शासकीय मॉडल स्कूल मनिमाजरा की छात्राएं भांगड़ा प्रस्तुति देती है; अध्यक्ष रेसिन, एस्थर और PRIP राजेंद्र साबू हाथों की धुलाई के सही तरीके का प्रदर्शन देखते है; लड़कियाँ अध्यक्ष रेसिन को भांगड़ा की कुछ स्टेप्स सिखाती है; एस्थर भांगड़ा की कुछ स्टेप्स करने की कोशिश करती है; उषा साबू, PRIP साबू और मंजू दास के बीच में बैठी, एक रोटेरियन की पत्नी का स्वागत करती है; शहर के रोटरी शांति स्मारक पर रेसिन और एस्थर।

बेरी

(**ऊपर से दक्षिणावर्त**) एक अंतर-शहरी रोटरी क्लब बैठक में रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और एस्थर को एक चित्रपट पर बुनी हुई उनकी थीम *प्रेरणा बनिये* उपहार स्वरूप दी गई। डीजी प्रवीण गोयल (बाएँ) और पीडीजी रमन अनेजा और बसु गोयल भी चित्र में शामिल हैं। शांति रैली में कलाकारों ने पंजाब की पारंपरिक फुलकारी कढ़ाई को चित्रित किया; साबू परिवार द्वारा आयोजित एक रात्रिभोज में रोटेरियनों की पत्नियों के साथ उषा साबू; अध्यक्ष रेसिन और एस्थर एवं PRIP राजेंद्र साबू और उषा एवं डीजी प्रवीण गोयल के साथ मंडल 3080 के अन्य PDG और उनके जीवनसाथी; शांति रैली में इंटरेक्टर शांति पोस्टर थामे हुये; साबू परिवार द्वारा आयोजित रात्रिभोज में अध्यक्ष रेसिन, एस्थर और PRIP साबू, एवं पीडीजी मधुकर मल्होत्रा अन्य आमंत्रितगणों के साथ।

चित्र: रशीदा भगत; एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

मनोनित रो ई अध्यक्ष का मुंबई और जयपुर में अभिनंदन

टीम रोटरी न्यूज़

दक्षिणावर्त : बाएं से : DGN हरीश मोटवाणी, DG गण रविकिरण कुलकर्णी, राजीव शर्मा, शैलेष पालेकर, PRIP कल्याण बेनर्जी, बिनोटा, RIDE भरत पांड्या, RIPN सुशील गुप्ता, विनिता, माधवी, PRID अशोक महाजन, नयनतारा, TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवटी, DG गण शशी शर्मा और एषस गंगुली; RIDE पांड्या, RIPN सुशील गुप्ता को विनिता और माधवी की उपस्थिति में सम्मानित करते हुए; माधवी, विनिता को पागड़ी पहनाते हुए। RIPN सुशील गुप्ता, RIDE भरत पांड्या और DGN सुनिल मेहरा भी चित्र में शामिल हैं।

RIPN गुप्ता, RIDE भरत पांड्या और मंडल नेताओं की उपस्थिति में MoU हस्ताक्षर करने के बाद रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट के अध्यक्ष सुकेतु जारीवाला और डीजी शशि शर्मा।

RIPN सुशील गुप्ता और विनीता के लिए मंडल 3030, 3131, 3132, 3141, 3142, 3170 द्वारा मुंबई में आयोजित एक अभिनंदन सभा में, संयोजक एवं RIDE भारत पांड्या और माधवी ने पारंपरिक पेशवाई पगड़ी देकर जोड़े का अभिवादन किया। अभिवादन सभा स्फूर्तिदायक थी और PRIP कल्याण बेनर्जी, टीआरएफ़ न्यासी गुलाम वाहनवटी, PRID अशोक महाजन और पांड्या ने इसे संबोधित किया था। सभी छह मंडल गवर्नरों ने गुप्ता को बधाई दी और 2020-21 में उनके अध्यक्षीय कार्यकाल के दौरान उनके सपनों एवं लक्ष्यों के लिए अपना पूरा समर्थन देने का वादा किया।

जयपुर में, एक और समारोह में इनका स्वागत PDG गण अशोक गुप्ता और अजरावाला ने किया।

अपने जावाब में, RIPN गुप्ता ने अपने सपने एवं परिकल्पनाएँ साझा की और इन मंडलों द्वारा किए गए अच्छे कार्यों की प्रशंसा करने के साथ ही, उन्होंने उन सभी को 30 जून, 2021 तक भारत के 10,000 गाँवों को परिहार्य अंधेपन से मुक्त करने के उनके सपने के लिए कार्य करने हेतु चुनौती दी।

कार्यक्रम में रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट के अध्यक्ष सुकेतु जरीवाला और मंडल 3141 के डीजी शशि शर्मा के बीच तीन वर्षों के लिए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया जिसके तहत वाडा ज़िले में जरीवाला द्वारा दान की गई एक एकड़ भूमि पर एक व्यावसायिक केंद्र स्थापित किया जाना है। ■

RIPN गुप्ता, DGN गण संग्राम पाटिल, संदीप कदम, हरीष मोटवाणी और सुनिल मेहरा से पातचीत करते हुए। चित्र में PDG लता सुब्रायुडु भी शामिलत हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

दृष्टि बाधित लड़कियाँ जूडो सीखती है

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब जम्मू आस्था, मंडल 3170, ने जम्मू के लुइ ब्रेल स्कूल में 30 दृष्टि बाधित लड़कियों के लिए एक आठ-दिवसीय जूडो कोचिंग शिविर का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का मकसद उन्हें एक मज़ेदार गतिविधि में लिप्त करने एवं सामाजिक अलगाव से लड़ने में उनकी मदद करने के साथ उन्हें आत्म रक्षा तकनीकों से सशक्त करना था, परियोजना के निदेशक सूरज भान सिंह कहते है जो जम्मू और कश्मीर खेल समिति में जूडो के प्रशिक्षक है।

अपने प्रशिक्षण के बाद लड़कियों ने प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। रंजीत कालरा, जम्मू और कश्मीर ब्लाइंड एंड पैरा जूडो एसोसिएशन के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि थे।

पिछले वर्ष चार लड़कियों ने इस स्कूल में नेशनल पैरा जूडो चैंपियनशिप में हिस्सा लिया था। उनमें से कोई नहीं जीता, लेकिन ''हमने जाना कि यदि हमें जीतना है, तो हमें दर्शकों की तालियों एवं जयकारों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। अगले साल हम जरूर जीतेंगे,'' स्कूल की एक पैरा जूडो खिलाड़ी, भूमिका कहती है।

लड़कियाँ अपने जूडो कौशल प्रदर्शित करते हुए।

''उनकी विकलांगता के कारण, उन्हें शारीरिक एवं यौन शोषण का बड़ा खतरा है। उनमें से बहुत सी लड़कियां बिना किसी साथी के घर से बाहर नहीं निकल सकती। यह कला उन्हें बाहर निकलकर एक पूर्णतः नई दुनिया का आलिंगन करने का अवसर प्रदान करती है, कोच कहते है।''

भूमिका कहती है कि जब दो वर्ष पूर्व उसका परिचय इस खेल से कराया गया, मुझे लग रहा था कि क्या मैं इसे कर पाऊँगी। सर ने हमें धैर्य के साथ सिखाया और नियमों को समझाया और हमें बताया कि कैसे अपना वजन संतुलित करना है। अब हम एक हफ्ते में तीन दिन अभ्यास करते है।

''दृष्टि-बधितों के साथ काम करना शुरुआत में मुश्किल हो सकता है, लेकिन जो प्रयास एवं मनोभाव वे मैदान में लाते है वह जबर्दस्त और संतोषजनक होता है,'' सिंह कहते है। ■

चलने-फिरने में सक्षम बनाना

PDG डॉ रवि अप्पाजी लाभार्थीयों के साथ।

खुशहालनगर कर्नाटक के कोडागु मंडल के मैसूर और मदिकेरी के बीच स्थित एक अद्भुत और शांत शहर है। इसका जुड़वां शहर बयलाकुप्पे सबसे बड़े तिब्बती बस्तियों में से एक है जहाँ बौद्ध नामड्रोलिंग मठ एक सैंडल ग्रोव के बीच स्थित है जिसे स्वर्ण मंदिर भी कहा जाता है।

खुशहालनगर के रोटरी क्लब, मंडल 3181, वर्ष 1975 से ही इन दो शहरों में मानवीय परियोजनाओं जैसे आस-पास की बस्तियों में चिकित्सा शिविर, पेयजल सुविधाएँ, शौचालयों का निर्माण करवाता रहा हैं और स्कूलों में आधारभूत संरचनाएँ उपलब्ध कराता रहा हैं।

हाल ही में, क्लब ने रोटरी क्लब कोयंबटूर मिडटाउन, मंडल 3201 के सहयोग से पीडीजी रवि अप्पाजी की उपस्थिति में शारीरिक रूप से विकलांग 50 लोगों के बीच कृत्रिम अंगों का वितरण किया। क्लब के सचिव प्रेमचंद कहते है, ''यह विगत छः वर्षों से हमारे क्लब द्वारा निरंतर संचालित की जाने वाली परियोजना हैं।'' एक अन्य कार्यक्रम के अंतर्गत रोटेरियन ने ₹65 लाख के एक वैश्विक अनुदान और यूएस के 22 क्लब और टीआरएफ की मदद से मदिकेरी में अश्विनी अस्पताल को आधुनिक चिकित्सा संयंत्र स्थापित किया। ■

एक स्वर्ण जयंती क्लब को सम्मानित करना

जयश्री

रोई अध्यक्ष बेरी रेसिन और आरआई निदेशक सी भास्कर चेन्नई संस्थान के कार्यक्रम दौरान रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ, मंडल 3232 के स्वर्ण जयंती कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर आरआईडीई भरत पांड्या मुख्य अतिथि थे और आरआई निदेशक ईन-सू मून भी उपस्थित थे।

पीडीजी जी ओलिवानन और अध्यक्ष वेंकटेश ने विगत 50 वर्षों के दौरान अपने क्लब की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को रेखांकित किया, जिसमें शहर के बाहरी क्षेत्र में स्थित नापालयम ग्राम का एक बेहतर विकास शामिल था। ओलिवानन ने कहा, ''हमने गाँव को मोतियाबिंद रहित कर दिया।''

अध्यक्ष रेसिन ने क्लब के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा, ''हम जानते हैं कि वहाँ लोगों को हमारी जरूरत है और हमारे रोटेरियन कमर कस कर तैयार हैं और कहते हैं, महाँ, हम यहाँ हैं और हम एक बदलाव लाने जा रहे हैं।फ़और मैं उन सभी लोगों की ओर से धन्यवाद देता हूँ जिनके जीवन को आपने स्पर्श किया और व्यापक बदलाव किया।'' निदेशक भास्कर ने क्लब से आग्रह किया कि ''कॉर्पोरेट के साथ मजबूत साझेदारी करें और विशाल परियोजनाएँ निष्पादित करें। आपके क्लब को आगामी 50 वर्षों तक सेवा-कार्य जारी रखना चाहिए और शताब्दी का उत्सव मनाना चाहिए।''

आरआईडीई पांड्या ने कहा, ''हम एक सुंदर जगत में रहते हैं, लेकिन जब हम समाचार पत्र खोलते हैं या टीवी का स्विच ऑन करते हैं, तो हम जो केवल भ्रष्टाचार, भुखमरी, दुर्व्यवहार और बलात्कार जैसी नकारात्मक ख़बरें पढ़ने को मिलती हैं। और मैं हमेशा सोचता हूँ कि रोटरी के माध्यम से निष्पादित की जाने वाली छोटी परियोजनाओं में वास्तव में क्या कोई बड़ा बदलाव किया जा सकता है। आप वास्तव में अंधेरे को दूर कर रहे हैं, उम्मीदों का दीपक जला रहे हैं और लोगों को सपने देखने का साहस दे रहे हैं।'' पंड्या ने दर्शकों से उन सभी अधिकारियों के कडी मेहनत को याद रखने का भी आग्रह किया जिन्होंने क्लब को इतने लंबे समय से सफलतापूर्वक संचालित करने में योगदान दिया है।

क्लब ने प्रकाशन के हिंदू समूह के अध्यक्ष एन राम को 'गोल्डन जयंती प्रतिष्ठित नागरिक पुरस्कार' देकर सम्मानित किया। राम ने पोलियो के सफल उन्मूलन और तन्मयता से इस कार्य को निष्पादित

रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन, एन रामु, द हिन्दू प्रकाशन के अध्यक्ष को प्रतिष्ठित नागरिक पुरस्कार प्रदान करते हुए। चित्र में (बाएं से) PDG जी ओलिवण्णन, रोटरी क्लब मद्रास नार्थ के अध्यक्ष एन वेंकटेश, RID सी भास्कर, RID इन सु-मुन और RIDE भरत पांड्या भी शामिल हैं।

जयश्री

साइकिल रैली में अध्यक्ष बेरी रेसिन, RIDE सी भास्कर, RIDE गण भरत पांड्या और कमल संघवी।

करने के लिए किए गए प्रयास के लिए रोटरी की सराहना की। उन्होंने कहा, ''किसी से बिना कोई समझौता किए बिना इस कोल्ड चेन को बनाए रखना और इसे ग्रामीण इलाकों में पहुँचाना - वास्तव में यह कार्य किसी अन्य देश से बेहतर रहा है।'' उन्होंने प्रिंट मीडिया पर डिजिटल मीडिया के प्रभाव और मीडिया द्वारा सामना की जाने वाली विभिन्न चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला। ''भ्रष्टाचार ने समाचार मीडिया और पत्रकारिता को भी प्रभावित किया है। जब तक इस क्षेत्र में कार्यरत्त लोगों इन चुनौतियों को पहचान नहीं लेते हैं, तब तक हम केवल एक-दूसरे पर दोषारोपण करते रहेंगे।''

यदपि, समाचार मीडिया में कार्य करने वाले अनेक लोगों का मानना हैं कि ज्यादातर विकासशील देशों की तुलना में भारत में प्रेस की स्वतंत्रता उच्च स्तर की है, तथापि वर्तमान परिदृश्य में, सोच की यह तस्वीर बहुत कम उज्ज्वल दिखाई देती है। ऐसा दो कारकों की वजह से था - कानूनों की अनुचित रूप से व्याख्या की गई और अक्सर उनका दुरुपयोग किया गया ताकि स्वतंत्र भाषण को समाप्त किया जा सके और समाज में असहिष्णुता की वृद्धि का दृश्य साफ-साफ दिखाई दें।

यह कहने के जरूरत नहीं है कि ''स्वतंत्रता सामाजिक जिम्मेदारी के साथ आती है और यह प्रेस और अन्य समाचार मीडिया पर भी लागू होती है जितना कि यह प्रत्येक नागरिक पर लागू होती है।'' क्लब ने अपने सदस्य सुरेश कृष्ण को 'सबसे मूल्यवान नागरिक पुरस्कार' देकर सम्मानित किया।

RCME के अध्यक्ष आर एम नारायणन, अध्यक्ष बेरी रेसिन, आउटरीच ग्लोबल के CSR प्रमुख प्रभु मट्टी और RID सी भास्कर कॉफी टेबल बुक के लॉन्च पर।

पुनर्निर्माण 25

रासिन ने रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट की '*Rebuild 25*' परियोजना भी शुरू किया। 25 सरकारी स्कूलों के पुनर्निर्माण के लिए प्रमुख आईटी कंपनी के सीएसआर विंग, कॉग्निजेंट आउटरीच, द्वारा वित्त पोषित इस 550,000 डॉलर की परियोजना के लिए क्लब निष्पादित करने वाला भागीदार है। क्लब के अध्यक्ष आर एम नारायणन कहते है, ''परियोजना के लिए ठेकेदारों का चयन, निष्पादन और गुणवत्ता नियंत्रण के लिए क्लब जम्मिेदार था। नागराजन के नेतृत्व में एक टीम, हमारे सदस्य और एक विशेषज्ञ परियोजना प्रबंधक कार्य को बेहतर तरीके से पूरा करने में समर्थ है।''

रासिन और भास्कर ने 25 स्कूलों में 8,000 छात्रों के लिए सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए क्लब के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर इस परियोजना के लिए एक कॉफी टेबल बुक जारी किया गया।

रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन द्वारा आयोजित एक साइकिल रैली में 3,000 रोटरेक्टरों और रोटेरियन शामिल हुए, और उन्होंने सड़क़ सुरक्षा के संदेश को फैलाया, और चेन्नई मेराकी द्वारा आयोजित एक अखिल महिला कार रैली को संस्थान के हिस्से के रूप में आरआई अध्यक्ष और निदेशक द्वारा ध्वज दिखाकर रवाना किया गया। इस रैली का उद्देश्य महिलाओं के बीच साक्षरता, महिलाओं के सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण और सड़क़ सुरक्षा के संदेश को प्रसारित करना था।■

कृत्रिम परिषद मंडल प्रतिनिधियों को CoL 2019 का अनुभव प्रदान करती है

किरन ज़ेहरा

CoL सत्र अध्यक्ष टी एन सुब्रमण्यन प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए।

ज़ोन 4,5 और 6ए के मंडल प्रतिनिधियों ने 2019 में इवेंसटन में आयोजित होने वाली विधान परिषद (CoL) का एक कृत्रिम सत्र में अनुभव लिया जो ज़ोन इंस्टिट्यूट का हिस्सा था। प्रशिक्षण के साथ, इस सत्र ने परिषद का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया और नए प्रतिनिधियों को विधान परिषद के पूर्व प्रतिनिधियों से परामर्श और बातचीत करने का अवसर प्रदान किया। पीडीजी टी एन सुब्रमण्यन, पीडीजी पी टी रामकुमार और रो ई से डिप्टी जनरल अधिवक्ता, मॉरीन निन्नेमन ने विस्तार में समझाया कि क्या करना है और क्या नहीं करना है और CoL में किस कार्य विधि के मुताबिक चलना है।

समय की पाबंदी से शुरुआत करते हुए, विधान परिषद में सार्जेंट सख्त है, ''आप अपने साथी के साथ अंतिम मिनट की कॉफ़ी पीने में समय नष्ट नहीं कर सकते, सुब्रमण्यम ने चेतावनी दी।'' मॉरीन ने बताया कि जब तक परिषद अध्यक्ष द्वारा छूट ना दी जाए, तब तक रोटरी द्वारा उनके परिषद के खर्चों के निधीयन के लिए विधान परिषद के प्रतिनिधियों का ज़ोन इंस्टिट्यूट में भाग लेना और नवीन ऑनलाइन प्रशिक्षण कोर्स को पूरा करना आवश्यक है। जिन प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण पूर्ण नहीं किया है वे भी परिषद में शामिल हो सकेंगे, मगर वे अपने खर्चों के स्वयं ही जिम्मेदार होंगे।

इस सत्र में प्रतिनिधियों ने प्रस्तावित विधान 2019, जिसकी एक-एक प्रति सभी भागीदारों को सौंपी गई थी, में मुद्रित भारतीय अधिनियमों की चर्चा, अभ्यास और समीक्षा की। मॉरीन ने ज़ोर दिया कि सभी प्रतिनिधियों को विधान परिषद में भाग लेने से पहले उस विधान को पढ़ना चाहिए और विधान परिषद में प्रयोग की जा सकने वाली योजनाएं तैयार कर लेनी चाहिए।

PDG गण जी वसीकरन और दीपक पुरोहित।

''CoL एप डाउनलोड करें, क्योंकि यह आपके एंट्री पास, लंच टोकन और अनुस्मारक के रूप में कार्य करेगी। एप के माध्यम से आपको सभी अधिसूचनाएं भेजी जाएंगी,'' उन्होंने कहा। नियमों पर आते हुए उन्होंने प्रतिनिधियों को याद दिलाया, ''आपको तीन बहुमूल्य मिनट दिए जाएँगे। आप जो भी कहे वह संक्षिप्त और तथात्मक होना चाहिए।'' लेकिन इन सबसे भी पहले, ''मंडल बैठकों या अन्य बैठकों में प्रस्तावित विधान की चर्चा करें और अपने मंडल के भीतर रोटेरियनों के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझें और सुनिश्चित करें कि आप रोई के निष्पक्ष विधायक के रूप में कार्य करते है।'' उन्होंने उनसे यह भी सुनिश्चित करने के

लिए कहा कि वे परिषद की संपूर्ण बैठक में भाग लें जो प्रस्तावों की संख्या के आधार पर, पांच दिनों तक सुबह 8.30 बजे से शाम 6 बजे तक मिलती है।

एक संवादात्मक दौर में, कार्य विधि के नियमों - कैसे एक प्रस्ताव को प्रस्तुत करना/वापस लेना, प्रस्ताव का संचालन कैसे करना, कौन से प्रस्ताव है जो बहस करने योग्य/संशोधित करने योग्य है, की चर्चा की गई। ''दो तरह के प्रस्ताव होते है: पहला अधिनियम, जो रोई या किसी क्लब के संविधान या उप नियमों में संशोधन करता है, और दूसरा प्रस्ताव, जो एक विचार व्यक्त करता है या रोई मंडल से सिफ़ारिश करता है,'' सुब्रमण्यन ने समझाया। बल्कि यदि आप किसी अधिनियम के 'समर्थन' या 'विरोध' में है, तब भी आपको किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बहस खत्म होने तक का इंतजार करना होगा। कई बार, बहस के बाद आपके विचार बदल सकते है क्योंकि आप अन्य प्रतिनिधियों की राय भी जान लेते है। जो एकदम उचित है, उन्होंने आगे कहा।

कार्ड के प्रयोग पर मॉरीन ने समझाया कि, ''हरा वाला प्रस्ताव के 'समर्थन' के लिए है, लाल वाला बताता है कि आप प्रस्ताव के 'विरोध' में है और आप इन कार्ड का इस्तेमाल केवल चर्चा चरण के दौरान करेंगे।'' पीले कार्ड का इस्तेमाल करने का अर्थ है कि आप ''किसी संशोधन को आगे ले जाना चाहते है या उसका इस्तेमाल जानकारी के बिंदु के रूप में करना चाहते है। प्रस्तावों से संबंधित अपनी शंकाओं को ध्यान में रखें और अध्यक्ष से निडर होकर उनके बारे में पूछे। पीले और नीले धारीदार कार्ड का उपयोग विशेषरूप से समापन के लिए किया जाता है। आप इसे दिखाएंगे और अध्यक्ष बीच में ही बहस खत्म कर देंगे। इसलिए, कार्ड को समझे बिना इनका उपयोग ना करें।''

पीडीजी रेखा शेट्टी, विधान परिषद 2019 के लिए मंडल 3232 की प्रतिनिधि ने कहा कि यह सीखने का एक शानदार अनुभव था और इससे चीज़ों को समझने में मदद मिली।''

2016 CoL के मुख्य अंशों पर भी चर्चा की गई।

विधान परिषद की महत्वपूर्ण भूमिका को समझाते हुए मॉरीन ने कहा, ''दशकों से, परिषद ने रोई नीति की लगभग सभी बारीकियों और सदस्यता, उपस्थिति नियमों एवं बकाया राशियों से जुड़ी हर जानकारी पर विचार किया है और बहस की है। हालाँकि प्रत्येक रोटेरियन इसके निर्णयों से हमेशा सहमत नहीं हो सकते, फिर भी यह परिषद बदलाव के लिए रोटरी की प्रमुख एजेंट है, जो जीवनशैलियों, प्राथमिकताओं, तकनीकों, और व्यापार में परिवर्तनों को दर्शाते हुये संस्थान को आज की तेजी से बदलती हुई दुनिया में अपनी प्रासंगिकता का आंकलन करने देती है।''■

जीवित अनुकरणीय व्यक्तियों की निर्धनता

जयश्री

चेन्नई संस्थान को संबोधित करते हुए प्रेरक वक्ता महात्रिया रा ने रो ई अध्यक्ष की थीम - *प्रेरणा बनें* - को एक नया परिप्रेक्ष्य दिया।

रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड्स के अध्यक्ष मंडल रविशंकर द्वारा ₹100 करोड़ के उदार योगदान का उल्लेख करते हुए, उन्होंने उपस्थित जन-समूह को संबोधित करते हुए कहा, ''आपको संख्याओं के दौड़ में बहने की जरूरत नहीं हैं। प्रेरणादायक संख्याएँ नहीं है। आप सोचते हैं कि उसके पास इतना पैसा था, इसलिए उसने ₹100 करोड़ दिया हैं, और ऐसा करने से वे एक महान इंसान नहीं बन जाते हैं। वास्तव में उनके ह्रदय में देने का भाव था और यही बात उन्हें महान बनाती है। रविशंकर के दान का उद्देश्य लोगों को अपनी सीमित साधनों के भीतर, जो भी संभव हो, देने के लिए प्रोत्साहित करना है।''

नेत्रों से मस्तिष्क तक जाने वाली नसों की संख्या कान और मस्तिष्क को जोड़ने वालों की तुलना में काफी अधिक है। ''संसार में सबसे बडी निर्धनता जीवित अनुकरणीय व्यक्तियों की निर्धनता है। हम अभी भी लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए महात्मा गाँधी, ईसा मसीह या मदर टेरेसा का उदाहरण क्यों देते हैं? आखिर लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए ऐतिहासिक संदर्भों का उल्लेख क्यों किया जाना चाहिए?''

उन्होंने आगे कहा, ''अगर हम स्वयं के प्रति सच्चे हैं तो हम में से प्रत्येक एक अनुकरणीय व्यक्ति बन सकते है। आपको अवश्य ही जानना चाहिए कि रोटरी ने आपको विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलने-जुलने का अवसर देकर सबसे बडा उपहार दिया है। यदि हमें रंग, जाति या राष्ट्रीयता से हटकर मएक दुनिया, एक मानवताफ का निर्माण करना है, तो रोटरी ही सच्चा रास्ता है और इसका केवल एक उद्देश्य है - मानवता की सेवा करना।''

सर्वांगीण जीवन के लिए मार्ग की अनुशंसा करते हुए, रा ने अपने जीवन के पाँच आयामों - स्वास्थ्य, धन, प्रेम, आनंद और आध्यात्मिकता में संतुलन प्राप्त करने पर जोर दिया। ''इतना हासिल करने के बावजूद, हम सभी में अपूर्णता का भाव मौजूद है। हम नहीं जानते कि हम क्या खोज रहे हैं, लेकिन हम निरंतर खोज रहे हैं।'' प्रतिनिधियों से संतुलित जीवन जीने का आग्रह करते हुए, उन्होंने कहा: ''अपने शरीर को आराम की परिधि से आगे बढ़ते हुए थोडा और अधिक बढ़ें। अपने आहार का मूल्यांकन करें - क्या यह सुखद या स्वस्थ है। सीखना और स्वयं को विकसित करने की प्रक्रिया को कभी नहीं रोकें।'' उन्होंने कहा, ''इन सभी को करके आप अपने आस-पास के लोगों को सर्वांगीण प्रेरणा देने में सफल होंगे।''

श्रीलंका के वित्त और संचार मीडिया मंत्री ईरान विक्रमरत्ने ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि सरकार और रोटरी स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए समन्वय करते हुए कैसे काम कर सकते हैं। उन्होंने पीआरआईपी के आर रविंद्रन की प्रशंसा की जो उस समय मंडल 3220 (श्रीलंका) के डीजी थे, और जिन्होंने एलटीटीई के साथ युद्धविराम की वार्ता कर द्वीप राष्ट्र के हिंसा-ग्रस्त क्षेत्रों में पोलियो टीकाकरण जारी रखने में योगदान किया था। 'जो असंभव दिखाई दे रहा था, उसे रविंद्रन ने संभव कर दिखाया। उन्होंने कहा, मसंघर्ष के बारे में चिंता नहीं करें। हम इसका ख्याल रखेंगे।' उस अवधि के दौरान सरकार के पास उन क्षेत्रों में पहुँच या नियंत्रण नहीं था।''

श्रीलंका में रोटरी का योगदान ''केवल अव्यवहारिक परोपकार नहीं था,'' उन्होंने कहा और वर्ष 2004 में सुनामी के दौरान रोटेरियन की तेज कार्यवाही और उसके बाद निर्मित स्कूलों और प्रसूति अस्पतालों का उल्लेख किया।

उन्होंने संपूर्ण विश्व में सरकारों के पूरक के रूप में कार्य करने के लिए रोटेरियन को दो सुझाव दिया; वृद्धों को सहयोग उपलब्ध कराना, और पर्यावरण की देखभाल करना। वर्ष 2014 तक विश्व में औसतन 40 पर्यावरण संकटों का सामना करना पडा, यह संख्या बढ़कर 300-400 प्राकृतिक आपदाएँ हो गई। मंत्री ने कहा, ''यह नई सामान्य स्थिति है।'' सुनामी, सूखा, बाढ़ - इन सभी में धन और जन की हानि होती है। उन्होंने कहा, ''हमें जल प्रबंधन, मिट्टी संरक्षण, कृषि आदि कार्यों के लिए आपके सहयोग की जरूरत है।''

सत्र की अध्यक्षता करते हुए, पीआरआईडी अशोक महाजन ने कहा, ''रोटरी की शक्ति यह है कि यह किसी सीमा को नहीं मानती है और मानव जाति की सेवा के लिए रोटेरियन कहीं भी जाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।''■

रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन और महात्रिया रा।

रशीद भगत

Rotary News Subscription Remittances

You can pay the
Rotary News / Rotary Samachar
subscription online

Our Bank details:

Bank : HDFC
Bank SB Account

Branch : Egmore, Chennai

A/c Name : Rotary News Trust

A/c No. : 50100213133460

IFSC Code : HDFC0003820

E mail us following details:

Name of Club

President/Secretary's name

Amount/Date of transfer/UTR Number

For physical payment by cheque or cash in bank, write **Club Name only** without prefixing "Rotary club of". Eg. Rotary Club of Delhi Central should be written: Delhi Central.

RI Exchange Rate - December 2018

$1 = ₹70

Rotary at a glance

Rotarians	: 1,224,591
Clubs	: 35,911
Districts	: 538
*Rotaractors	: 217,189
Club	: 9,443
*Interactors	: 539,074
Clubs	: 23,438
*RCC members	: 230,322
RCC	: 10,037

*Estimated

As of Nov. 20, 2018

Membership Summary

As on November 1, 2018

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	114	4,782	228	37	232	189
2982	69	3,135	154	64	113	52
3000	129	5,253	469	229	676	199
3011	81	3,486	747	46	115	25
3012	89	3,681	802	46	130	56
3020	78	4,088	234	54	466	349
3030	90	4,875	591	74	311	165
3040	97	2,168	238	33	124	140
3053	72	3,137	564	9	56	95
3054	130	6,104	1,049	73	321	471
3060	103	4,355	546	59	130	141
3070	103	3,107	320	44	162	57
3080	79	3,325	263	67	219	108
3090	77	2,006	52	35	37	122
3100	76	1,836	108	9	75	146
3110	116	3,937	347	22	49	104
3120	76	3,308	411	25	62	52
3131	130	5,479	1,209	85	303	90
3132	99	3,778	368	38	214	150
3141	93	5,520	1,296	104	260	84
3142	94	3,464	634	68	204	65
3150	98	3,620	352	56	236	109
3160	71	2,431	130	19	48	81
3170	127	5,680	599	55	335	164
3181	75	3,356	287	36	224	109
3182	84	3,292	237	23	275	95
3190	131	5,112	683	117	364	50
3201	142	5,347	344	91	134	49
3202	130	5,002	257	73	437	46
3211	139	4,487	295	6	89	124
3212	99	4,198	379	92	280	142
3231	78	3,323	272	46	214	245
3232	113	4,677	717	107	329	80
3240	89	3,084	366	37	157	163
3250	101	3,975	703	48	210	176
3261	72	2,626	348	3	102	43
3262	90	3,457	433	37	74	75
3291	148	3,784	714	82	134	600
India Total	**3,782**	**148,275**	**17,746**	**2,149**	**7,901**	**5,211**
3220	68	1,946	273	75	202	72
3271	84	1,479	271	49	17	13
3272	163	2,942	418	46	37	38
3281	206	5,683	828	217	93	188
3282	146	4,151	452	108	48	42
3292	119	4,559	684	120	125	111
S Asia Total	**4,568**	**169,035**	**20,672**	**2,764**	**8,423**	**5,675**

Source: RI South Asia Office

Rotary Institute 2018

चेन्नई इंस्टीट्यूट में जीवनसंगिनियों की ताकत

किरण ज़ेहरा

चेन्नई इंस्टीट्यूट में, नवनिर्वाचित गवर्नरों की पत्नियों ने रोटरी में उनके पतियों की प्रगति का समर्थन करने की बारीकियां सीखी। पत्नियों को संबोधित करते हुए उषा साबू ने 1976 में डीजीएन के रूप में उनके अनुभव को साझा किया, जब वह फ्लोरिडा में उनकी पहली अंतर्राष्ट्रीय सभा में शामिल हुई थी, ''हमें कोई जानकारी नहीं थी कि वहाँ क्या करना है। एक संकोची भारतीय गृहिणी होने के नाते, मैं दुनिया भर से आए इतने सारे लोगों को एक दूसरे से गले मिलते एवं चूमते देख चकित थी। जब मुझे एक पूर्णतः अजनबी द्वारा गाल पर चूमा गया, तब मेरा रोटरी की स्नेही सभ्यता से परिचय होना बाकी था! पर आप खुशकिस्मत है कि आपके पास एक प्रशिक्षण कार्यक्रम है और आप सीख सकती हैं।''

सेवा पर प्रकाश डालते हुये उन्होंने आगे कहा कि अक्टूबर 1998 में जब वह अपने पति PRIP राजा साबू के साथ उनके पहले चिकित्सीय मिशन पर यूगांडा गई, तो ''मेरे लिए जीवन की दोबारा शुरुआत हुई थी। मैं मिशन में केवल एक स्वयंसेवी थी। पर मैंने एक माँ - हॉस्पिटल में अपनी बारी का इंतज़ार करने के दौरान रोते हुए एक बच्चे को चुप कराकर, एक नर्स - डॉक्टरों की सहायता करके, और कॉफी देकर एक वेटर की भूमिकाएँ अदा की। यहाँ आत्म-महिमागान की कोई जगह नहीं है। आपको रोटरी के अभिप्राय हेतु कार्य करना होगा। तालियों की गड़गड़ाहट एवं बड़ी मुस्कुराहटों के बीच उन्होंने पत्नियों से पूछा: क्या एक रोटरी पत्नी हुये बिना मैं यह सब हासिल कर सकती थी? इसलिए प्रिय जीवनसंगिनियों, स्वयं को रोटरी के लिए तैयार कीजिये। स्वयं को परिवर्तित कीजिये।''

बाएँ से : अफ़जलुन्नीसा नाज़र, सोनल संघवी, माधवी पांड्या और माला भास्कर।

निर्वाचित गवर्नरों की पत्नियाँ।

आप शक्ति है

चेन्नई के वीएचएस डायलिसिस केंद्र का जिक्र करते हुए, झठखऊपीटी प्रभाकर की पत्नी नलिनी प्रभाकर ने कहा कि व्यक्तिगत तौर पर कोई भी एक या कुछ मुफ्त डायलिसिस की लागत को प्रायोजित कर सकता है। ''परंतु रोटरी के साथ हम एक डायलिसिस इकाई स्थापित कर सकते है और प्रति दिन गरीबों को 4,000 मुफ्त डायलिसिस प्रदान कर सकते है। रोटरी के माध्यम से सेवा की शक्ति बढ़ जाती है और बड़े पैमाने पर समुदाय लाभान्वित होता है।'' उन्होंने बर्था बेंज़, ऑटोमोबाइल आविष्कारक कार्ल बेंज़ की पत्नी एवं व्यापारिक साझेदार, का एक रोचक वीडियो साझा किया, जिनके पति को उनके पहले ऑटोमोबाइल आविष्कार में कोई यकीन एवं विश्वास नहीं था।

उनके पति को यह साबित करने का निश्चय लेकर कि उनका आविष्कार, जिसमें उन दोनों ने निवेश किया था एक वित्तीय सफलता होगा, उन्होंने 1888 में उसी गाड़ी से 106 कि मी का सफर तय करते हुये पहली क्षेत्रपार ऑटोमोबाइल यात्रा की। उन्होंने ना केवल दुनियाभर का ध्यान बेंज़ पेटेंट-मोटरवैगन की ओर आकर्षित किया, बल्कि उन्होंने उनके पति के आत्मविश्वास को भी दृढ़ किया कि उनके आविष्कार का एक भविष्य है। ''बर्था ने केवल एक कार ही नहीं चलाई... उन्होंने एक उद्योग चलाया था। उसी प्रकार, आपके पति मण्डल का नेतृत्व कर सकते है पर आप उनकी शक्ति है और वह आप ही है जो आपके मण्डल में सेवा करेंगी।''

माला भास्कर ने पत्नियों को याद कराया कि ''आपका व्यस्त समय अब शुरू होता है। अग्रसक्रिय रूप से भाग लीजिये और दुनिया भर की एवं अपने मण्डल के भीतर की रोटरी जीवनसंगिनियों की प्रेरणा बनने का कोई भी मौका मत चूकिए। आप सभी को आपके वर्ष के लिए मेरी शुभकामनाएँ।'' उसके बाद पत्नियों को पूरा दिन विचार-विमर्श एवं गतिविधियों में व्यस्त रखा गया ताकि वे अध्यक्षीय थीम एवं प्राथमिकताओं, सेवा में उनकी भूमिका के साथ-साथ इस बात को समझ सकें कि कैसे वे अंतर्राष्ट्रीय सभा में सीखे गए सबक़ों से मण्डल सम्मेलनों को अधिक अर्थपूर्ण बना सकती है।

सम्मेलन में एवं उसके बाद

''अंतर्राष्ट्रीय सभा का उद्देश्य अपने पति की सहायता हेतु ज्ञान एवं कौशलों को प्रदान करना एवं आपको प्रभावी एवं कार्यसाधक तत्परता सिखाना है,'' मंडल 3232 के PDG जे बी कामदार की पत्नी, मर्लिन कामदार ने कहा। *असेंबली टू एक्शन* सत्र के माध्यम से पत्नियों को मार्गदर्शित करते हुये, उन्होंने उन सभी से उनके द्वारा सीखी गई सीख को मण्डल के क्लबों की प्रथम महिलाओं से साझा करने के लिए कहा। ''आपके कहने से वे उतना अधिक नहीं सीखते जितना वे आपके द्वारा किए गए कामों से सीखते है। वे आपको देखते है। इसलिए, उपदेश मत दीजिये। अपने कार्यों को उन्हें सिखाने दीजिये।''

सोनल संघवी और डॉक्टर माधवी पण्ड्या, RIDE कमल संघवी और RIDE भारत पांड्या की जीवनसाथियों, ने अंतर्राष्ट्रीय सभा में जीवनसाथियों के कार्यक्रम हेतु तैयारी एवं सहभागिता पर विस्तारपूर्वक बात की। ''यह एक ज़िंदगी बदल देने वाला अनुभव होगा,'' सोनल ने कहा। माधवी ने पत्नियों को याद दिलाया कि ''सभी सत्रों में उपस्थिति अनिवार्य है और असेंबली एप डाउनलोड करना सुनिश्चित करें।''

अंतर्राष्ट्रीय सभा में पत्नियों का काउंटर सबसे आकर्षक विशेषता है। ''अक्सर हमारे ज़ोनों के काउंटर हमेशा भरे हुए होते है क्योंकि हमारा रंगबिरंगा प्रदर्शन होता है और हम दर्शकों को किसी गतिविधि में व्यस्त रखते है या हमारे पारंपरिक नृत्यों में से एक का प्रदर्शन करते है। इसलिए कृपया वर्तमान डीजीयों की पत्नियों से चर्चा कीजिए और विचार प्राप्त कीजिए,'' सोनल ने आगे कहा।

पीडीजी रवि चौधरी की पत्नी रितु चौधरी; पीडीजी जी ओलिवन्नन की पत्नी नलिनी ओलिवन्नन और पीडीजी प्रफुल शर्मा की पत्नी विद्योत्तम शर्मा अन्य विशेषज्ञ थी जिन्होंने साथी सदस्यों के लिए शुल्कों में रियायत से लेकर रोटरी में इनरव्हील सदस्यों के लिए दोहरी सदस्यता एवं सम्प्रेषण कौशलों को बढ़ाने तक विभिन्न विषयों पर चर्चाएँ की।

चित्र : के विश्वनाथन

Rotary Institute 2018

पाकिस्तान में पोलियो टीकाकरण के प्रतिरोध में भारी कमी

रशीदा भगत

जहाँ रोटरी विश्व, अफगानिस्तान और पाकिस्तान में पोलियो के अंतिम मामलों की समाप्ती पर नज़रें टिकाये हुए है वहीं चेन्नई इंस्टिट्यूट में आए पाकिस्तान नेशनल पोलियोप्लस कमेटी के चेयर डीजी अज़ीज़ मेमन के पास साझा करने के लिए कुछ अच्छी खबरें थीं। ''आइए पाकिस्तान के (FATA-संघीय प्रशासित जनजातीय क्षेत्र) FATA प्रांत पर नज़र डालें, जो पर्वतीय क्षेत्र हैं, यहीं तालिबान का गढ़ भी है, किसी समय पाकिस्तान में पोलियो के 306 में से 182 मामले तो अकेले फाटा में ही थे। लेकिन पिछले दो वर्षों में, FATA से पोलियो का एक भी मामला सामने नहीं आया है।''

उन्होंने पाकिस्तान और अफगानिस्तान में पोलियो अपडेट पर एक सत्र को संबोधित करते हुए कहा, अफगानिस्तान और पाकिस्तान दोनों की बात करें तो, ''हम 2013-14 में 306 के मुक़ाबले सिर्फ 19 मामलों पर पहुँच गए हैं (दुर्भाग्य से कल शाम अफगानिस्तान से एक मामला और दर्ज हुआ है) - 4 पाकिस्तान और 15 अफगानिस्तान से।''

वहां की बड़ी चुनौतियों में से एक था, कराची, 23 मिलियन लोगों का शहर, जिसमें काफी तादाद में गंदी बस्तीयां, चारों तरफ गंदगी के ढेर और स्वच्छ पेयजल की कमी थी। ''हमने यहां भी अच्छा काम किया और पिछले 20 महीनों में कराची से पोलियो का कोई मामला दर्ज़ नहीं हुआ है।''

यहाँ तक कि पिछले साल भी, पाकिस्तान में आठ मामले पाए गए थे, लेकिन 2018 में ये चार रह गए, वहीं अफगानिस्तान में 15 मामलों की सूचना मिली है, लेकिन अच्छी खबर यह है कि ''नाइजीरिया में दो साल से कोई नया मामला नहीं आया हैं और वहां बहुत जल्द ही काम पूरा हो जाना चाहिए क्योंकि नियमित टीकाकरण में नाइजीरिया ने काफी उन्नति की है।''

मेमन ने वापिस पाकिस्तान पर कहा कि एक NID में, सामाजिक कार्यकर्ताओं और टीका लगाने वालों की मदद से, 37.7 मिलियन बच्चों को टीका लगाया जाता है। ''इससे पहले पोलियो टीका लगाने वालों को प्रतिदिन ₹250 का भुगतान किया जाता था; यह कार्य अब उसी समुदाय के स्थानीय स्वयंसेवकों को दे दिया गया है, जिन्हें अब ₹15,000 का मासिक वेतन मिलता है। इससे काफी असर पड़ा है और अब पाकिस्तान के सभी उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में कार्यरत स्वयंसेवक स्थानीय समुदाय के हैं।''

रोटरी-सरकार भागीदारी

पाकिस्तानी रोटेरियन अपने पोलियो उन्मूलन अभियान में सरकार के साथ कंधे से कन्धा मिला कर काम कर रहे हैं। पाकिस्तान के प्रधान मंत्री इमरान खान की 18 महीने पहले की एक तस्वीर दिखाते हुए, जिसमें वे पाकिस्तान के खैबर पख्तुनख्वा क्षेत्र में, जहां उस वक़्त उनकी पार्टी सत्ता में थी, बच्चे को पोलियो की खुराक पिला रहे हैं, मेमन ने कहा, ''हम आज भी उनसे संपर्क में हैं; हमने नए राजनीतिक नेतृत्व के साथ बातचीत शुरू कर दी है और मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि वे पूरी तरह से तैयार हैं और हम ने ठान लिया है कि पाकिस्तान से पोलियो को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाएगा।''

''PRID अशोक महाजन के मार्गदर्शन में हमने एक उलेमा समिति बनाई है जो नियमित रूप से

बाएं से : TRF ट्रस्टी माइक वेब, पाकिस्तान नेशनल पोलियो प्लस के अध्यक्ष अज़ीज़ मेमन, PRID पांडुरंगा सेट्टी, INPPC अध्यक्ष दीपक कपूर।

मिलती है, हम उनके लिए कार्यशालाएं करते हैं ताकि वे आगे समाज को बता सकें, मैं आपको बता सकता हूं कि उनके बच्चों के टीकाकरण के विरोध में उठ रहे स्वरों में ज़बरदस्त कमी आई है और जहां विरोध के स्वर उठ रहे हैं वहां मना करने का आधार कुछ और है कि हमारे यहां पीने का पानी नहीं है, हमारे पास बिजली नहीं है, हर जगह गंदगी ही गंदगी है, हम उस क्षेत्र में भी मदद करने की कोशिश करते हैं। लेकिन उलेमा समिति के कार्य को धन्यवाद, उनके काम के बाद, लोग अब पहले की तरह इनकार नहीं करते हैं।''

पाक-अफ़गान सीमा पर बच्चों को एक रोटरी पोलियो पारगमन पोस्ट पर टीका देने के बाद।

कोक के साथ भागीदारी

रोटरी की कॉर्पोरेट कम्पनियों के साथ की गई साझेदारियों में, कोका कोला के साथ की गई साझेदारी बहुत कामयाब रही है, जिसने 20,000 परिवारों को शुद्ध पेयजल के लिए फ़िल्टर प्लान्ट लगाए हैं। ''इसने तो कमाल कर दिया है, पिछले संयंत्र के उद्घाटन के लिए भेजी प्रेस विज्ञप्ति को 32 समाचार पत्रों ने इस शीर्षक के साथ छापा था 'रोटरी और कोक की साझेदारी पीने का पानी मुहैया कराती है।' यह रोटरी की सार्वजनिक छवि बढ़ाने में भी मदद कर रहा है।''

मेमन ने कहा कि पाक-अफगान सीमा पर जहां सभी पारगमन स्थल (ट्रांजिट पॉइंट्स) अत्यंत दुर्गम हैं, इन पॉइंट्स पर जहां जहां बसों की जांच के लिए सेना या पुलिस की चौकी है वहां वहां ''हमने भी पोलियो टीकाकरण के लिए रोटरी ट्रांजिट पोस्ट बना दी है। पिछले साल हमने एक स्वतंत्र संस्था द्वारा आकलन करवाया था और पाया कि रोटरी द्वारा बनाई गई इन रोटरी ट्रांजिट पोस्ट के माध्यम से 3.5 मिलियन बच्चों को OPV पोलियो की खुराक दी गई थी।''

अफगानिस्तान में हमें पोलियो मामलों की सूचना कंधार जैसे क्षेत्रों से मिली थी जहां सुरक्षा एक बहुत बड़ी समस्या थी, और पिछले सात महीने से एक सीमांत गलियारे में तो हम किसी बच्चे को पोलियो की एक बूंद भी नहीं पिला सके। हालिया मामले की सूचना भी कंधार से ही मिली है, और कुल 10 मामले इस अकेले कंधार से ही मिले हैं।

उन्होंने कहा ''जब भी अफगान की सीमा से कोई मामला दर्ज होता है तो हमारे लिए खतरे की घंटी बज जाती है क्योंकि 2,450 किलोमीटर तक हमारी सीमा अफगानिस्तान सीमा के साथ लगी हुई है, जिसमें कई सुराख हैं और जिनसे अवैध रूप से आना जाना लगा रहता है, इसलिए एक देश से दूसरे देश जा रहे प्रत्येक बच्चे तक पहुँच पाना बहुत मुश्किल काम है।''

अंत में मेमन ने यह कहा कि पाकिस्तान में अब तक 187 टीका लगाने वालों को जान से मार दिया गया है, आखिरी दफा जनवरी 2018 में। ''क्वेटा के बाहर, सकिना (40) और उनकी बेटी (15) को गोली मार दी गई और तुरंत उनकी मृत्यु हो गई। वह अत्यंत गरीब परिवार से थी, उसका पति टैक्सी चालक है, और पीछे पांच बच्चों को छोड़ गई है, सबसे छोटा सिर्फ 9 महीने का है। हमने तुरंत ₹5,000 का पहला चेक दिया, बाद में अन्य दान दाताओं की मदद से हमने इस परिवार के लिए घर बनवा दिया।''

उन्होंने कहा कि PRIP के आर रविंद्रन ने अध्यक्ष काल के दौरान पाकिस्तान का दौरा किया था और सुझाव दिया था कि एक बार रोटरी में पोलियो का काम ख़त्म होने के साथ इन टीका करने वालों को भुला दिया जाएगा, इस के लिए कुछ ठोस किया जाना चाहिए। इसलिए इन की भलाई के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र में रोटरी पोलियोप्लस मेमोरियल के नाम से पांच छात्रवृत्तियां दी जाएंगी।

समय की कमी के कारण सिर्फ 10 मिनट मिलने पर INPPC चेयर दीपक कपूर ने अपने संबोधन में आश्चर्य व्यक्त किया कि वह निराशा, ''उपलब्धियां और सफलता के तीन दशक के संघर्ष की कहानी इतने कम समय में कैसे समेटेंगे।'' लेकिन रोटेरियनों और अन्य लोगों द्वारा किए गए कार्यों पर पानी फेरने में मीडिया को 10 मिनट से भी कम समय लगेगा, जो भारत में पोलियो की वापसी की गलत खबर फैला सकता है जैसा कि अक्टूबर की शुरुआत में हुआ था।

उन्होंने श्रोताओं को विचार दे कर वक्तव्य समाप्त किया: ''हर 10 मिनट में, राजश्री बिड़ला 1,700 रुपये से अधिक का योगदान देती है, साल दर साल दे रही हैं और देती रहेंगी जब तक उनका योगदान 12 मिलियन डॉलर से अधिक नहीं हो जाता।''

चित्र: रशीदा भगत

पोलियो-मुक्त संसार के लिए

टीम रोटरी न्यूज़

पाकिस्तान और अफगानिस्तान को छोड़कर, संपूर्ण विश्व के पोलियो-मुक्त होने के बावजूद, रोटेरियन लोगों से अनुरोध करते रहते हैं कि उन्हें अपने बच्चों के लिए इस भयानक विषाणु से बचाने के लिए टीकाकरण को जारी रखना चाहिए। यदपि मार्च 2014 से, भारत आधिकारिक रूप से पोलियो-मुक्त है, तथापि हमारे पड़ोसी देशों में विषाणुओं के मौजूद होने के कारण अभी भी गुप्त होने हमारे बच्चों को इससे संक्रमित होने का जोखिम बना हुआ है। हमारे रोटरी नेता जोर देकर कहते हैं कि विषाणुओं के लिए कोई बॉर्डर नहीं होता हैं और यह उन देशों से आने वाले पोलियो प्रभावित व्यक्तियों के माध्यम से फैल सकता है।

24 अक्टूबर, जिसे विश्व पोलियो दिवस के रूप में मनाया जाता है, जोनास साल्क के जन्मदिन के उपलक्ष्य में आयोजित किय्या जाता है जिन्होंने बच्चों को पोलियो से बचाने के लिए इसका टीका विकसित किया था। इस दिन, अनेक क्लब रैलियों और कार्यक्रमों के माध्यम से पोलियों के विरुद्ध जन-जागरूकता का निर्माण करने, लोगों से एनआईडी पर अपने बच्चों का टीकाकरण कराने और अपने आसपास के स्थानों को साफ-सुथरा रखने का आग्रह करते हैं।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्र मों की कुछ झलकियाँ इस प्रकार हैं:

मंडल 3011

चेचक, रूबेला और पोलियो के बारे में लोगों के मध्य जागरूकता फैलाने के लिए एक कार रैली का आयोजन संयुक्त रूप से INPPC, रो ई मंडलों 3011, 3012 और इनर व्हील मंडल 301 द्वारा किया गया। INPPC के अध्यक्ष दीपक कपूर और डीजी विनय भाटिया ने

दक्षिणावर्त : कोलकाता में एक कार रैली में महिला प्रतिभागियाँ; मुंबई में एक रैली में अशोक महाजन; दिल्ली में एक रैली में INPPC अध्यक्ष दीपक कपूर।

विभिन्न स्थानों पर रैली को ध्वज दिखाकर रवाना किया। RIPN सुशील गुप्ता और RIDE सी भास्कर ने रैली की समाप्ति पर एक विशाल सभा को संबोधित किया। इसके अतिरिक्त डब्ल्यूएचओ और यूनिसेफ के अधिकारियों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

मंडल 3141

PRID अशोक महाजन ने मुलुंड, मुंबई में एक कार रैली को ध्वज दिखाकर रवाना किया, जिसमें 125 रोटेरियन और अनेक रोटेरेक्टरों ने भाग लिया।

मंडल 3291

RIPN सुशील गुप्ता और विनीता जो एक अभिनन्दन समारोह में शामिल होने के लिए कोलकाता में थे, ने रोटरी सदन से एक कार रैली को ध्वज दिखाकर रवाना किया। कार्यक्र म में 72 सुंदर तरीके से सुसज्जित कारों के साथ 26 क्लबों के लगभग 300 प्रतिभागियों ने कार्यक्र म के लिए पंजीकरण कराया। पीआरआईडी शेखर मेहता, डीजी मुकुल सिन्हा, पीडीजी देबाशिष मित्रा, रवि सहगल और रमेश अग्रवाल (मंडल 3011) भी मौजूद थे। रैली का आयोजन रोटरी क्लब बेलूर, कलकत्ता, कलकत्ता सेंट्रल और कलकत्ता मेफेयर द्वारा किया गया था। ■

लेह का नरोपा उत्सव

प्रीती वर्मा लाल

समुद्र तल से 11,562 फीट ऊँचाई पर, फेफड़े साँस लेने के लिए हाँफने लगते है। इन्हें बहुत अधिक मात्रा में ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। ना कि निर्देशों की कर्कश आवाज़ों की। लेकिन लेह के कुशोक बाकुला रिम्पोचे एयरपोर्ट पर, कैरोसल पर बैग के आने से पूर्व चेतावनियाँ आती है। कम से कम 24 घंटे आराम करो। नज़ारे देखने के लिए बाहर मत जाओ। दिन में मत सो। आप भटक सकते है। यदि आपकी नाक से खून बह रहा हो, सिरदर्द या उल्टी जैसा महसूस हो रहा हो, तो डॉक्टर को दिखाएं। शराब और कैफीन से दूर रहे।

मैं अपने दिल में भक्ति लिए 5-दिवसीय नरोपा उत्सव में शामिल होने के लिए दुनिया के 22वें सबसे ऊँचे एयरपोर्ट पर पहुँच चुकी थी। लेकिन वह खलबली थी जिससे मेरी सबसे पहले मुलाक़ात हुई। क्लांत यात्री इस बात पर बहस कर रहे थे कि क्या करना है और क्या नहीं करना है, धड़ल्ले से अपने खीसे में रखी दवाइयों के नाम बोले जा रहे थे - एक व्यक्ति ने ठहाका लगाकर हँसते हुए स्वीकार किया कि वह पूरा ङ्कदवाखानाफ अपने साथ लेकर चल रहा है। आप नहीं जानते... खउए। आपातकालीन मामलों में। मैंने उसे घबराते हुए एक संक्षेपण कहते सुना, उसने अपना सामान उठाया और ठन्डे रेगिस्तान में तेज़ी में निकल पड़ा।

मेरा दिमाग 1,000 साल पीछे चला गया। नहीं, मैं दिशाभ्रमित नहीं हुई थी। मैं एक छोटे लड़के नरोपा (1016-1041) के बारे में सोच रही थी जो बाद में नालंदा विश्वविद्यालय के उत्तरी द्वार का रक्षक बना, ज्ञान अर्जित किया और उसने छह योगों को संरचित किया जो अब वज्रयान बौद्ध धर्म का अभिन्न अंग है। वज्रयान के 84 महासिद्धों में से एक में माना जाता है कि उस दिन जब नरोपा ने ज्ञान प्राप्त किया तो डाकिनी ने नरोपा को हड्डियों के छह आभूषण उपहार में दिए और आकाश में उड़ गई।

यह हड्डियों के छह अवशेष थे जिसने मुझे लेह के 2018 नरोपा उत्सव में शामिल होने के लिए आकर्षित किया। हेमिस मठ को जाने वाली सड़क गड्ढों से भरी हुई थी, वहाँ चिनार के लम्बे-लम्बे वृक्ष थे और वह इलाका उजाड़ था। गुप्त रूप से सेना के कई जवान मौजूद थे, उतनी ही रॉयल एनफ़ील्ड्स और लाल वस्त्रधारी सन्यासी थे। रास्ते में रेंचो का स्कूल पड़ा (जो हिंदी फिल्म 3 इडियट्स में दिखाया गया था) और कैलाश खैर, सोनू निगम और स्वरांश मिश्रा के चेहरों के साथ छपे उत्सव के असंख्य पोस्टर चिपके थे। उन परिचित चेहरों, प्राचीन मठों, गड़गड़ाहट के साथ बहती सिन्धु नदी, हलचल भरे गाँव से

हेमिस मठ।

नरोपा त्योहार में एक पारंपरिक नृत्य।

गुजरकर मैं तेजी से 17वीं शताब्दी के हेमिस की ओर चली गई।

त्यौहार, जिसे अक्सर ''हिमालय का कुंभ'' कहा जाता है, के मुख्य स्थल पर भीड़ चारों तरफ यहाँ-वहाँ भटक रही थी। लेकिन यह बड़ा नरोपा नहीं था जो हर 12 साल में एक बार आता है। यह पहली बार था, जब इस उत्सव ने 12 वर्ष के नियम को तोड़कर 2016 के विशाल उत्सव के दो साल बाद ही दोबारा आयोजन कर लिया।

लाल कालीन पर बैठकर मैंने अवशेषों का इंतजार किया जिनमें पाजेब, चूड़ियाँ, मुकुट, कान की बालियाँ, हार और सेरल्खा शामिल है। भक्तगण ऐसा मानते है कि इन आभूषणों के दर्शन मात्र से ही इतना आशीर्वाद प्राप्त होता है कि तीन निचले लोक - पशु, भूखे भूत, और नरक - के दरवाजे बंद हो जाते है। मैं मोक्ष या निचले लोकों के दरवाजे बंद करने के लिए इन आभूषणों को नहीं देख रही थी। मैं वहाँ नरोपा से किसी भी चीज़ के लिए मनुहार किये बिना बैठी थी। हाँ पर पूरी दुनिया के लिए आशीर्वाद जरूर चाहा।

जब गेंदे के फूल के रंग की साटन छतरी के साथ पालकी पास आई और जब झांझ-मंजीरों की आवाज उनके चरम स्तर पर पहुँच गई, तो मैं वहाँ भगदड़ में फंस गई। इन्सानों के एक समुंदर में। युवा सन्यासी अपने लबों पर प्रार्थना कहते हुये खड़े रहे। डोल्चे एंड गब्बाना के नकली सनग्लासेस पहना हुआ एक आदमी प्रार्थना चक्र को हाथों में लिए धीरे-धीरे चल रहा था। गुलाबी ऊन के वस्त्र पहने एक लड़की भागकर गई और पालकी के दिखने पर उत्सुकतापूर्वक चिल्लाने लगी। साधुगण दृढ़तापूर्वक वहाँ इस मान्यता के साथ बैठे थे कि नरोपा उन्हें आशीर्वाद देंगे। भले ही वे उनसे कितना भी दूर हो।

मैं उत्सुक, दर्शकों, साधुओं एवं अज्ञेयवादियों के साथ लाल कालीन पर बैठ गई। इत्र की झकोरों से हवा सुगंधित हो गई थी और ओबाउ, ढोल, तुरही एवं मंजीरों की ध्वनियों से आकाश गुंजायमान हो रहा था। गर्भ-गृह में प्रवेश सीमित था और फोटोग्राफी की सख्त मनाही थी। सख्त सुरक्षाकर्मी भीड़ को आगे ले जा रहे थे और आभूषणों को देखने के लिए एक पल भी अधिक नहीं मिला। मुझे बस एक झलक दिखी। बस इतना ही।

पर और भी बहुत कुछ बाकी था। पारंपरिक नृत्य, आध्यात्मिक प्रवचन, नरोपा सदस्यता का आधिकारिक लोकार्पण, लद्दाख की पहली ईडीएम सीडी की रिलीज़ और चावल एवं सब्जियों के मेरे

पारंपरिक पोशाक में लद्दाखी महिलाएँ।

क्या खाएं:

थुकपा : उबली हुई सब्जियों, चिकन, सूअर के मांस, बीफ या मटन के टुकड़ों वाला एक नूडल सूप।

तिगमो : खमीरीकृत ब्रैड डला हुआ सब्जियों या मांस का एक स्ट्यू।

खंबीर : मोटी ब्रैड।

मोकठुक : सूप में मोमोस।

स्क्यू : मांस/सब्जियों के साथ पकाया गया अंगूठे के आकार की गेंहू की गोलियों वाला स्ट्यू।

चांग : स्थानीय तौर पर तैयार की गई शराब।

चुपरी : याक के दूध से बना पनीर

साधु छह हड्डी वाले गहने के इंतज़ार में।

कटोरों को घूरते हुये बर्फ से ढंके पर्वतों के साथ एक बड़े से तम्बू में भोजन। दुकानें स्थानीय हस्तशिल्पों से लदी हुई थी और पेचीदे आभूषण पहने महिलाएं विशाल सुराही से याक के दूध की नमकीन चाय डाल रही थी।

परमपावन ग्यालवांग द्रुकपा, नरोपा के 12वें अवतार और द्रुकपा वंश के वर्तमान प्रमुख, उपस्थित नहीं थे। परंतु मैं हिस एमिनेंस थुकसे रिंपोचे के चरणों में बैठ गई जब उन्होंने सहानुभूति, पर्यावरण को बचाने की जरूरत, और बौद्ध आदेश गंदगी बंद, प्लास्टिक बंद पहल के बारे में बात की। होटल लौटते समय, मैं परमवान ग्यालवांग द्रुकपा द्वारा स्थापित आवारा पशु बचाव एवं प्रबंधन केंद्र में गई जहाँ पर घायल एवं छोड़े हुये कुत्ते, ऊंट, गधे, घोड़े, मुर्गियों की देखभाल की जाती है। ठंडे रेगिस्तान में, सहानुभूति ने घर ढूंढ लिया है।

दूसरे दिन, फिर से ऊबड़-खाबड़ रास्तों से यात्रा करने के बाद हम बुद्ध अमिताभ के थांका को देखने के लिए हेमिस गए। दुनिया के सबसे बड़े थांकाओं में एक, रेशम की कढ़ाई किया हुआ बुद्ध अमिताभ के 60 फीट के ज़री वस्त्र को नरोपा उत्सव के दूसरे दिन फहराया गया। एक धातु के मचान पर लटके हुये थांका को सुबह 8 से दोपहर 12 बजे तक चार दिनों के लिए लोग देख सकते थे।

जैसे ही मैं हेमिस के मुख्य मठ की सीढ़ियाँ तेजी से चढ़ रही थी, नीले आसमान से एक बर्फ का झोंका नीचे आया। विज्ञान इसे एक हल्की बर्फ़बारी कहेगा जिससे बहुत ही कम या कोई बर्फ का जमाव नहीं होता है। हेमिस में, मेरा मानना था कि वह हवा का झोंका नरोपा का एक आशीर्वाद है। शायद उन्होंने तीन निचले लोकों के द्वार मेरे लिए बंद कर दिये हो। शायद उन्होंने पूरे विश्व को आशीर्वाद दिया हो।

मैं बर्फ से बचने कहीं नहीं गई। नरोपा उत्सव में, मैंने बर्फ के झोंको को स्वयं को सफ़ेद रंग से ढंकने दिया।

एस कृष्ण प्रतीश द्वारा रूपरेखा

चित्र : प्रीती वर्मा लाल

हेमिस मठ में बुद्ध की मूर्ति।

Rotary

RI Dist. 3201

BE THE INSPIRATION

miracle makers

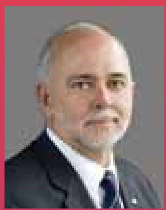

Rtn. Barry Rassin
RI President 2018-19

Rtn. A V Pathy
Dist. Governor 2018-19

Rtn. CJ Ragunathan
Chairman - CASCADE 2019

2019 CASCADE

ROTARY DISTRICT 3201 CONFERENCE

Feb 16 & 17

Le Meridien
COIMBATORE

FRIENDSHIP

FELLOWSHIP

ELEGANT VENUE

EMINENT SPEAKERS

SCINTILLATING ENTERTAINMENT

STALLS TO BUST UR PURSE

ENJOY KONGU HOSPITALITY

FABULOUS MENU

& MUCH MORE

LET'S MAKE CASCADE A FAMILY EVENT

For Registration Contact : 98422 33402

Hosts: **Rotary Clubs of Coimbatore Region**

Secretariat
Rtn. Pragash Angapan (Midtown)
SRI ANGAPPA TRANSPORTS, 104, Main Road, Meena Estates, Coimbatore – 641028.
M : +91 9442611525 / 7904166089 **E** : conferencecascade2019@gmail.com

उनका ध्यान संवहनीय परियोजनाओं पर हैं।

गुस्ताद अंकलेसारिया

ऑटोमोबाइल वितरण, रोटरी क्लब रतलाम, मंडल 3040

तीसरी पीढी के रोटेरियन, गुस्ताद अंकलेसारिया के नसों में रोटरी का रक्त प्रवाहित होता है। वर्ष 1989 में रोटरी में शामिल होने से पहले उन्होंने एक इंटरैक्टर और रोटारेकटर रहे हैं। जबकि उनके पिता टी एस अंकलेसारिया एक भूतपूर्व मंडल गवर्नर रहे हैं, और उनके दादा जी डी अंकलेसारिया ने वर्ष 1962 में रतलाम में 4,000 वर्ग फीट में फैले हुए रोटरी हॉल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

डीजी को यह साझा करते हुए खुशी हो रही है कि उनके क्लब के कुल 111 सदस्यों में से 65 प्रतिशत रोटरी में शामिल होने से पहले रोटारेकटर रहे हैं।

उन्हें प्रसन्नता हैं कि उन्हें अपनी टीम द्वारा निष्पादित किए जा रहे विभिन्न स्थायी परियोजनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। ''हम उज्जैन में नौ डायलिसिस केंद्र, एक ब्लड बैंक, दस फिजियोथेरेपी केंद्र और अनेक भोजन केंद्रों को संचालित कर रहे हैं, जहाँ हम सिर्फ 5 रुपये में दोपहर का भोजन / रात का खाना उपलब्ध कराते हैं।'' चालू वर्ष के दौरान उन्होंने 5 से 7 नए डायलिसिस केंद्र, एक और रक्त बैंक, पशुओं के देखभाल के लिए एम्बुलेंस, एक मैमोग्राफी वैन और 100 ई-लर्निग केंद्र स्थापित करने की योजना बनाई है।

सदस्यता के मामले में, उन्होंने 25 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त करने की योजना बनाई है और वे 10 प्रतिशत महिला सदस्यों को पहले ही शामिल कर चुके है। वे कहते हैं कि सबसे बडी चुनौती मंडल में बिना-रिपोर्ट किए गए रोटारेकट क्लबों का अधिक संख्या में होना है। ''हम अब इन क्लबों से संबंधित आकड़ों को सुव्यवस्थित कर रहे हैं,'' वे आगे कहते हैं।

अंकलेसारिया को टीआरएफ में अपने मंडल से वर्ष के औसत संग्रह 100,000 डॉलर से तिगुना योगदान देने की आशा हैं।

आपके गवर्नरों से मिलें

जयश्री

TRF को दिए जाने वाले योगदान में सुधार

बर्जेश सिंघल

स्टॉक ब्रोकर, रोटरी क्लब जलंधर, मंडल 3070

वे वर्ष 1992 से एक रोटेरियन है।

बर्जेश सिंघल उत्साहित हैं कि उन्होंने अभी तक 200 नए सदस्य जोडे. हैं और महिला सदस्य, ''यदपि कुल सदस्यों में उनकी संख्या केवल 10 प्रतिशत हैं, तथापि वे मंडल में सेवा कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। मैं इस संख्या को 10 प्रतिशत और बढ़ाने के लिए कार्य कर रहा हूँ।''

वे इस बात को लेकर और भी अधिक खुश हैं कि सभी रोटरी क्लबों ने *Rotary Club Central* में अपने लक्ष्यों को अपलोड किया है और अब उन्होंने वर्ष की समाप्ति से पहले माई रोटरी में क्लबों के 100 प्रतिशत पंजीकरण का लक्ष्य निर्धारित किया हैं।

टीआरएफ में योगदान देने के विषय पर, सिंघल कहते कि अब तक फाउंडेशन में क्लबों द्वारा 30 प्रतिशत और रोटेरियन द्वारा 70 प्रतिशत दान देने की प्रवृत्ति रही हैं, इस वर्ष वे इस प्रवृत्ति को उलटने की तैयारी कर रहे हैं ताकि क्लबों द्वारा 97 प्रतिशत और रोटेरियन द्वारा 70 प्रतिशत योगदान टीआरएफ में दिया जा सकें। ''यहाँ तक कि यदि यह 50 डॉलर या 100 डॉलर है, तो यही सही है। यहाँ मुख्य विषय यह है कि सभी रोटेरियनों को संस्था के लिए योगदान करना चाहिए। इस बात को मंडल में अच्छी तरह से स्वीकार किया गया है। इसलिए मै जानता हूँ कि मैं एक उचित योगदान की अपेक्षा कर सकता हूँ। इस वर्ष हमारे पास पाँच नए प्रमुख दाता हैं।''

सेवा परियोजनाओं की उनकी कार्यसूची में सीएसआर के सहयोग से WinS परियोजनाओं को क्रियान्वित करना और 2022 तक भारत-पाकिस्तान सीमा पर एक शांति पार्क स्थापित करना शामिल है। इस लक्ष्य को प्राप्त के लिए मंडल 5080 के पीडीजी कीज़ की अध्यक्षता में नौ सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। उनका लक्ष्य वर्ष के समाप्त होने तक संपूर्ण मंडल में 25,000 पौधे लगाना हैं। ''परियोजनाओं के दौरान टीम को प्रोत्साहित किया गया है कि वे शॉल और फूल देने से बचें। इसके बजाय, उन्हें पौधे देना चाहिए,'' वे कहते हैं।

सिंघल यह बताते हुए ख़ुशी महसूस कर रहे है कि उन्होंने केरल बाढ़ राहत के लिए अपने मंडल से डीजीई के ल्यूक को सहायता के रूप में ₹13 लाख दिए है।

दो सप्ताह की चुनौती के ज़रिए टीम का उत्साह बढ़ाया।

प्रवीण गोयल

सिविल वकील, रोटरी क्लब चंडीगढ, मंडल 3080

उन्होंने अपनी परियोजनाओं की रणनीति को इस तरह से तैयार किया है सभी रोटेरियन इस ''दो सप्ताह की चुनौती'' नामक इस कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित होंगे। जुलाई के कार्यक्रमों में समुदायों में बर्ड बाथ स्थापित करना, सड़क के किनारे व्यवसाय करने वाले फेरीवाले, मोची आदि के लिए बड़े आकार का छाता उपलब्ध कराना शामिल हैं। ''ये परियोजनाएँ रोटरी की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाएंगी,'' प्रवीण चंदर गोयल कहते हैं। उनकी 'चुनौती' कार्यक्रम के अंतर्गत अन्य परियोजनाओं में नवयुवको के लिए स्वास्थ्य देखभाल और सड़क सुरक्षा परियोजनाएँ शामिल हैं।

वर्ष 1988 में रोटरी में शामिल होने से पहले, गोयल वर्ष 1985-86 के दौरान इंटरेक्टर और एक डी आर आर के रूप में कार्य किया। वे सदस्यों की संख्या में 10 प्रतिशत तक वृद्धि करना चाहते है और 'रिपोर्ट' किए गए रोटरेक्ट क्लबों की संख्या को 30 से 60 तक दोगुना करना और 10 प्रतिशत और महिला सदस्यों को शामिल करना चाहते है। उन्हें यह कहते हुए खुशी है कि उनके मंडल ने मंद दृष्टि वाले सदस्यों के लिए एक विशेष रोटरेक्ट क्लब स्थापित किया है और नवंबर में दूसरे क्लब को स्थापित किया जाएगा। ''आर आई के अध्यक्ष बेरी रेसिन ने क्लब को चार्टर प्रमाणपत्र दिया और वे बहुत अधिक प्रभावित हुए,'' वे आगे कहते हैं।

उनका लक्ष्य टीआरएफ में 600,000 डॉलर का योगदान करना है, लेकिन ''मैं बहुत कुछ करने में सक्षम नहीं हूँ। मेरा अगले दो सप्ताह की चुनौती प्रत्येक सदस्य को संस्था में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करेंगी,'' वह मुस्कुराते हुए कहते है।

उनके पास WinS के लिए वैश्विक अनुदान परियोजना और उसके बाद वर्ष के दौरान स्कूलों में फर्नीचर उपलब्ध कराने की परियोजना को लागू किया जाएगा।

रोटरी की सार्वजनिक छवि को प्रोत्साहन

एस पिराइयों
सिविल इंजीनियर रोटरी क्लब कुड्डालोर कोस्टल सिटि मंडल 2981

रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने के लिए उन्होंने चार परियोजनाएं तैयार कर रखी है। ''रोटेरियन होने के नाते हम जो करते है उस पर हमें गर्व होना चाहिए। यदि हम हमारे महान संगठन के अच्छे कामों को प्रदर्शित नहीं करेंगे, तो और कौन करेगा? पिराइयों पूछते है। रोटरी के 113वें वर्ष का उत्सव मनाने के लिए, पूरे मंडल में 113,000 पौधे रौपे जा रहे है। विचार इस क्षेत्र में एक घना जंगल बनाने का है जिसके कुछ इलाके चक्रवात की चपेट में रहते है। इस साक्षात्कार के समय, वह गाज़ा चक्रवात को लेकर चिंतित प्रतीत हो रहे थे जो कुड्डालोर और नागपट्टिनम के मध्य भूस्खलन ला सकता था। कार्य-सूची में अगला कार्य 750 असहाय महिलाओं को सिलाई मशीन प्रदान करने का है। इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि वे उसे बेच ना दें, लाभार्थियों को हर साल मशीनें क्लब को लौटानी होगी और उसका नवीनीकरण करवाना पड़ेगा। पूजा के प्रसिद्ध स्थानों के निकट परिष्कृत शौचालयों का निर्माण करना और शिक्षित ग्रामीण युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने हेतु पूरे मण्डल में रोजगार मेलों का आयोजन करना अन्य दो परियोजनाएं है।

इसके अलावा, उन्होंने 12 परियोजनाएं चिन्हित की है जो हर माह क्लबों द्वारा की जानी है। मण्डल ने अब तक 1,000 स्कूलों को WinS सुविधाओं से एवं 114 स्कूलों को 'स्मार्ट कक्षाओं' से सुसज्जित किया है।

सदस्यता पर, पिराइयों कहते है कि वर्ष की शुरुआत में सदस्यता 4,545 से बढ़कर अब 4,782 हो चुकी है और 25 प्रतिशत नए सदस्यों में महिलाएं शामिल है। 50 रोटारेक्ट क्लबों के लक्ष्य के लिए अब तक 20 नए रोटारेक्ट क्लब; 60 RCC के लक्ष्य के लिए 22 RCC और 12 इंटरेक्ट क्लब अब तक जोड़े जा चुके है।

टीआरएफ के लिए उनका लक्ष्य 400,000 डॉलर इकट्ठा करने का है।

यह गवर्नर, 1995 से एक रोटेरियन है और उनकी पत्नी गीता भी एक रोटेरियन है।

उनका ध्यान नदियों के संरक्षण पर है

डॉ सायंतन गुप्ता
स्त्रीरोग विशेषज्ञ, रोटरी क्लब मालढ़ा सेंट्रल मंडल 3240

क्लब के चार्टर अध्यक्ष के रूप में वह वर्ष 2003 में रोटरी से जुड़े। वह रोटेरियनों के मन में रोटरी को बैठाना चाहते है और रोटरी पर उनके ज्ञान को बढ़ाने के लिए उन्होंने विभिन्न कार्यक्रमों की योजना बनाई है। सायंतन गुप्ता क्षेत्र की नदियों की हालत को सुधारने को लेकर उत्सुक है और ''रोटेरियनों में इस समझ को बढ़ाने के लिए उन्होंने बहुत से मण्डल कार्यक्रमों का नाम नदियों के नाम पर रखा है। नदियों के किनारों पर पौधरोपण करने, नदियों के प्रदूषण को संबोधित करने वाली रैलियों एवं जागरूकता कार्यक्रमों को आयोजित करने जैसी परियोजनाओं पर भी हम काम कर रहे है,'' वह कहते है।

गुप्ता सदस्यता को कम से कम 300 से बढ़ाना चाहते है, जिसमें अधिक ध्यान महिला सदस्यों को जोड़ने पर होगा, विषेशरूप से रोटेरियनों की पत्नियों को। ''उनके लिए क्लब/मंडल शुल्क को हटा लिया गया है। अब हर माह, हम नई रोटेरियन-पत्नियों को शामिल करते है।'' रोटरी से जुड़ने के लिए वह रोटरेक्टरों के लिए दोहरी सदस्यता को भी बढ़ावा दे रहे है। ऐसे सदस्यों के लिए क्लब/मंडल शुल्कों को हटा लेने के अलावा, मेरा गृह क्लब रोई के शुल्क का एक बड़ा हिस्सा साझा कर रहा है, वह कहते है। वह रोटरेक्ट क्लबों का रोई में पंजीकरण करने पर ज़ोर दे रहे है एवं आभासी क्लबों को हतोत्साहित कर रहे है।

उन्हें रोटरी में साहचर्य अधिक पसंद है; एक डॉक्टर होने के नाते, ''मैं कहीं भी सेवा प्रदान कर सकता था, परंतु रोटरी में संबंध एक ऐसी चीज़ है जो मुझे अच्छी लगती है।'' अंग्रेजी एवं बंगाली में कविताएं, उपन्यास एवं नाटक लिखना उनके शौक है। उन्होंने किताबें प्रकाशित की है जिसमें बंगाली उपन्यास, मेघनाद वध काव्य, का अंग्रेजी अनुवाद शामिल है जिसका लोकार्पण भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा किया गया था।

गुप्ता की पत्नी पुष्पिता भी उसी क्लब की चार्टर सदस्य है और उन्हें आशा है कि उनकी छोटी बेटी भी एक सदस्य बनेगी।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी साइकिल पुणे की लड़कियों के लिए

टीम रोटरी न्यूज़

रोटेरियनों के साथ स्कूल के बच्चें।

रोटरी कल्ब पुणे कैंप, मंडल 3131, प्रति वर्ष अपनी साक्षरता और सामुदायिक विकास पहल की भागीदारी के रूप में, उन लडकियों के लिए नवीनीकृत किया हुआ और नई साइकिलें उपलब्ध कराता है जिन लडकियों को स्कूल जाने के लिए अपने घर से लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी।

वर्ष 2013 में इस परियोजना को शुरू करने बाद से क्लब ने अब तक इस क्षेत्र में लड़कियों को 500 से अधिक साइकिलें उपलब्ध कराया है।

इस वर्ष अगस्त में, क्लब ने पुणे के नारायणपुर तालुका के भिवडी गांव के सद्गुरु नारायण महाराज माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत्त 30 लड़कियों को साइकिलें उपलब्ध करायीं।

''लड़कियों को स्कूल जाने के लिए 5 किलोमीटर की यात्रा करती पड़ती थी। यदपि एक सार्वजनिक परिवहन का साधन उपलब्ध है, जो अनियमित है और शायद ही वह कभी समय पर स्कूल पहुँच पाती थी,'' साक्षरता और सामुदायिक परियोजनाओं के क्लब के निदेशक जयदीप एन मालविया कहते हैं। ■

आत्म-रक्षा के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना

रोटरी क्लब पूणज मंडल 3131 द्वारा युवा महिलाओं को स्वयं को छेड़छाड़ और उत्पीड़कों से बचाने के लिए एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला में राष्ट्रीय स्तर के पेशेवरों की एक टीम ने प्रतिभागियों को व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया।

''युवा महिलाओं को छेड़छाड़ और उत्पीड़कों से बचाने तथा उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न करने के लिए उन्हें हथियार-रहित लड़ाई के लिए प्रशिक्षित करने की जरूरत को हमारे क्लब द्वारा महसूस किया गया था और इसलिए, हमने इस परियोजना को एक थीम स्वयं सुरक्षा में ही अपनी रक्षा के साथ लॉन्च किया है,'' क्लब अध्यक्ष कर्नल प्रेम आनंद कहते हैं। एक बार जब उन्हें कुछ बुनियादी मार्शल आर्ट्स सिखाया जाएगा, ''महिलाएं सार्वजनिक स्थान पर बिना दूसरों के मदद की उम्मीद किए बिना अपराधी को सबक सिखलाने में सक्षम होंगी।''

कुल 90 मिनट की अवधि वाले, इस प्रशिक्षण को स्कूलों, कॉलेजों या आवासीय समाजों में किसी भी स्थान या खुले मैदान पर आत्मरक्षा के लिए आयोजित किया जा सकता है। आनंद कहते हैं कि व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन देना सुनिश्चित करने के लिए बैच में अधिकतम 30 प्रशिक्षुओं को शामिल किया जाता है, उन्होंने आगे कहा है कि प्रशिक्षण सामग्री स्थिति पर आधारित है और उसे चर्चा, प्रदर्शन और फिर अभ्यास के माध्यम से निष्पादित किया जाता है। ■

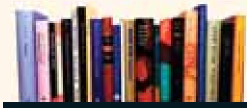

शब्दों की दुनिया

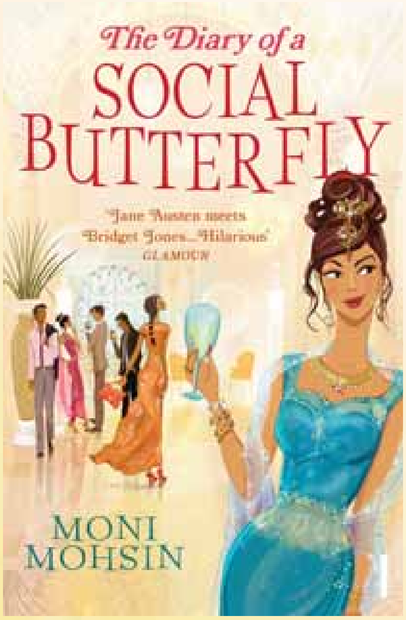

बैचेनी के समय फड़फड़ाना

संध्या राव

आपको हंसा-हंसा कर लोट-पोट कर देने वाला राजनैतिक व्यंग्य लिखना कोई मज़ाक नहीं है।

मैं आधिकारिक रूप से लगभग 40 वर्षों तक एक ङ्कामकाजी महिलाफ रही हूँ, मतलब मैं सुबह उठती थी और ङ्दफ्तरफ जाती थी। ज़्यादातर दिनों में, मेरे हैंडबैग में दूसरी जरूरी चीजों के साथ, एक किताब होती थी। फिर भी, इतने सालों के बाद, मैं अपने हाथों की उँगलियों पर गिन सकती हूँ कि कितनी बार मैंने काम के वक्त किताब पढ़ी। जब तक कि मेरी दोस्त तीर्णा ने मुझे तोहफे के रूप में मोनी मोहसीन द्वारा लिखित *द रिटर्न ऑफ़ द सोशल बटरफ्लाइ* नहीं दी। ''हम्म!'' कवर को देखकर मैंने मन में सोचा। ''महिला प्रधान साहित्य! मेरे बस की बात नहीं है!'' परंतु मैं धन्यवाद के तौर पर मुस्कुरायी। इसके अलावा, तीर्णा की किताबों की पसंद बहुत अच्छी है।

किताबों से प्यार करने का दावा करने वाली मैं इस बात को स्वीकार करती हूँ कि उस अनकही टिप्पणी में पक्षपात की बू आती है। एक किताब बस एक किताब नहीं होती: वह एक चमत्कार होती है। आप किसी अन्य चमत्कार की बजाय दूसरे चमत्कार की आभा में अधिक सहजता से आनंद ले सकते है। या, हो सकता है कि चमत्कार बिल्कुल भी आपके लिए ना हो, वह गलत दिशा-निर्देश हो सकते है। लेकिन उस चमत्कार के केंद्र में एक किताब है, और किताब का उपहास नहीं किया जाना चाहिए, उनके द्वारा तो निश्चित रूप से नहीं जो किताबों से प्यार करते है।

एक अकेली, गुलाबी, ऊंची हील की सैंडल की तस्वीर को प्रदर्शित करते हुये कवर पर, *इंडिया टुडे* का एक उद्धरण था: ''ग्लैमरस लड़कियों का उपन्यास शैनेल आच्छादित व्यंग में विकसित होता है।'' समझ आया? स्पष्ट रूप से महिला प्रधान साहित्य। स्पष्ट रूप से मेरे बस का नहीं, स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं। हालांकि, मेरे अंदर के पाठक ने आशंकाओं पर विजय प्राप्त की इसलिए एक दिन, काम पर एक विराम के दौरान, मैंने मेरे हैंडबैग से किताब निकाली, मेरी घूमने वाली कुर्सी पर बैठी, और पहला पन्ना खोला। शुरुआती पंक्तियाँ पढ़कर मुझमे कुतूहल उत्पन्न हुआ पर मैं पूरी तरह मंत्रमुग्ध नहीं हुई। 14वें पन्ने तक, मैं अविरल ठहाके लगाए जा रही थी, बिना उन लोगों पर ध्यान दिये जो मेरे कार्यस्थल से गुज़र रहे थे। और वहाँ से गुज़र रहे जिन अभागों पर मेरी नज़र पड़ी, उन्होंने स्वयं को कैद पाया क्योंकि मैं उन्हें किताब से पढ़कर सुना रही थी। नौकर की समस्याओं और किटी पार्टियों और निरंतर बदलते रहने वाला राजनैतिक परिदृश्य जहाँ कोई नहीं जानता कि वे कहाँ जा रहे है या आ रहे है, के साथ पाकिस्तानी ऊपरी वर्ग की बातूनी रईस होने की अपार समस्याओं की बारीकियों में मैं पूरी तरह लिप्त हो गई।

परंतु, सतर्क रहिए। कुछ हास्यास्पद पढ़ने का एक बड़ा संबंध इस बात से भी होता है कि आपकी हास्यवृत्ति गुदगुदाई है या नहीं। उस दिन, मेरी हास्यवृत्ति अत्यधिक सक्रिय थी। इसलिए, जब मैं निम्न गद्यांश पर पहुँची, तो मेरे गालों पर से आंसू बह रहे थे: ''स्पष्ट रूप से अंदरूनी खेल यह है: नवाज़, मुशर्रफ से छुटकारा चाहते है जो स्पष्ट रूप से अब भी राष्ट्रपति है क्योंकि चुनाव के बावजूद भी, उनका राष्ट्रपति कार्यकाल अगस्त तक समाप्त नहीं हो रहा है। तो तब तक मुशर्रफ हमारा गले का

हार होने वाला है।'' यहाँ पर, मुझे टोकना चाहिए। फिलहाल मेरी हास्यवृत्ति काफी निष्क्रिय है, लेकिन मुशर्रफ की ''गले के हार'' के रूप में कल्पना करना हर बार मुझे हंसा देता है।

यह वहाँ पर खत्म नहीं होता: ''तो नवाज़ सोच रहे है कि यदि वह मुख्य न्यायाधीश इफ्तिखार चौधरी, जिन्हें मुशर्रफ ने बाहर कर दिया था, को वापस ला सकें तो उनके वापस आते ही वह मुशर्रफ के साथ जैसे को तैसा करते हुए उसे बाहर कर देंगे। फिर नवाज़ मुख्य न्यायाधीश से झझझ सरकार से छुटकारा पाने का आग्रह करेंगे ताकि वह, नवाज़, फिर से पाकिस्तान का बादशाह बन सकें। लेकिन इसके साथ क्या गलत है, जानू (जानू बटरफ्लाइ का पति है)? मैंने पूछा। मुझे लगता है कि नवाज़ ने सऊदी अरब में गुज़ारे अपने वक्त के दौरान देखा होगा कि बादशाह बनना सबसे अच्छा होता है। ना कोई चुनाव, ना कोई जनमत संग्रह, ना कोई संसद, ना कोई प्रस्ताव। बस केवल आप और आप।''

यह वाकई में मज़ेदार है। मोनि मोहसिन, आपको सलाम। केवल दिलचस्प लेखन के लिए ही नहीं बल्कि राजनैतिक कटूपहास की कुशाग्र निर्भीकता के लिए भी: 'डायरी' प्रविष्टियाँ जिसमें *द रिटर्न ऑफ द बटरफ्लाइ* के अंश मौजूद है मूल रूप से लाहौर आधारित न्यूज़वीकली, *द फ्राइडे टाइम्स,* में प्रदर्शित हुई थी। किताब के शीर्षक में 'रिटर्न' शब्द का उपयोग प्रणेता को दर्शाता है, इसलिए मैं ऑनलाइन गई और मुझे मोनी मोहसिन के कॉलमों, जो *द डायरी ऑफ अ सोशल बटरफ्लाइ* के रूप में संकलित हुआ था, का पहला संकलन मिला।

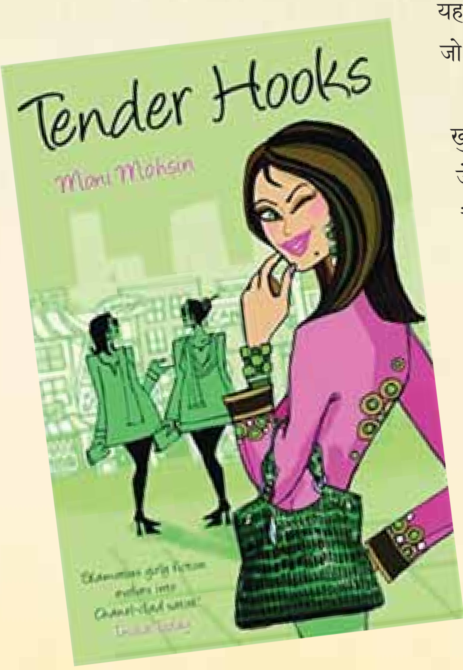

उसमें, बटरफ्लाइ खुद का परिचय करवाती है: ''क्या? क्या मतलब है तुम्हारा, 'मैं कौन हूँ?' यदि तुम मुझे नहीं जानते, बाबा, तो मैं बस इतना कह सकती हूँ कि तुम किसी बाहरी दुनिया के हारे हुए व्यक्ति हो। सब मुझे जानते है। पूरा लाहौर, पूरा कराची, पूरा इसलू - ओहो, बाबा, इस्लामाबाद - आधा दुबई, आधा लंदन, पूरा खान बाज़ार, और इंपीरियल होटल के सभी अच्छे-अच्छे पदाधिकारी भी ... मैं लाहौर में रहती हूँ। एक बड़ी, आलीशान कोठी में, गुलबर्ग में एक बड़े से आलीशान बगीचे के साथ, जहाँ सभी खानदानी, खाते-पीते लोग रहते है... मैं बहुत ही कुतर्की, चतुर और सामाजिक हूँ। कोई भी नृत्यसभा, कोई भी पार्टी, कोई भी रात्रिभोज, कोई भी कॉफी मॉर्निंग, कोई भी अन्त्येष्टि, कोई भी GT - उफ़, अब मुझे आपको GT भी समझाना पड़ेगा? *गेट टुगेदर* (मेल-मिलाप), बाबा - मेरे बिना अधूरा रहता है। स्वभाविक रूप से, यदि आप इतने ज्यादा सामाजिक होने जा रहे है, तो आपको अच्छे कपड़ों और अच्छा दिखने की भी आवश्यकता है। तो मुझे मेरे डिज़ाइनर जोरास और अपने सौंदर्य चिकित्सक और मेरे जौहरी, वगेरह से मिलना पड़ेगा ना। पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था का समर्थन करने का यह सिर्फ मेरा निस्वार्थ तरीका है। जानू के विपरीत, जो एक ज़िंदा लाश है, मैं बहुत ही खुश मिज़ाज हूँ।''

मुझे यह *मैडम बटरफ्लाइ* पसंद है जो इतनी खुशमिजाज़ है और जो मानती है कि सभी उनसे जे है - अरे बाबा, जे मतलब जेलस (जलते) है, ना - और जो अपने तरीके से समस्याओं से निपटती है। जैसे, उदाहरण के लिए, तीसरी किताब, *टेंडर हूक्स* से: ''प्रतिदिन दाढ़ी वाले अजीब आदमियों से उसके (अपने लड़के कुलचू का जिक्र करते हुए) स्कूल की ओर खतरा बढ़ रहा है जो कहते है वे इसे बम से उड़ा देंगे। लड़कियों के 'स्कूल' के मुख्य शिक्षकों को दिन और रात डराया जा रहा है कि वे उनकी इमारतों को जला देंगे और लड़कियों के चेहरों पर तेज़ाब फेंक देंगे क्योंकि उनकी यूनिफ़ार्म इस्लामी नहीं है। जरा उन्हें देखो!

एक किताब बस एक किताब नहीं होती: वह एक चमत्कार होती है। आप किसी अन्य चमत्कार की बजाय दूसरे चमत्कार की आभा में अधिक सहजता से आनंद ले सकते है।

वह कमीज़ जो आपके टकने से नीचे आती हो और एक शुल्ल्ू जिसमें तीन सीटों वाले सोफ़े से अधिक कपड़ा होता है, से अधिक इस्लामी क्या होगा? तेज़ आवाज़ में बोलती है।''

बेचारी बटरफ्लाइ। सभी दाढ़ी वाले अजीब लोगों और अजीब से दिखने वाले मोटे-ताजे आत्मघाती हमलावरों के छत पर घूमने के कारण, वह अपने पसंदीदा पाँच सितारा सैलून में फेशियल के लिए भी नहीं जा सकती। उसे घर पर ही उसका फेशियल कराने के लिए किसी को बुलाना पड़ता है: ''साथ ही उसके शरीर से गंध भी आती है। वास्तव में, तालिबानों ने हमें किस स्थिति में डाला है! तो जब कोई कहता है कि इन सभी खून-खराबे के पीछे अमेरीकी है, तो मैं कहती हूँ बाबा, मैं अपने फेशियल के लिए एस्टर लौडर उत्पादों का प्रयोग करती हूँ। और एस्टर लौडर, जैसा सभी जानते है, अमेरीकी है। तो पाकिस्तान में ये सभी हत्याएँ करवाकर अमेरीकी अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी क्यों मारेंगे ताकि कोई एस्टर लौडर फेशियल लेने अपने घरों से बाहर ना जा सके, हाँ? किसी भी सूरत में फेशियल के खिलाफ कौन होगा? क्या वे अमेरीकी है? नहीं। क्या वे भारतीय है? नहीं। क्या वे तालिबानी है? हाँ। हाँ। हाँ। और कोई नहीं बल्कि तालिबानी। उचित तर्क।''

हाँ। हम पर व्यंग्यात्मक रूप से हमला करने वाला मोनी मोहसिन की तरह और कोई नहीं है। और बेहतर होगा कि आप बचकर रहे क्योंकि आप उनकी सूची में आ सकते है। और फिर आप हँस-हँस कर लोट-पोट हो जाएंगे।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

पोलियो, द ओडिसी ऑफ़ इरेडिकेशन

जी कृष्णन

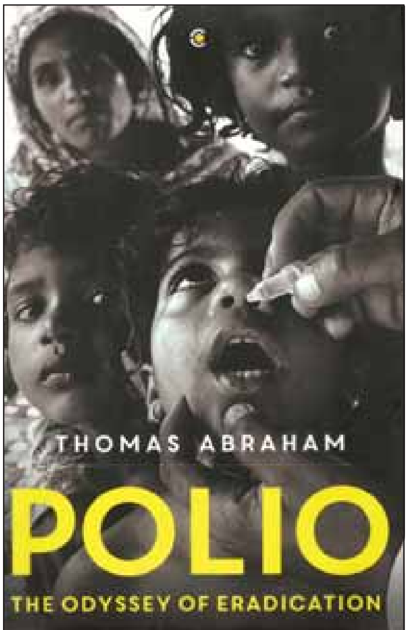

Westland Publications
252 pages; ₹699

चेचक के बाद, कैसे पोलियो ने इतिहास का सबसे बड़ा जन टीकाकरण कार्यक्रम बनने के लिए दुनिया के दृष्टिकोण को आकर्षित किया?

थॉमस अब्राहम *पोलियो, द ओडिसी ऑफ़ इरेडिकेशन* में भूराजनैतिक, निरक्षरता, और बहुत सारे पैसे की भूमिका की कहानी बताने के लिए दशकों की अपनी पत्रकारिता निपुणता का इस्तेमाल करते है।

1980 के दशक तक, अमेरीका जोनास सॉक द्वारा विकसित निष्क्रिय पोलियोवायरस टीके को कुछ 1.5 मिलियन बच्चों में इंजेक्ट करके पहले ही पोलियो को नियंत्रित करने में तीव्र प्रगति कर चुका था। यह प्रयास विफल हो जाते अगर पोलियो उन देशों से आने जाने वाले यात्रियों के माध्यम से पुनः प्रकट हो जाता जिन देशों में यह तब भी मौजूद था। इसलिए, दुनिया का पोलियो मुक्त होना जरूरी था। लेकिन कहीं और पोलियो सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं थी। स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर प्रत्येक देश का अपना स्वयं का टीकाकरण कार्यक्रम था। अमेरीका के बड़े वित्तीय स्रोतों वाले सार्वजनिक और निजी संगठनों के एक दृढ़ संकल्पी गठबंधन ने दुनिया को एक ही बीमारी पर वैश्विक अभियान शुरू करने के लिए राजी किया।

1988 में, वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल का जन्म हुआ। इस बार, यह इंजेक्शन के बजाए अल्बर्ट सबिन द्वारा विकसित उपयोग में आसान मौखिक टीके पर निर्भर था। यूनिसेफ और यूएस सेंटर फॉर डिज़ीज़ कंट्रोल के सहयोग से विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा यह अभियान लागू किया गया। रोटरी अंतर्राष्ट्रीय और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन द्वारा धनराशी प्रदान की गई (बुनियादी स्तर पर लोगों के साथ ताकि संपूर्ण टीकाकरण कवरेज को सुनिश्चित किया जा सके)।

गठबंधन ने घोषणा की कि पोलियो वर्ष 2000 तक खत्म हो जाना चाहिए। उसे अभियान की वास्तविक जटिलता का अंदाज़ा नहीं था।

भारत के पास अपनी स्वयं की प्राथमिकताएं थी लेकिन अंततः उसने भी हार मान ली। 1992 में, हज़ारों रोटेरियन सरकारी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के साथ, दुनिया के सबसे बड़े एकल जन टीकाकरण के अंतर्गत, देशभर में 90 मिलियन बच्चों के मुँह में मौखिक पोलियो टीके की दो बूँद डालने के लिए निकले। एक गरीब और स्वास्थ्य सेवाओं के विभिन्न स्तरों वाले देश में, यह कार्यक्रम जाहिर तौर पर उलझ कर रह गया। एक ऊष्णकटिबंधीय जलवायु में इस टीके ने अपेक्षित रूप से काम नहीं किया। बिजली अनियमित थी और अक्सर टीका उचित रूप से संग्रहीत नहीं किया जाता था। अनेक स्वास्थ्य कर्मचारियों ने सीधे तौर पर दौरे नहीं किये, अक्सर उन्होंने आवश्यक 100 बच्चों का टीकाकरण करने के बजाए केवल एक बच्चे का ही टीका किया। उनके पास पहले से ही करने के लिए एक बहु-रोग टीकाकरण कार्यक्रम था, जिसका अर्थ था अतिरिक्त कार्य। टीके के प्रभावी होने के लिए इसकी कई खुराक दिए जाने की आवश्यकता थी।

उत्तरप्रदेश और बिहार में, बहुत ही ख़राब स्वास्थ्य सेवाएँ और व्यापक रूप से फैली निरक्षरता

ने प्रगति में बाधा डाली। जल्द ही यह अफवाह फ़ैल गई कि यह टीका बच्चों को नपुंसक बना देगा और इसके निशाने पर मुस्लिम लोग है। इससे बहुत कड़ा विरोध देखने को मिला। स्थानीय नेताओं और राजनेताओं द्वारा लोगों को अपने बच्चों को टीके लगवाने हेतु मनाने के लिए कई वर्षों का समय लगा। केवल 2011 में भारत को पोलियो मुक्त घोषित किया गया। इस लक्ष्य को प्राप्त करने वाले दुनिया के अंतिम देशों में से भारत एक था।

लेकिन वायरस अभी भी कुछ देशों में फ़ैल रहा है। पिछले वर्ष, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, सीरिया, नाइजीरिया और कांगो में कुछ 100 मामले सामने आए थे। कई संशोधनों की तरह, पोलियो उन्मूलन के लिए वर्ष 2000 की दी गई मूल समय सीमा बहुत पहले ही खत्म हो गई है। अब तो, वर्ष 2021 की समय सीमा भी काल्पनिक लगती है। राजनैतिक हलचल और युद्ध, टीके से होने वाली समस्याएँ, और सार्वजनिक स्वास्थ्य कर्मचारियों की थकावट जिन्हें साल दर साल टीकाकरण करने के लिए बाध्य किया जाता है, ये सभी इस कार्यक्रम को क्षति पहुँचा रहे है। स्पष्ट रूप से, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने समस्याओं को कम आंका। इस कार्यक्रम में कुछ 15 बिलियन डॉलर लगाए जा चुके है।

पाकिस्तान में, तालिबान के साथ हठीले युद्ध ने इस कार्यक्रम को पटरी से उतार दिया। तालिबान ने पश्चिमी पाकिस्तान में बार-बार दर्ज़नों महिला टीकाकर्णियों को गोली मारी। संदेह व्यापक स्तर पर फैला है कि टीकाकर्णी अमेरीकी एजेंट है। यह संदेह तब उत्पन्न हुआ जब ऐब्टाबाद में टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल एक डॉक्टर की मदद से नेवी सील ने ओसामा बिन लादेन को ढूँढ निकाला और मौत के घाट उतार दिया। पाकिस्तानी सेना ने तालिबान पर कड़ी कार्यवाही की और भगौड़े पठान फिर से पोलियो को अफ़गानिस्तान की सीमा में ले गए। सीरिया में पोलियो की शुरुआत के लिए प्रवासी पाकिस्तानियों को ज़िम्मेदार ठहराया गया।

कई स्वास्थ्य विशेषज्ञ बार-बार यह कहते है कि निरोध्य रोगों पर व्यापक रूप से ध्यान केन्द्रित करने के बजाए, देशों को आक्रामक ढंग से केवल एक ही बीमारी के पीछे पड़ जाने के लिए बाध्य किया जा रहा है। जहाँ अन्य बीमारियों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हो क्या वहाँ पर पोलियो उनकी प्राथमिकता होनी चाहिए? क्या उन्हें पोलियो पर केवल इसलिए ध्यान देना चाहिए क्योंकि धनाढ्य देशों ने इसे उन्मूलित कर दिया है और उन्हें प्रभावित स्थानों से उनके देश में इसके दोबारा फ़ैल जाने का डर है?

लेखक लिखते है, ''अगर इन सबसे भविष्य के वैश्विक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए कोई सबक मिलता है तो वह यह है कि उनका कार्य बहुत आसान हो सकता है यदि वे लोगों की जरूरतों के प्रति अधिक उत्तरदायी हो जिन्हें वे सेवा देने के लिए बाध्य है, बजाए उनकी परियोजनाओं को वित्तपोषित करने वाले बड़े दानकर्ताओं के प्रति।''

अब्राहम को पोलियो में दिलचस्पी तब हुई जब वह जिनेवा में विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ एक संचार अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे थे और पोलियो दल की ऊर्जा और दृढ़ता को देखकर प्रभावित हुए। जब उन्होंने स्वयं को इस विषय में तल्लीन किया तो वह इस कार्यक्रम की जटिलताओं, उसकी असफलताओं, उपलब्धियों और नैतिक अस्पष्टताओं से स्तब्ध थे और इस बात पर हैरान हुए कि क्यों यह उन्मूलन कार्यक्रम इतनी सारी समय सीमाएं चूक रहा है और उन्होंने इस किताब पर अगले एक दशक तक कार्य किया।)

लेखक एक पत्रकार और सम्पादकीय प्रशिक्षक है।

Star Performers (Membership and

Zone 4		
Award Category	**IPDG**	**District**
Highest Membership Growth	B M Sivarraj	3142
Highest % of Membership Growth	B M Sivarraj	3142
Highest growth in women members	B M Sivarraj	3142

Zone 5		
Award Category	**IPDG**	**District**
Highest Membership Growth	R Srinivasan	3232
Highest % of Membership Growth	Jawarilal Jain	3231
Highest growth in women members	R Srinivasan	3232

Zone 6A		
Award Category	**IPDG**	**District**
Highest Membership Growth	Ranjeet Singh	3120
Highest % of Membership Growth	Harjit Singh Hura	3261
Highest growth in women members	Ranjeet Singh	3120

RID C Basker and RI President Barry Rassin present awards to IPDG Chinnadurai Abdullah and his wife Fathima.

IPDG Vyankatesh Vithal Channa and Lata receive award from President Rassin as RPICs Ashish Desai and Rajadurai G Michael look on.

IPDG P Gopalakrishnan and Neela receive award from President Rassin in the presence of RID Basker.

President Rassin presents an award to IPDG Sunil Saraf and Jyoti.

Public Image) — Zones 4, 5 and 6A

Zone 4

Award Category	IPDG	District
Public Image Award	B M Sivarraj	3142
AV Media Award	Ravi Choudhary	3011
Social Media Award	B M Sivarraj	3142
Print Media Award	Vyankatesh Channa	3132

Zone 6A

Award Category	IPDG	District
Public Image Award	Ajay Agrawal	3262
AV Media Award	Sanjay Giri	3292
Social Media Award	Sunil Saraf	3240
Print Media Award	Harjit Singh Hura	3261

Zone 5

IPDG	District
P Gopalakrishnan	3000
R Srinivasan	3232
Suresh Mathew	3211
Jawarilal Jain	3231
Chinnadurai Abdullah	3212
G N Prakash	3182
Asha Prasanna Kumar	3190

IPDG B M Sivarraj and Manonmani receive award from President Rassin. From L: RPIC Ashish Desai, RID C Basker, RCs Ashok Gupta and Rajendra Rai are also present.

IPDG Ranjeet Singh and Kiranjeet receive award from President Rassin.

President Rassin and RID Basker present an award to IPDG G N Prakash and Vijaya.

Pictures: K Vishwanathan

महिलाओं एवं बच्चों के लिए आनंदोत्सव

किरण ज़ेहरा

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के लिए तैयार बच्चें।

चेन्नई के उपनगर, वलाजपेट, का ब्राइट माइण्ड्स विद्योदय स्कूल का परिसर बातों, ठहाकों और हर्ष से गुंजायमान था क्योंकि मंडल 3231 ने पहली बार केवल महिला रोटेरियनों, रोटरी एन्स और एनेट्स के लिए एक उत्साहपूर्ण समारोह का आयोजन किया था। इस कार्यक्रम ने उनकी प्रतिभा को उजागर किया और मंडल में रोटरी पत्नियों की ताकत को प्रदर्शित किया। *मगलीर मट्टुम* (केवल महिलाओं के लिए) नामक यह एक दिवसीय कार्यक्रम गतिविधियों, फ़ैशन, खाने एवं मज़े से परिपूर्ण था।

''मुझसे हमेशा क्लब अध्यक्षों एवं अन्य रोटेरियनों की पत्नियों द्वारा पूछा गया है कि: हमारे लिए रोटरी में कुछ है क्या? महिलाओं को व्यस्त रखने का यह मेरा छोटा-सा विचार है,'' मंडल 3231 के डीजी चन्द्र बॉब की पत्नी और कार्यक्रम की आयोजक सुजाता चन्द्र बॉब कहती है। उनके स्वागत सम्बोधन में डीजी चंद्र बॉब ने पत्नियों का स्वागत किया और उनके रोटेरियन पतियों का समर्थन करने के लिए उनका धन्यवाद किया। ''हमें समझने एवं समाज की सेवा करने हेतु अपना सर्वश्रेष्ठ करने में हमारी मदद करने के लिए आपका धन्यवाद,'' उन्होंने कहा।

सुजाता, रोटरी ई-क्लब चेन्नई की पूर्व अध्यक्ष, ''मंडल में महिलाओं को साहचर्य एवं मेल-जोल में व्यस्त करना चाहती है। जब महिलाएं साथ आती है और रोटरी के बारे में सार्थक बाते करती है, तो यह उनमें रोटरी से जुड़ने एवं एक साथ अद्भुत कार्य करने की रुचि जागृत करता है।'' महिलाओं के लिए एक दिन की छुट्टी होने के साथ ही इस कार्यक्रम के माध्यम से उन सभी माताओं की प्रतिभा सामने आई जिन्हें कभी भी अपनी प्रतिभाओं को दिखाने या प्रदर्शित करने के लिए कोई मंच नहीं मिला,'' वह आगे कहती है।

फ़ैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता के लिए बच्चे उनके पसंदीदा कार्टून पात्रों की तरह तैयार हुये थे, यहाँ तक कि उनकी माताएँ मंच के पीछे से उनके द्वारा भूली गई पंक्तियों को याद दिलाने में सहायता कर रही थी। ''उसे तैयारी के लिए अधिक समय नहीं मिला, एक माता ने मंच के पीछे से चुटकी ली।'' विविध प्रतियोगिताओं में भाग ले रहे बच्चों का मेक-अप करने और उन्हें कपड़े पहनाने से लेकर उनका उत्साहवर्धन करने तक, एन्स और महिला रोटेरियन प्रतियोगिता डेस्क पर शीघ्रता से पहुँच रही थी और अपना काम समय पर पूरा कर रही थी। ''जिसका मतलब यह है कि हम पहले से ही समय प्रबंधन एवं बहुकार्यण कौशलों में समृद्ध है। कल्पना कीजिये यदि हम इन कौशलों को रोटरी में ला सके तो। बहुत सी महिलाओं को यह भी नहीं पता कि उनके पास पहले से ही ऐसे कौशल है।'' यह कार्यक्रम उन्हें यह समझने में मदद करेगा, कार्यक्रम प्रमुख नंदिनी निर्मल ने कहा।

रंगबिरंगी *पट्टु* (रेशम) साड़ी पहने हुये महिलाएं स्कूल के मैदान में स्थापित किए गए बहुत से

स्टालों को भीड़ से गुजरकर देख रही थी। कपड़े, समान एवं मेहँदी के स्टॉलों पर उनकी भीड़ थी, वहीं एनेट्स खाने एवं खेल के स्टॉलों के आसपास घूम रही थी। मिट्टी के बर्तनों और घरेलू एक्सेसरीज़ के स्टॉलों पर अच्छी संख्या में लोग आए। ''सभी स्टॉल रोटेरियनों या उनकी पत्नियों द्वारा उनके व्यवसाय को बढ़ाने एवं मेल-मिलाप हेतु लगाए गए थे,'' सुजाता ने कहा।

बाएं से : सुजाता चन्द्रा बॉब, उषा अजित प्रसाद और कार्यक्रम की अध्यक्ष नंदिनी निर्मल।

₹50 में फेशियल

एक काउंटर पर सौन्दर्य सामग्रियाँ बिक रही थी और इसके अलावा उन्होंने एक फेशियल काउंटर भी लगाया जहाँ ₹50 में फेशियल किया जा रहा था। काउंटर की प्रभारी उमा मगेश्वरी ने बारंबार ज़ोर-ज़ोर से ''₹50 में फेशियल'' कहकर भीड़ को लुभाया। जब उनसे पूछा गया कि क्या काउंटर पर अच्छा व्यवसाय हो रहा है, तो वह हंसी और जवाब दिया ''शुरुआत में लोग झिझक रहे थे। परंतु एक महिला का फेशियल होने के बाद, बहुत से कतार में लग गए।'' शाम तक काउंटर पर 60 से अधिक फेशियल हो चुके थे, जबकि मेहँदी का एक स्टॉल 120 हाथों के व्यवसाय के साथ बंद हुआ।

मंच पर, दर्शकों द्वारा अक्सर नृत्य शुरू किए जाने के कारण नज़ारा गायन से नृत्य प्रतियोगिता में तब्दील हो रहा था। सेल्फ़ी खींचकर *Magalirmattum* के साथ उन्होंने इसे ऑनलाइन पोस्ट की। सब्जियों की नक्काशी के स्टॉल पर प्रतिभागियों द्वारा शिमला मिर्च की रिब्स वाला हड्डियों का ढांचा, गाजर के फूलों से भरी कद्दू की टोकरी, प्याज एवं खीरे से बनी गुड़ियाएँ, सेब की बतख और अन्य फल एवं सब्जी द्वारा जटिल आकृतियाँ बनाई गई थी।

सभी को आकर्षित करने वाला मंच से बाहर एक अन्य कार्यक्रम था *कुथुविलक्कु* (कांसे का दीपक) सजावट। हिन्दू संस्कृति में, *कुथुविलक्कु* का धार्मिक महत्व है और यह दैनिक पूजन का हिस्सा है। ''इसलिए, इस प्रतियोगिता ने प्रतिभागियों एवं दर्शकों को घर पर आजमाने के लिए नवीन विचार दिये,'' रोटरी क्लब तांबरम सेंट्रल, मंडल 3231, की पूर्व अध्यक्ष उषा अजीत प्रसाद कहती है। जटिल समायोजन से लेकर साधारण राधा और कृष्ण तक, दीपकों को एक सीमित समयावधि में प्रतिभागियों द्वारा सजाया गया था।

आनंदोत्सव में भोजन भी एक व्यापक घटना थी। सभी शाकाहारी ''क्योंकि यह *पुराटासी* का पवित्र तमिल महीना है और हम में से बहुत से मांसाहार खाने से परहेज करते है। परंतु शाकाहारी बुफ़े से चुनाव के लिए एक विविधता थी,'' सुजाता ने आगे कहा। भोजन के बाद, महिलाओं ने रैम्प वॉक किया और साथ में नृत्य किया। विजेताओं का अभिनंदन किया गया और विदाई परंपरा के रूप में, महिलाओं को कंगन एवं कुमकुम दिया गया। ''यदि हम चाहते है कि महिलाएं रोटरी से जुड़े तो हमें उन्हें एक मित्र देना होगा। यह केवल तभी संभव है जब रोटरी में महिलाएं रोटरी पत्नियों से व्यक्तिगत रूप से मिले और उनसे रोटरी की अच्छाई की बाते करे, और यही *मगलीर मट्टुम* का लक्ष्य था,'' सुजाता ने कहा जिन्हें आशा है कि यह एक वार्षिक आयोजन होगा जहाँ महिलाएं मिल सकती है, बात कर सकती है, आनंद ले सकती है और अंततः रोटरी से जुड़ सकती है।

रोटरी में महिलाएं रोटरी पत्नियों से व्यक्तिगत रूप से मिले और उनसे रोटरी की अच्छाई की बाते करे, और यही *मगलीर मट्टुम* का लक्ष्य था।

सुजाता चन्द्र बॉब

चित्र: किरण ज़ेहरा

चिंता करने की कोई बात नहीं

भरत और शालन सवुर

आपको लगा होगा, वह बहुत ही गंभीर क्षण था। दुनिया के दो सबसे अधिक सम्मानित और प्रतिष्ठित व्यक्ति - दलाई लामा एवं प्रधानपादरी डेस्मंड टूटू एकसाथ मंच पर चलने के लिए तैयार थे और प्रत्येक को इस बात पर बोलना था कि करुणा, शांति, प्यार और संवेदना कैसे दुनिया को बचा सकती है।

जैसे ही वे कुछ कदम चले, अचानक से मजाकिया मूड में आकर दलाई लामा ने अपने साथी वक्ता को रोकने का दिखावा किया। ''अरे!'' प्रधानपादरी ने विरोध किया, ''कैमरें हमारी ओर है, एक साधू व्यक्ति की तरह व्यव्हार करो!''

यह वह दृश्य है जो मेरे दिमाग में बार-बार चलता रहता है और यह कभी भी मेरे होठों पर मुस्कान लाने में विफल नहीं हुआ, जो फिर मेरे पूरे अस्तित्व में फ़ैल जाती है।

कोई समस्या नहीं। इन दो महान लोगों के प्रमोद और शरारत के पीछे क्या रहस्य है? सबसे पहले, वे ङ्गमहानफ के रूप में वर्णित किये जाने पर दिल से हँसे होंगे। प्रधानपादरी ने कभी भी पादरियों का प्रमुख होने का दावा नहीं किया और दलाई लामा स्वयं को एक साधारण लामा की तरह देखते है। अब मैं उस समय के बारे में सोचता हूँ जब मैं स्वयं को 'वरिष्ठ लेखक' के रूप में वर्णित करता था, तो मैं शर्म से लाल हो जाता हूँ! उफ़! अब एक साधारण सा लेखक बनने के बाद मैं बहुत ही हल्का महसूस करता हूँ! हमारे बीच मौजूद दिग्गजों के नज़रिये और व्यव्हार का अवलोकन करना, उन्हें आत्मसात करना और उनका अनुकरण करना महत्वपूर्ण है।

यह सत्य है, समस्याएं हमें चिंताग्रस्त करती है क्योंकि वे हमारी स्वाभाविक रूप से मुक्त विचारधारा पर भार होती है। इसी तरह हमारी चिंता का स्तर बढ़ता है। और हम 'स्थिर निराशा का जीवन' जीने लगते है। एक चिंतित व्यक्ति की निशानी है उसका अधीर शारीरिक हाव-भाव, एक आत्म-सुरक्षा कवच में स्वयं को खींचना या, आक्रामक ढंग से अति प्रतिक्रिया करना। नाड़ी स्पंदन 95 प्रति मिनट से भी अधिक की दर से होता है (78-84 को सामान्य माना जाता है), सांसे कम गहरी और तेज़ी से चलती है।

कोलाहल से दूर रहें। धीमी, सचेत साँस कोलाहल को खत्म करने एवं चिंता को धुंधला करने और हमारी प्राकृतिक शांतिपूर्ण ताल के साथ तालमेल के लिए जरूरी है। आँखें बंद करके आराम से बैठिये। अपनी नाक से गहरी साँस लें; अपने मुँह से लंबी साँस छोड़े। साँस लेते समय पेट का फूलना और साँस छोड़ते समय पेट का सिकुड़ना महसूस करें। अच्छे उद्देश्य के विचारों से अपने दिमाग को शांत कीजिये: सभी खुश, स्वस्थ और शांत रहें। 10 मिनट तक धीमी और सचेत साँस लेने के बाद आप वास्तव में अपने नाड़ी स्पंदन की दर को 95 से घटाकर 80 प्रति मिनट कर सकते है। आने वाले दिनों में, यदि आप अपने सिर के पीछे सिहरन महसूस करते है, तो इसका मतलब यह है कि आप एक शांत स्वरूप में प्रवेश कर रहे है। आपका मस्तिष्क डरा देने वाली और कुपित प्रतिक्रियाओं से एक सुगम और आनंदित स्वीकृति के परिवर्तन में समायोजन कर रहा है। यह सच में, मिठास की एक सिहरन है।

और मिठास किसी भी परिस्थिति में तनाव से बेहतर है, है ना? तनाव चिंता को बढ़ाता है, इसलिए कृपया इसे करने का प्रयास ना करें। स्वयं को नकारात्मकता, नाटक, आलापों से दूर रखें। दयालु बनें, अपने और दूसरों के लिए कठोर ना रहें। अगर कुछ गलत लगता है, तो उसे ना करें। अगर कुछ सही लगता है, तो उसे करें। एक लड़का है, जो हर बार किराने की दुकान से दाल और चावल के अतिरिक्त थैले खरीदता है और उन्हें ट्रैफिक लाइट में बैठने वाले भिखारियों को दे देता है। वह ऐसा करता है क्योंकि उसे यह सही लगता है। केवल उसके बारे में पढ़ने से ही आपके अंदर मिठास आ गई, है ना?

अपने दिमाग को ज़िंदगी के बारे में समझाइए। मस्तिष्क सुनता है। उसकी परवाह कीजिये। समय-समय पर ध्यान दें कि वह ठीक है या नहीं। यदि वह दुखी है, तो उसे अन्य व्यक्ति का दृष्टिकोण समझाइए। जैसी कि एक प्राचीन एमिष कहावत है, ''दूसरों को अपनी जगह रखने के बजाए, स्वयं को उनकी जगह पर रखें। यदि आपका दिमाग गुस्से में है,'' तो उसे समझाएं कि ज़िंदगी सभी प्रकार की घटनाओं को समायोजित करने एवं भावनाओं को निभाने के लिए पर्याप्त लंबी है। उसे प्यार दीजिये, उसे समझ दीजिए,

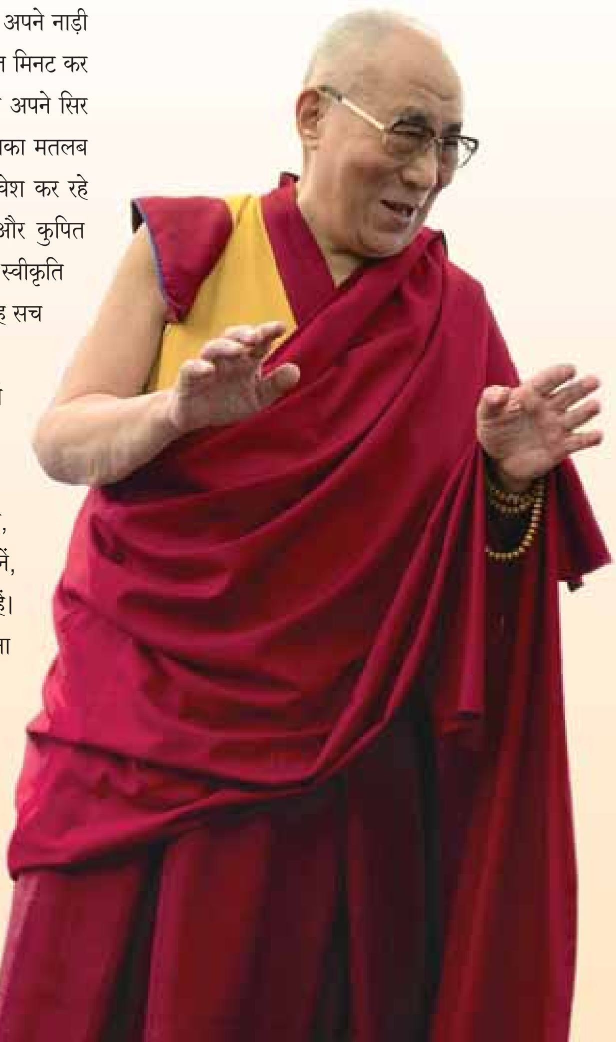

उसे महान लोगों द्वारा कही गई बातें सुनाए ताकि यह उनके पंखों पर तब तक उड़ सकें जब तक यह स्वयं के पंखों पर उड़ना ना सीख लें। दिमाग को पोषित करें क्योंकि यह आपके रिश्तों को प्रबंधित करता है। यह मतभेदों के निराशाजनक वितल को अनुमोदन की मीठी चमक से दमका सकता है।

स्वीकृति की इस भावना में अपने दिमाग को बार-बार फैसला स्थगित करने के लिए कहें। निर्णय में देरी चिंता को दूर करती है जैसा कि यह छोटी सी उपमा सिखाती है: एक बच्ची के हाथ में दो सेब थे। उसकी माँ धीरे से चलकर आई और उससे प्यारी सी मुस्कुराहट के साथ पूछा, ''हेलो, मेरी प्यारी बच्ची, क्या आपकी माँ एक सेब ले सकती है?''

उस छोटी बच्ची ने उनकी ओर देखा, और फिर सेबों की ओर देखा, और फिर जल्दी से एक सेब दांत से काट लिया और उतनी ही जल्दी दूसरा सेब भी दांत से काट लिया...

माँ की मुस्कान फीकी पड़ गई। उसने निराश ना होने के लिए बहुत कोशिश की। और लड़की ने एक कटा हुआ सेब माँ को दिया और कहा, ''यह लो माँ। यह वाला ज्यादा मीठा है।''

यदि उस एक पल में फैसले को स्थगित कर दिया जाए, तो उसमें शांति, स्वीकृति और आश्चर्य के लिए अत्यधिक संभावनाएं है। क्योंकि विश्वास की तीव्र कमी से चिंता भी उत्पन्न होती है। परेशान वो है जो यह मानता है कि उसके सिर पर हमेशा बन्दूक रखी है। प्रसन्न वो है जो यह मानता है कि उसके होठों पर हमेशा एक बांसुरी रखी है। जिस तरह से लोग या परिस्थितियाँ आती है, उसकी वजह से हम में से प्रत्येक व्यक्ति केवल एक बार नहीं बल्कि अनेक बार सुखद रूप से चकित हुआ है। अब, हमें बस इतना करना है: हमारे अनुभवों के प्रति वफदार रहना है। चिंता का तब कोई विस्तार नहीं होता, जब निराशाओं के साथ, हम भरोसेमंद लोगों को भी अपनी ज़िंदगी में लगातार स्वीकार करते है, ऐसे समय जब चीजें सही होने लगती है। इसी तरह हम विश्वास के लिए अपने दिल और दिमाग को खोलते है।

चार परिस्थितियों का स्थानांतरण। चिंता चार आंतरिक परिस्थितियों का मिश्रण है जो हमें उस तरह सोचने के लिए बाध्य करती है जैसे हम सोचते है और उस तरह से कार्य करने के लिए बाध्य करती है जैसे हम करते है। वे चार है आत्म प्रकोप, क्रोध, लालच, डर। **आत्म प्रकोप** लगभग पूरी तरह से स्वयं के विचारों और विश्वासों से संबंधित है। इससे बाहर आने के लिए, हम सोचने के नए तरीकों को खोजते है, अपने दिमाग को अन्य दृष्टिकोणों के लिए खुला रखते है, यह कहकर, सीखने के लिए हमेशा कुछ ना कुछ होता है।

- **क्रोध** जीवन के प्रवाह को अवरुद्ध करने से उत्पन्न होता है। लोगों के साथ सहयोग करने और अधिकतम परिस्थितियों के साथ प्रवाहित होने का निश्चय करके इसपर काबू पाया जा सकता है।
- **लालच** आत्म-नियंत्रण की कमी से आता है, जैसे चॉकलेट केक को देखकर खुद को ना रोक पाना एवं अधिक की चाहत करना। यहाँ हमारी मूल्यों की भावना को जोड़कर आत्म-निपुणता को विकसित किया जा सकता है जैसे - मैं अपने स्वास्थ्य को महत्व देता हूँ, इसलिए मैं उस केक को नहीं छुऊंगा।
- **डर** जीवन की किसी परिस्थिति में शक्तिहीन महसूस करने पर भय लगता है। यहाँ, आवश्यकता है कि ज़िम्मेदारी का अभ्यास करके - विशेषज्ञों से सलाह लेकर, किसी भी संकट से निपटने के लिए आसान रास्तों का निर्माण करके - परिस्थिति पर महारत हासिल की जाए और शक्ति की भावना को पुनः प्राप्त किया जाए।

अंततः, प्रत्येक दिन को एक चिंता मुक्त दिवस घोषित कीजिए और उसे वैसा बनाइये। पार्क में यह जानते हुए चलें कि प्रत्येक कदम शांति और स्थिरता लाता है। अपनी चाय को शांति के साथ उसकी हर चुस्की का आनंद लेते हुए और उसकी आसान उपलब्धता पर आश्चर्य करते हुए पीजिये। इन सबसे ऊपर, ज़िंदगी को इतना अधिक गंभीरतापूर्वक मत लीजिए। यहाँ तक कि दलाई लामा भी नहीं लेते। और, वह तो एक साधू व्यक्ति है!

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

Rotary India Literacy Mission

Literacy Focus

पीआरआईडी और रोटरी इंडिया साक्षरता मिशन (RILM) के अध्यक्ष शेखर मेहता ने प्रवासी भारतीय केंद्र, दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के उपलक्ष्य में HRD मंत्रालय के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण (NLMA) द्वारा आयोजित एक पैनल परिचर्चा का नेतृत्व किया। इस कार्यक्रम में HRD मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने विशिष्ट अतिथि; मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री (स्कूल शिक्षा और साक्षरता) उपेंद्र कुशवाह; सचिव (स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग) रीना रे; संयुक्त सचिव, (एई) और महानिदेशक - NLMA सचिन सिन्हा और दक्षिण एशिया के संचार सलाहकार, यूनेस्को कार्यालय, दिल्ली के अल अमीन यूसुफ शामिल हुए।

मेहता ने रेखांकित किया कि रोटरी ने, अन्य संगठनों के साथ सहयोग करते हुए, पोलियो को समाप्त करने में सफल रही हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि साक्षरता योजना के सफल कार्यान्वयन के लिए, इसे प्रधानमंत्री द्वारा व्यापक प्रचार और सार्वजनिक ध्यानाकर्षण के साथ शुरू किया जाना चाहिए। साक्षरता योजना की सफलता के लिए बजट निर्णायक कारकों में से एक है। पैनल ने वयस्क साक्षरता पर अनेक विषयों पर चर्चा की, और उनमें पीडीजी रंजन ढिंग्रा। रोटेरियन अजय कुमार सिंह शामिल थे।

RILM अध्यक्ष शेखर मेहता दिल्ली में पेनल चर्चा पर।

राष्ट्र निर्माता पुरस्कार

अनेक रोटरी और इनर व्हील क्लबों ने नेशन बिल्डर अवॉर्ड्स (NBA) के लिए कुशल सरकारी शिक्षकों को उत्साहपूर्वक पहचान की और उन्हें सम्मानित किया।

11 अक्टूबर तक, संपूर्ण देश में 31,708 शिक्षकों का मूल्यांकन किया गया, जिसमें से 6,709 शिक्षकों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। संख्या बढती जा रही हैं क्योंकि इस कार्यक्रम ने अधिक से अधिक क्लबों को प्रोत्साहित किया है। यह पुरस्कार देश के निर्माण में शिक्षकों के योगदान की पहचान करता है और मूल्यांकन प्रक्रिया आरआईएलएम को अपने शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। इस वर्ष एनबीए की संपूर्ण प्रक्रिया आरआईएलएम वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन की निष्पादित की गई थी।

एनबीए मॉडल की कर्नाटक सरकार द्वारा सराहना की गई है; शिक्षा विभाग ने राज्य में सरकारी स्कूल शिक्षकों के आकलन के लिए कार्यक्रम से स्वयं को जोड़ने में रुचि दिखाई है।

मंडलों में साक्षरता

रोटरी क्लब कालीम्पोंग, मंडल 3240 और रोटरी क्लब मुज़फरपुर मंडल 3250 ने 25 सरकारी स्कूल शिक्षकों को रोटरी राष्ट्र निर्माता पुरस्कार देकर सम्मानित किया। रोटरी क्लब ग्रीनलैंड सिलचर, मंडल 3240 ने 32 शिक्षकों को एनबीए प्रमाण पत्र दिया और रोटरी क्लब बोकारो मिडटाउन, मंडल 3250 ने 17 शिक्षकों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। रोटरी क्लब बॉम्बे नॉर्थ वेस्ट ने भी शिक्षकों को सम्मानित किया।

इनर व्हील क्लब देवनार, तिरुची मलाइकोट्टै, गया, बलरामपुर और बॉम्बे कंदिवली ने भी शिक्षकों को सम्मानित किया।

कोल्हापुर क्लब ने 10,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया

रोटरी क्लब कोल्हापुर सनराइज, मंडल 3170, ने पीडीजी आनंद कुलकर्णी की उपस्थिति में, 10,000 सरकारी स्कूल शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए कोल्हापुर के जिला परिषद के साथ; जिला परिषद कोहपुर के सीईओ कुणाल खेमनार; डीएलसीसी प्रसन्ना देशिंगकर और संसद सदस्य धनंजय महाडिक की उपस्थिति में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।

प्रशिक्षण का आयोजन अंग्रेजी में शिक्षकों के कौशल को अपग्रेड करने और बेहतर बनाने और शिक्षण में तकनीक का उपयोग करने के लिए मंडल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल कॉन्टिनियस प्रोफेशनल डेवलपमेंट (DIECPD) की मदद से किया गया था। अभी तक आरआईएलएम ने इस कार्यक्रम के अंतर्गत 32,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है और 14,000 शिक्षकों को सम्मानित किया गया है।

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

पहियों पर ट्रांसफार्मर

टीम रोटरी न्यूज़

रोटेरियन की नवीनता और तकनीकी विशेषज्ञता रोटरी क्लब बघा पुराना, मंडल 3090 के साथ तब सामने आई, जब उन्होंने 15-20 किलोमीटर के दायरे में आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए एक ट्रॉली पर 300 केवी का मोबाइल ईबी ट्रांसफार्मर तैयार किया। यह सेवा पंजाब के मोगा मंडल में इस तहसील के कम से कम 25-30 गांवों तक पहुंचेगी।

अन्य रोटेरियन ट्रान्सफार्मर के साथ।

इस ट्रॉली को शहर में तैयार किया गया था, जबकि पावर ग्रिड कॉरपोरेशन से तकनीकी सहयोग के साथ 28 सदस्यीय रोटरी टीम ने पोर्टेबल ट्रांसफार्मर को डिजाइन किया था, ''जिसे 4 नवंबर को चालू किया गया था और अब तक पांच समस्याओं से निपटने में मदद की है,'' क्लब के अध्यक्ष विमल गर्ग कहते हैं। ₹70,000 की लागत से ट्रॉली खरीदी गई थी, जबकि पोर्टेबल ईबी डिवाइस को तैयार करने में रोटेरियन ने ₹2.7 लाख निवेश किया।

''यह ग्रामीणों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है क्योंकि दोषपूर्ण ट्रांसफॉर्मर के कारण विद्युत की कटौती और वोल्टेज में उतार-चढ़ाव सामान्य समस्या हैं। गर्ग आगे कहते हैं कि ट्रांसफॉर्मर ट्रॉली को विद्युत समस्या उत्पन्न होने वाले स्थान पर रखा जाएगा जब तक कि निगम के लाइनमेन द्वारा समस्या का समाधान नहीं किया जाता हैं।'' समय पर ब्रेकडाउन वाले स्थान तक पहुंचकर वाहन पावर ग्रिड के अधिकारियों के लिए सहायक की भूमि का निभा रहा है और दोषपूर्ण ट्रांसफॉर्मर को सुधारने तक निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित कर रहा है। ■

स्पैम के लिए चेतावनी

रोटरी को हाल ही में जानकारी मिली है कि स्कैमरों ने अनेक संचार और सोशल मीडिया खातें खोल रखा है जो रो ई अध्यक्ष बेरी रेसिन, आरआईपीई मार्क मालोनी, महासचिव जॉन ह्यूको और शायद अन्य रोटरी नेताओं का रूप या भेष धारण करते हैं। संचार खातों में ईमेल, व्हाट्सएप और वीबर शामिल हैं। इसके साथ, स्कैमरों ने लिंक्ड्इन, ट्विटर और फेसबुक पर सोशल मीडिया खाते खोल रखें हैं।

ये सभी रोटरी द्वारा संचार के प्रामाणिक साधन नहीं हैं। वे रकम और व्यक्तिगत सूचना प्राप्त करने के लिए फर्शिंग और स्पूफिंग कर रहे हैं। कार्यक्रमों, प्रतिभागियों और कर्मचारियों के डेटा को सुरक्षित रखने के लिए रोटरी के सदस्यगण निरंतर इनकी निगरानी के लिए प्रयासरत्त रहते हैं।

रोटरी सदस्यों को सावधान रहना चाहिए:

किसी भी संदिग्ध संदेश जो रकम की मांग करता है, रकम देने की पेशकश करता है, या आपकी व्यक्तिगत सूचना मांगता है, उसे मिटा दें। संदिग्ध संदेशों में संलग्नक या शामिल लिंक को नहीं खोलें।

प्रेषक को सत्यापित करने के लिए ईमेल पते और सिग्नेचर ब्लॉक के विवरण पर सावधानी से ध्यान दें।

अगर आपको लगता हैं कि यह एक संदिग्ध है, तो कृपया इसे *fraudreport@rotary.org* पर भेजें और फिर इसे तुरंत मिटा दें।

© *Rotary.org*

पी टी प्रभाकर

नए वैश्विक WinS अध्यक्ष

ट्रस्टी चेयर रोन बर्टन ने PRID पी टी प्रभाकर को WinS - टारगेट चुनौती समिति अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया हैं। इन की नियुक्ती की अवधि दो साल की हैं, जून 2020 तक। RIPN सुशील गुप्ता जो इस समिति के पहले अध्यक्ष थे के बाद पी टी प्रभाकर को इस पद के लिए चुना गया हैं। ■

लघु कथा कितनी बड़ी होनी चाहिए?

LBW

टी सी ए श्रीनिवासा राघवन

तीन वर्ष पूर्व, बियर पीकर की गई मूर्खता के एक दौरे में, मैंने कुछ दोस्तों को उन लोगों के महान गुणों के बारे में बताया जो अखबारों में लिखते है, विशेषतकर पत्रकार। मेरी आत्मसंतोषी बातों से कुपित होकर, एक मित्र ने मुझे एक उपन्यास और/या लघु कथाएँ लिखने की चुनौती दी। उसके उपेक्षापूर्ण एवं उपहासक शब्दों ने मुझे परेशान कर दिया। इसलिए, एक मूर्ख की तरह, मैंने उपन्यास के साथ-साथ लघु कथाएँ, दोनों लिखने का फैसला किया। उपन्यास अभी प्रकाशित हुआ है और, मेरे द्वारा लिखी गई 20 लघु कथाओं में से अब तक केवल 4 के प्रकाशित होने का कारण यह है कि उनका बाज़ार नहीं है। भारत में अखबार और पत्रिकाएँ अब लघु कथाएँ नहीं छापते है, कम से कम अंग्रेजी में तो नहीं।

यह एक मजेदार अनुभव रहा। मैंने यह जाना कि यदि आप 1,000 शब्द प्रति दिन की रफ्तार से लिखते है, तो एक उपन्यास लिखना इतना भी कठिन नहीं है जो, सच कहे तो, सत्य के सार के आसपास कही गई बनावटी बातों से अधिक नहीं होता। ठीक ऐसा ही लघु कथाओं के साथ होता है। जिस प्रकाशक ने उपन्यास स्वीकार किया उसने संशोधन के लिए तीन शब्द कहे: 20,000 शब्द जोड़ो। फिर कुछ हफ्तों बाद एक और सुझाव आया, इस बार छह शब्दों का: जमाने की भावना को कैद करो। किताब 1970 के दशक के उत्तरार्ध की दिल्ली के बारे में है। जहाँ तक लघु कथाओं की बात है, संपादक बहुत युवा था और उसने मुझे बहुत सी जोशीली सलाह दी। जिसमें से बहुत सी को मैंने नज़र अंदाज कर दिया।

जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ा, यह बात मुझे स्पष्ट हो गई कि दोनों ही अलग प्रकार की कठिनाइयाँ पेश करते है। सबसे कठिन हिस्सा शुरुआत में आता है: लंबाई तय करना। आप एक 800 पन्नों का उपन्यास लिख सकते है, या 400 पन्नों के दो, या 250 पन्नों के तीन। उसी प्रकार, आप 10,000 शब्दों की या 5,000 शब्दों की, या 1,000 शब्दों की एक लघु कथा लिख सकते है। या, यदि आप चाहे तो, उससे भी छोटी लिख सकते है।

मैंने उपन्यास के लिए 250 पन्नों को चुना क्योंकि मैं 300 पन्ने पर पहुँचकर यह भूलना नहीं चाहता था कि 50वें पन्ने पर मैंने क्या लिखा था। लघु कथाओं के लिए मैंने 1,000 शब्दों का चुनाव किया जिसमें एक रोचक एवं प्रसिद्ध व्युत्पत्ति थी। जॉन ओ हारा ने *सटर्डे ईवनिंग पोस्ट* के लिए सैकड़ों लघु कथाएँ लिखी थी। मैं हमेशा से उनका अनुसरण करना चाहता था, और भले ही मैं ऐसा कहूं, मैं सोचता हूँ कि गुणवत्ता के मामले में मैं ऐसा करने में सफल रहा हूँ।

जब अनुबंध तैयार हुआ, मैंने देखा कि उन्होंने सभी संभावित आकस्मिकताओं को सम्मिलित किया था। उसमें प्रकाशक द्वारा उत्तर कथाओं के अधिकारों, फिल्म अधिकारों, टीवी अधिकारों, रेडियो अधिकारों का अधिग्रहण शामिल था, और कदाचित हम ब्रेल लिपि को भूल गए थे। उनके द्वारा कुछ अन्य विकल्प भी लिए गए थे। चालीस वर्ष पूर्व, जब मैं एक प्रकाशन गृह में काम कर रहा था, मैं भी लेखकों के साथ ठीक ऐसा ही व्यवहार करता था। उन्हें रॉयल्टी, जो ज्यादा नहीं होती थी, त्यागने के लिए तैयार करने में एक विशेष आनंद आता था। परंतु फिर भी, डराने-धमकाने का अपना मज़ा होता है। अब मेरे साथ ऐसा किया जा रहा था।

मगर गंभीरतापूर्वक बताइये, एक उपन्यास को कितना बड़ा या छोटा होना चाहिए? कौन तय करता है: प्रकाशक, लेखक या, भगवान ना करे, पाठक? मोटे उपन्यास उनके वजन के कारण पढ़ने में मुश्किल होते है। साथ ही मनोरंजन के अन्य प्रतिस्पर्धी स्रोतों के साथ, उन्हें पूरा पढ़ना मुश्किल होता है। एक लंबी लघु कथा भी पूर्णतया काम नहीं करती है। पाठक को पता होता है कि यह एक लघु कथा है और वह आश्चर्य करता है कि यह चलती ही क्यों जा रही है। बहुत से लेखक लघु कथाओं की श्रृंखलाओं को जोड़ देते है और उसे एक उपन्यास कहते है। मैं इसे ङ्गएक के बाद एक रद्दी कार्यफ प्रारूप कहता हूँ।

परंतु वहाँ रहकर ऐसा करके, मैं कुछ सलाह दे सकता हूँ यदि आप भी एक लघु कथा या उपन्यास लिखना चाहे तो। मैं सोचता हूँ कि ऐसा किया जाना चाहिए। परंतु याद रखिए, योजना को कार्यान्वित करने के लिए आपको दृढ़ संकल्पित होना होगा। इसलिए, पहले, प्रकाशकों को नज़र-अंदाज कीजिये। दूसरा, अपने उपन्यास को सीमित ओवर वाले मैच की तरह बनाइये या किसी उड़ान की तरह -50 पन्नों से एक अच्छी शुरुआत, फिर बीच में विहार करना और उसके बाद 50 पन्नों का एक अच्छा समापन। और तीसरा, यदि वह एक लघु कथा है, तो उसके अंत में हमेशा चकित कर दीजिये। यह एक कठिन कार्य है। परंतु कोशिश कीजिये। इसमें काफी मजा आता है। ■

ROTARY SERVICE PROJECTS

VIDEO CONTEST

2018-19

Calling all **Rotary clubs in Zones 4,5 & 6A** to participate in this contest and win exciting cash prizes.

Club Presidents/Secretaries can submit one video (not more than **three minutes**) of the club's service projects implemented in the year, under The **Rotary Foundation's Six Areas of Focus:**

- **Peace and conflict prevention/ resolution**
- **Disease prevention and treatment**
- **Water and sanitation**
- **Maternal and child health**
- **Basic education and literacy**
- **Economic and community development**

The contest will be judged by an esteemed panel convened by RID C Basker.

The **top 3 entries** (from each of the **RI Zones of 4, 5 & 6A** India) will win the following cash awards:

1st Prize: INR 100,000

2nd Prize: INR 50,000

3rd Prize: INR 25,000

Rotary

The last date of submission of videos is **May 31, 2019.**

Video entries may be sent to **rotaryprojectsvideo@gmail.com** or mailed to **Rotary News Trust, Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai - 600 008, Tamil Nadu.**

Alternatively, clubs can upload the video on **YouTube** and share the URL link to the above mail id.

Please include the following too:
Club Name and District, Contact Person and Email Id/Phone number, Name of the Video/Project and the URL Link.

Only Hi-res videos will be accepted. Videos can be in the format: **MOV, MP4 (MPEG4), AVI, WMV, FLV, MKV, VOB.**

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on 1st of every month

ADVT

Rotary District 3012

BE THE INSPIRATION
R.I. THEME 2018-19

ROTARY DISTRICT 3012
"DEEPAWALI CELEBRATIONS"
Deepanjali-2018
Sunday, 28th October 2018

Subhash Jain AKS
District Governor 2018-19

Venue : N.R. Grand, NH-24, Wave City, Ghaziabad (U.P.)